जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 17 संख्याः 222 प्रभात हिण्डौन सिटी, सोमवार 16 जून, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

उत्तराखंड में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में 7 लोगों की मौत

हेलीकॉप्टर बाबा केदारनाथ के दर्शन करा कर पाँच श्रद्धालुओं व एक मंदिर कर्मचारी को वापस ला रहा था

रूद्रप्रयाग/देहरादून, 15 जून। उत्तराखंड में रुद्रप्रयाग के गौरीकुंड क्षेत्र में रविवार को एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से पायलट सहित उसमें सवार सात लोगों की मौत हो गयी।

हेलीकॉप्टर बाबा केदारनाथ के दर्शन करा कर पांच श्रद्धालुओं और मंदिर समिति के एक कर्मचारी को वापस ला रहा था, इसी बीच खराब होने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिससे पायलट सहित उसमें सवार सभी सात लोगों की मौत हो गई। मृतकों में एक 23 महीने की बच्ची भी है। श्रद्धालु परिवार महाराष्ट्र का निवासी था।

हेली सेवा के नोडल अधिकारी राहुल चौबे ने बताया कि रविवार सुबह करीब सुबह 5.30 बजे आर्यन एविएशन कंपनी का हेलिकॉप्टर वीटीबीकेए/ बीईएलएल 407 गौरीकुंड क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उन्होंने बताया कि हेलिकॉप्टर गौरी माई खर्क से ऊपर जंगल में गिरा है। दुर्घटना की वजह खराब मौसम है। उन्होंने बताया कि हेलिकॉप्टर केदारनाथ धाम से गुप्तकाशी जा रहा था। गौरीकुंड के ऊपर घास काट रही नेपाली मूल की महिलाओं ने दुर्घटना की सूचना दी।

- हेलीकॉप्टर सुबह 5:21 पर केदारनाथ से रवाना हुआ था। इस समय क्षेत्र में अत्यधिक कोहरा था व दृश्यता लगभग शून्य हो गई थी।
- हादसे में मरने वालों में पायलट कैप्टन राजबीर सिंह चौहान (जयपुर), विक्रम रावत (कर्मचारी), विनोद देवी व तृष्टी सिंह (उत्तर प्रदेश) राजकुमार, श्रद्धा व काशी (महाराष्ट्र) हैं।
- उत्तराखंड में कांग्रेस के नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि दो मई को केदारनाथ के पट खुलने के बाद यह पाँचवी दुर्घटना है। इस बात की जाँच होनी चाहिए कि ज्यादा कमाई के लिए डीजीसीए के मानकों की अवहेलना तो नहीं की जा रही।

रूद्रप्रयाग के जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि दुर्घटनाग्रस्त हेलीकॉप्टर केदारनाथ से प्रातः 5:21 बजे गुप्तकाशी के लिए रवाना हुआ था एवं 5:24 बजे इसे वेली पॉइंट के पास देखा गया। उस समय क्षेत्र में अत्यधिक कोहरा था जिससे दृश्यता शून्य हो गई थी। हैलिकॉप्टर कंपनी ने 6:13 बजे हेलीकॉप्टर के गुप्तकाशी न पहुँचने की जानकारी दी। इसके पश्चात तत्काल कार्रवाई करते हुए खोज एवं बचाव अभियान शुरू किया गया और आपातकालीन प्रतिक्रिया दलों को सक्रिय किया गया। जिसमें जिला आपदा मोचन बल की टीम के साथ एसडीआरएफ की छह टीमें, एनडीआरएफ की आठ टीम और 22 पुलिसकर्मी शामिल थे। राहत एवं बचाव दलों ने घटनास्थल गौरीकुंड से लगभग पांच किलोमीटर ऊपर स्थित गौरी में खड़क नामक स्थान पर तलाश और बचाव अभियान शुरू किया है। राजवर ने बताया कि हादसे के शिकार लोगों के शव बुरी तरह से जल गए हैं।

रजवार ने बताया कि मृतकों की पहचान कैप्टन राजबीर सिंह चौहान, पायलट, निवासी जयपुर, विक्रम रावत, कर्मचारी, बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति, निवासी रासी ऊखीमठ, (45), विनोद देवी, निवासी उत्तर प्रदेश, (66) , तृष्टि सिंह उत्तर प्रदेश, (19) , राजकुमार पुत्र सुरेश जायसवाल, निवासी महाराष्ट्र, (41) , श्रद्धा पत्नी राजकुमार जायसवाल, निवासी महाराष्ट्र, (35) , काशी पुत्री राजकुमार, निवासी महाराष्ट्र, बालिका (02) के रूप में हुई है।

उन्होंने बताया कि पूरे क्षेत्र को घेर लिया गया है। फॉरेंसिक टीम तथा डीएनए सेंपलिंग टीम भी मौके पर पहुंच गई है। उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेनि.) गुरमीत सिंह ने केदारनाथ धाम यात्रा मार्ग में हेलीकाप्टर दुर्घटना पर रविवार को गहरा दुख व्यक्त किया।

राजभवन की ओर से जारी बयान में उन्होंने दुर्घटना में हताहत हुए लोगों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उत्तराखंड चारधाम हेलीकॉप्टर सेवा सोमवार तक बंद

देहरादून, 15 जून। उत्तराखंड में प्रचलित गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बदरीनाथ धामों की यात्रा के लिए आगामी सोमवार तक हेलीकॉप्टर सेवा पूर्ण रूप से बंद रहेगी। चारधाम में लगे सभी हेलीकॉप्टर ऑपरेटरों एवं पायलटों के उच्च हिमालय क्षेत्रों में उड़ान अनुभवों की जांच होगी एवं सभी ऑपरेटरों के साथ बैठक के बाद ही पुनः हेलीकॉप्टर सेवा को सुचारु किया जाएगा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को अपने आवास में हुई बैठक के दौरान ये निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि राज्य में अब

- उच्च हिमालय क्षेत्रों में पायलटों के उड़ान के अनुभवों की जाँच व ऑपरेटरों के साथ बैठक के बाद यह सेवा वापस शुरू की जायेगी।

हेलीकॉप्टर उड़ानों के बेहतर समन्वय और सुरक्षित संचालन के लिए देहरादून में एक कॉमन कमांड एवं कोऑर्डिनेशन सेंटर की स्थापना की जाएगी, जिसमें डीजीसीए, आपदा विभाग, सिविल एविएशन, यूकाडा, हेली आपरेटर कम्पनी के अधिकारियों की तैनाती होगी।

मुख्यमंत्री ने सचिव, गृह की अध्यक्षता में एक समिति गठित करने के निर्देश दिए। जिसमें डीजीसीए, यूकाडा, नागरिक उड्डयन विभाग भारत सरकार, एटीसी के प्रतिनिधि सदस्य के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पुणे में इंद्रायणी नदी पर पुल का आधा हिस्सा नीचे गिरा

हादसे में 40 से ज्यादा लोग बहे थे, जिनमें 4 की मौत हो गई, 38 को रेस्क्यू कर लिया गया

पुणे, 15 जून। महाराष्ट्र के पुणे जिले में एक बड़ा हादसा हुआ। कुंदमाला पर्यटक स्थल पर इंद्रायणी नदी पर बने पुल का आधा हिस्सा गिर गया है। जिस समय पुल गिरा तब उस पर 100 से ज्यादा लोग मौजूद थे। रेस्क्यू ऑपरेशन जारी हैं। हादसे में 40 से ज्यादा लोगों के बहने की खबर सामने आ रही है। अब तक 4 लोगों की मौत की पुष्टी हुई है और 38 लोगों को रेस्क्यू किया गया है। छः लोगों की हालत गंभीर है।

बताया जा रहा है कि यह घटना दोपहर करीब साढ़े तीन बजे की है। पिंपरी-चिंचवड़ पुलिस आयुक्तालय की तलेगांव दाभाड़े पुलिस मौके पर पहुंच गई है।

रविवार होने के कारण बड़ी संख्या में पर्यटक पुल और उसके आस-पास मौजूद थे। उसी समय पुल गिरने से यह हादसा हुआ। पुणे से कुंदमाला की दूरी 30 किमी है। यह जगह मुंबई के रास्ते में एक्सप्रेसवे पर एंट्री करने से पहले स्थित है। वीकेंड पर यहां हजारों की संख्या में लोग पहुंचते हैं।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, यह पुल पहले से ही बहुत खराब और जर्जर स्थिति में था। हादसे के समय पुल पर क्षमता से अधिक पर्यटक मौजूद थे।

- यह स्थान पुणे से 30 किलोमीटर दूर है। रविवार होने के कारण बड़ी संख्या में पर्यटक यहाँ आये थे। कुछ लोग पुल पर खड़े थे।
- यह पुल पहले ही जर्ज़र हालत में था। हादसे के समय पुल पर क्षमता से अधिक पर्यटक मौजूद थे। लोग टू-व्हीलर व मोटर साइकिल ले जा रहे थे। ओवर लोड होने से पुल भार नहीं सह पाया।

कहा जा रहा है कि लोग पुल पर टू-व्हीलर और मोटरसाइकिल ले जा रहे थे, शायद इसी वजह से पुल भार सहन नहीं कर सका।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, कुछ लोग टू व्हीलर बाइक लेकर पुल पर चढ़ गए थे। भीड़ ज्यादा थी। बाइकों के आवागमन की वजह से पुल ओवर लोड हो गया और ये हादसा हो गया। मौके पर 10 से 12 एम्बुलेंस मौजूद हैं और एनडीआरएफ की 2 टीमें मौके पर भेजी गई हैं।

सीएम फडणवीस ने कहा, हादसे वाली जगह पर रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। पुल टूटने से कई लोग जख्मी हुए हैं। नदी में बहे लोगों को रेस्क्यू करना हमारी प्राथमिकता है। फडणवीस ने घोषणा की है कि राज्य सरकार पुणे जिले के तालेगांव के पास इंद्रायणी नदी पर पुल ढहने की घटना में मारे गए लोगों के परिवारों को पांच-पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता देगी। इसके अलावा, राज्य सरकार घायलों के इलाज का खर्च भी उठाएगी।

डिप्टी सीएम अजित पवार ने कहा, मुझे घटना की जानकारी मिल गई है। प्रथम दृष्टया यह पता चला है कि यह जंग लगा हुआ लोहे का पुल था, जिस पर बाइक से लोग नदी पार कर रहे थे। वहां 8 करोड़ की लागत से एक और पुल पहले से ही स्वीकृत था। मैंने कलेक्टर से बात की है और उनसे विस्तृत रिपोर्ट मांगी है।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पुणे हादसे पर दुख जताया है। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा- पुणे के तालेगांव में इंद्रायणी नदी पर पुल ढहने की दुखद

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत-पाकिस्तान की तरह ईरान-इज़रायल में भी शांति ला सकता हूँः ट्रंप

ट्रंप ने दावा किया कि पीछे के दरवाजे से वे फोन पर बात कर रहे हैं, जल्दी शांति होगी

वॉशिंगटन, 15 जून। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने रविवार को दावा किया कि वह भारत और पाकिस्तान की तरह इज़रायल और ईरान के बीच भी शांति ला सकते हैं। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर लिखा, ईरान और इज़रायल को समझौता करना चाहिए और वे समझौता करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने भारत और पाकिस्तान को समझौता के लिए राजी किया था। उस समय मैं अमेरिका के व्यापार का उपयोग करके बातचीत में समझदारी, एकजुटता और संतुलन लाया था। दोनों बेहतरीन नेताओं ने जल्दी फैसला लेकर संघर्ष रोक दिया था।

पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के बीच ट्रंप ने कहा कि वह बातचीत में लगे हुए हैं और पीछे वाले दरवाजे से फोन पर बातचीत और बैठकें कर रहे हैं। उन्होंने कहा,जल्द ही इज़रायल और ईरान के बीच शांति होगी ! अभी फोन पर बहुत बातचीत और बैठकें चल रही हैं।

- अमेरिका के राष्ट्रपति ने कहा, मिस्र व इथोपिया में नील नदी के बाँध को लेकर तनाव था। मेरे हस्तक्षेप से शांति बनी हुई है और ऐसी ही रहेगी।

अपने सोशल मीडिया पोस्ट में राष्ट्रपति ट्रंप ने अन्य अंतरराष्ट्रीय संघर्षों का भी जिक्र किया और दावा किया उन्होंने इनमें दखल दिया था। उन्होंने मिस्र और इथियोपिया के बीच नील नदी के बांध को लेकर तनाव का भी उदाहरण दिया। उन्होंने कहा, मेरे हस्तक्षेप की वजह से अब तक शांति बनी हुई है और ऐसी ही रहेगा। इज़रायल के हवाई हमलों में तेजी आई है और ईरान और इज़रायल में हताहतों की संख्या बढ़ रही है। हालांकि ट्रंप ने कहा कि शांति संभव है।

जम्मू-कश्मीर के 1300 छात्र ईरान-इज़रायल युद्ध में फंसे

श्रीनगर, 15 जून। ईरान और इज़रायल के बीच बढ़ ते सैन्य तनाव ने भारत के जम्मू-कश्मीर के सैकड़ों परिवारों की चिंता बढ़ा दी है। चिंता का कारण वो, 1300 छात्र हैं, जो मुख्यतः एमबीबीएस की पढ़ ाई के लिए ईरान में रह रहे हैं। परिजन छात्रों की सुरक्षा को लेकर बेहद चिंतित हैं और उन्होंने भारत सरकार से तत्काल रेस्क्यू ऑपरेशन की मांग की है। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. फारूक अब्दुल्ला ने भी केंद्र सरकार से त्वरित कार्रवाई की अपील की है।

- ये छात्र मुख्यतः एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए ईरान में हैं। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने केन्द्र सरकार से इस बारे में त्वरित कार्यवाही करने की अपील की।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स पर विदेश मंत्रालय को टैग करते हुए लिखा है कि ईरान में फंसे कश्मीरी छात्रों की सुरक्षा और भलाई सुनिश्चित किया जाना अत्यंत आवश्यक है। छात्रों परिजन बेहद चिंतित हैं और हम इस संकट की घड़ी में उनके साथ खड़े हैं। हरसंभव कदम तुरंत उठाए जाएं।

कश्मीर छात्र संघ का कहना है कि छात्रों के हालात गंभीर हैं और लगातार हमलों से मानसिक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईरान ने इज़रायल पर हमले शुरु किये, हवाई क्षेत्र अस्थायी रूप से बंद किया

इज़रायल ने कहा, ईरान ने आवासीय इमारत पर रॉकेट दागा, जिसमें एक महिला की मौत हुई व 13 लोग घायल हुए

तेहरान, 15 जून। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशन गार्ड कोर (आईआरजीसी) ने शनिवार देर रात इज़रायल के खिलाफ एक बड़ी संयुक्त हमले की कार्रवाई शुरू की जिसमें बड़ी संख्या में मिसाइलें और ड्रोन शामिल थे।

आईआरजीसी के आधिकारिक समाचार आउटलेट, सेपाह न्यूज ने बताया कि आईआरजीसी के एयरोस्पेस डिवीजन ने इज़रायल के 'बार-बार के आक्रमणों' के जवाब में हमला किया।

इज़रायल की राष्ट्रीय आपातकालीन चिकित्सा सेवा, मैगन डेविड एडोम के अनुसार इज़रायल के उत्तरी इलाके में एक रॉकेट ने आवासीय इमारत को निशाना बनाया, जिसमें एक महिला की मौत हो गयी और 13 लोग घायल हुये। कई अन्य लोगों को चोटें आने के बाद अस्पताल पहुंचाया गया। इससे पहले, शुरुआत से ही ईरानी हमले में तीन लोग मारे गए और 204 घायल हुये हैं। हाइफा और उत्तरी इलाकों के बाहर के निवासियों को होम फ्रंट कमांड ने बंकर से बाहर निकलने की अनुमति दी लेकिन सुरक्षा के करीब रहने को कहा।

- ईरान के पेट्रोलियम मंत्रालय ने पुष्टी की कि तेहरान में दो तेल-भंडार हमलों में क्षतिग्रस्त हुए हैं, पर स्थिति नियंत्रण में है।

इज़रायली सेना ने कहा कि उसकी वायु रक्षा प्रणाली सक्रिय रूप से मिसाइलों को रोक रही है जबकि इज़रायली वायु सेना ने तेहरान में सैन्य ठिकानों पर हवाई हमले किये हैं।

ईरान के पेट्रोलियम मंत्रालय ने पुष्टि की कि हमलों में तेहरान में दो तेल भंडार क्षतिग्रस्त हुए। राजधानी के पश्चिमी और उत्तरी इलाकों में दो तेज धमाकों की आवाज़ सुनायी दी। मंत्रालय ने कहा कि स्थिति नियंत्रण में है। इस बीच, जॉर्डन ने ईरानी मिसाइल हमले के बाद सुरक्षा के चलते शनिवार देर रात अपना हवाई क्षेत्र अस्थायी रूप से बंद कर दिया। देश के नागरिक उड्डयन नियामक आयोग ने घोषणा की कि नागरिक उड्डयन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यह कदम उठाया गया है। ईरान ने इज़रायली हवाई हमलों के जवाब में हमला किया जिसने शुक्रवार को तेहरान और अन्य शहरों को निशाना बनाया था।

ईरानी अधिकारियों के अनुसार, इन हमलों में कई वरिष्ठ सैन्य कमांडर, परमाणु वैज्ञानिक और कई नागरिक मारे गये।

कूनो से निकला चीतों का झुंड पगारा क्षेत्र में नज़र आया

मुरैना, 15 जून। मध्यप्रदेश के चंबल संभाग के श्योपुर जिला स्थित कूनो नेशनल पार्क से निकलकर पांच चीतों का झुंड आज सुबह मुरैना जिले के जौरा अनुभाग के पगारा क्षेत्र में दिखाई दिया जिससे लोगों में दहशत पैदा हो गई है।

रविवार सुबह घूमने निकले लोगों ने चीतों का वीडियो बनाकर वायरल कर दिया, जो सोशल मीडिया पर जमकर देखा जा रहा है। ग्रामीणों ने वन विभाग को क्षेत्र में चीतों के होने की सूचना दी। अब वन विभाग के अधिकारी और चीता मित्र उनकी निगरानी कर रहे हैं।

- वन विभाग ने ग्रामीणों से अपील की है कि, चीते कभी भी नागरिकों को क्षति नहीं पहुँचाते हैं, अतः इनके साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ नहीं करें।

वन विभाग के सूत्रों ने बताया कि चीतों का झुंड पगारा क्षेत्र से देवगढ़ गांव की ओर निकल गया है। उन्होंने ग्रामीणों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

केन्द्र सरकार ने राजस्थान की सड़कों के लिये 1914 करोड़ रूपए स्वीकृत किये

जयपुर, 15 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य की विभिन्न सड़क परियोजनाओं के लिए 1914 करोड़ 71 लाख रूपए स्वीकृत करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व केन्द्रीय सड़क परिवहन व राज्यमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का आभार जताया है।

केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा यह राशि केन्द्रीय सड़क अवसंरचना निधि (सीआरआईएफ) के तहत लगभग 1000 किलोमीटर लंबाई की 40 राज्य सड़क परियोजनाओं के लिए स्वीकृत की गई है। इनमें 31 प्रमुख जिला सड़कें, 8 राज्य राजमार्ग और एक अन्य जिला सड़क शामिल है। स्वीकृत की गई राशि से इन सड़कों के खण्डों का मजबूतीकरण एवं चौड़ीकरण कार्य कराया जाएगा।

- मुख्यमंत्री भजनलाल ने प्रधानमंत्री मोदी व सड़क परिवहन मंत्री गडकरी का आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र और राज्य सरकार निरंतर देश-प्रदेश के आधारभूत ढ ांचे के सुदृढ़ ीकरण का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार करने में सड़क तंत्र की अहम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उदयपुर क्षेत्र में दो दुर्लभ डैमज़लफ्लाई दिखाई दीं

वन विशेषज्ञ डॉ. सतीश शर्मा व दो जीव-वैज्ञानिकों ने कुंडेश्वर महादेव क्षेत्र में एक जलधार की वनस्पति पर बैठी दुर्लभ डैमज़लफ्लाई खोजी

उदयपुर, 15 जून। जैव विविधता से समृद्ध वागड़-मेवाड़ अंचल में दुर्लभ वन्य जीव वनस्पतियों की खोज का क्रम लगातार जारी है इसी श्रृंखला में उदयपुर अंचल में दुर्लभ प्रजाति की दो डैमज़लफ्लाई देखी गयी हैं।

उदयपुर के सेवानिवृत्त वन विशेषज्ञ डॉ. सतीश कुमार शर्मा तथा फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्यूरिटी के दो जीव विज्ञानी, डॉ. अनिल सरसावन तथा मनोहर पवार ने उदयपुर जिले के कुंडेश्वर महादेव क्षेत्र में कुंडाल का गुडा गांव के पास एक जलधारा की वनस्पति पर बैठी स्प्लैंडिड हार्टलैट नामक डैमज़लफ्लाई की खोज की है। डॉ. शर्मा ने बताया कि वैज्ञानिक भाषा में इसे एग्रीक्नेमिस स्प्लैंडिडीसीमा कहा जाता है, यह एक पतली, आंखों पर दो रंग की आभा वाली डैमज़लफ्लाई है, जिसमें नर व मादा को स्पष्ट रूप से विभेदित किया जा सकता है। नर के शरीर में काले रंग से कहीं-कहीं नीली आभा नजर आती है जबकि मादा में शरीर की आभा भूरापन लिए होती है। भारत में इस कीट की असम, त्रिपुरा, बंगाल, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ , उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल व गुजरात में उपस्थित ज्ञात है तथा राजस्थान भी अब इस सूची में शामिल हो गया

- डॉ. सतीश शर्मा ने बताया कि स्प्लैंडिड हार्टलैट नामक डैमज़लफ्लाई एक पतली, आँखों पर दो रंग की आभा वाली डैमज़लफ्लाई है, जिसमें नर व मादा को स्पष्ट रूप में विभेदित किया जा सकता है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उदयपुर अंचल में दुर्लभ प्रजाति की दो डैमज़लफ्लाई देखी गयी हैं। उदयपुर के सेवानिवृत्त वन विशेषज्ञ डॉ. सतीश कुमार शर्मा तथा फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्यूरिटी के दो जीव विज्ञानी, डॉ. अनिल सरसावन तथा मनोहर पवार ने उदयपुर जिले के कुंडेश्वर महादेव क्षेत्र में स्प्लैंडिड हार्टलैट नामक डैमज़लफ्लाई की खोज की है।

रूपाणी के शव की डीएनए पहचान हुई, आज अंतिम संस्कार

अहमदाबाद, 15 जून। बीते गुरुवार को अहमदाबाद में एयर इंडिया के विमान हादसे में जान गंवाने वाले गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी के शव की पहचान हो गई है। रविवार को उनका डीएनए उनके परिवार के सदस्य के डीएनए से मैच हो गया। परिवार के अनुसार, राजकोट में सोमवार दोपहर 3 बजे अंतिम संस्कार किया जाएगा।

गुजरात के गृह राज्य मंत्री हर्ष सांघवी ने बताया कि विजय रूपाणी के डीएनए का मिलान सुबह 11:10 बजे हो गया और उनके परिवार को इसकी जानकारी दे दी गई है। उनके पार्थिव शरीर को जल्द ही राजकोट ले जाया जाएगा, जहां उनका अंतिम संस्कार होगा। जानकारी के अनुसार चार्टड प्लेन से उनके शव को राजकोट भेजा जाएगा।

- अहमदाबाद के विमान हादसे में मरने वालों की संख्या 275 हो गई। अब तक 248 शवों के डीएनए सैम्पल लिये गए, जिनमें 41 की शिनाख्त हो गई।

जानकारी के अनुसार, 12 जून को हुए प्लेन क्रैश में मरने वालों का आंकड़ा 275 पहुंच गया है। आज सुबह तक 248 शवों के डीएनए सैंपल लिए गए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

अवसर तो सभी को ज़िंदगी में मिलते हैं किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीक़े से इस्तेमाल कितने कर पाते हैं? –संतोष गोयल

इतना काफ़ी है!

संस्कृत विद्वान मम्मट ने अपने ग्रंथ काव्य प्रकाश में काव्य के छह प्रयोजन बताए हैं: काव्यंयशसेऽर्थकृतेव्यवहारविदेशिवेतरक्षतये। सद्यः परनिर्वृतयेकान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।। यहां यह जान लेना उचित होगा कि संस्कृत में काव्य का प्रयोग उसी अर्थ में होता था जिस अर्थ में आज सामान्य बोलचाल में साहित्य का प्रयोग होता है। आचार्य मम्मट यहां काव्य (अर्थात साहित्य) के जो प्रयोजन बता रहे हैं वे हैं – यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान, शिव से इतर अर्थात अशिव की क्षित, कांता (पत्नी) के समान उपदेश और तत्काल परम आनंद की प्राप्ति। स्थूल रूप से आज भी साहित्य के ये ही प्रयोजन हैं। कुछ लोग पैसों के लिए लिखते हैं, कुछ नाम/ख्याति के लिए। कुछ लोग लिख कर दुनिया की बुराइयों को नष्ट या कम करना चाहते हैं। 1936 में लखनऊ में आयोजित हुए प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन में प्रेमचंद ने जो अध्यक्षीय भाषण दिया था, और जो साहित्य का उद्देश्य: प्रगतिशीलता शीर्षक से सुलभ है, उसमिं इस महान कथाकार ने कहा था कि साहित्यकार या कलाकार स्वभावत: प्रगतिशील होता है। अगर यह उसका स्वभाव न होता, तो शायद वह साहित्यकार ही न होता। उसे अपने अन्दर भी एक कमी महसूस होती है और बाहर भी। इसी कमी को पूरा करने के लिए उसकी आत्मा बेचैन रहती है। अपनी कल्पना में वह व्यक्ति और समाज को सुख और स्वच्छंदता की जिस अवस्था में देखना चाहता है, वह उसे दिखाई नहीं देती। इसलिए, वर्तमान मानसिक और सामाजिक अवस्थाओं से उसका दिल कुढ़ता रहता है। वह इन अप्रिय अवस्थाओं का अन्त कर देना चाहता है, जिससे दुनिया जीने और मरने के लिए इससे अधिक अच्छा स्थान हो जाये। यही वेदना और यही भाव उसके हृदय और मस्तिष्क को सक्रिय बनाए रखता है।'' प्रकारांतर से प्रेमचंद वही बात कह रहे हैं जो आचार्य मम्मट ने 'शिवेतरक्षतये' के द्वारा कही थी। आज बहुत सारे लेखक दुनिया की स्थितियों को देखकर व्यथित होते हैं और वे चाहे जिस विधा में लिखें, अपने लेखन के द्वारा उस स्थिति को बदलने का उपक्रम करते हैं। यह बात जान ली जानी ज़रूरी है कि साहित्यकार के पास वैसी कोई ताकत नहीं होती है जैसी किसी नेता के पास, अधिकारी के पास या न्यायाधीश के पास होती है। इसलिए यह उम्मीद करना कि कोई एक कहानी या एक कविता लिखेगा और समाज की कोई बुराई दूर हो जाएगी, अव्यावहारिक होगा। लेकिन यह भी सही है कि साहित्य अपने पाठक को संस्कारित करता है और बदलता है। एक अच्छी कहानी, कविता या किसी भी अन्य विधा में आप कुछ भी पढ़ें, पढ़ने के बाद आप स्वयं को थोड़ा बदला हुआ अवश्य महसूस करेंगे।

संस्कृत में एक अभिव्यक्ति बहुत प्रचलित है –स्वांत: सुखाय। सृजन के संदर्भ में इसका प्रयोग होता है। हमने जो किया, जो लिखा, अपने सुख के लिए किया–लिखा। लेकिन क्या वाकई हम केवल अपने सुख के लिए लिखते हैं? अगर ऐसा है तो उसे सार्वजनिक क्यों करते हैं? बस, इसी सवाल के जवाब में यह रहस्य छिपा है कि जो स्वातं: सुखाय है उसमें भी कहीं न कहीं पर हित की बात जुड़ी है। वही बात जिसे प्रेमचंद ने साहित्यकार को अंदर ही अंदर एक कमी महसूस होती है कहा है। मैं दुनिया को जैसा देखना चाहता हूं, जब उसे वैसी नहीं पाता हूं तो बेचैन होता हूं, और लिखता हूं। लोग ऐसा करते–करते उम्र गुज़ार देते हैं। बहुत बार यह सवाल भी किया जाता है कि दुनिया में इतने बड़े–बड़े विचारक–लेखक वगैरह हुए, लेकिन दुनिया अच्छी तो फिर भी नहीं हुई! इस सवाल की ध्वनि यह होती है कि लिखना–विखना सब बेकार के काम हैं। इनसे कुछ होता–जाता नहीं है। और ऐसा नहीं है कि इस तरह की बातें वे ही करते हों जो ख़ुद नहीं लिखते हैं। बहुत बार ये बातें लिखने वालों के मन को भी व्यथित करती हैं। हाल में मेरे एक बेहद संवेदनशील मित्र ने, जो एक प्रतिष्ठित लेखक भी हैं, मुझसे यह सवाल किया: किसी एक समय में सही बात का पक्ष लेने वालों की संख्या लगातार घटती ही चली जाती है। इसके कारण होने वाले दुख को नियंत्रित करने का क्या उपाय है?'' ज़ाहिर है कि सवाल करते समय उनके मन में भी यही बात रही होगी कि हम जो लिखते हैं उसे बहुत कम समर्थन मिलता है। यह पीड़ा केवल उनकी ही नहीं है। हम सबकी है। अपने चारों तरफ हम देखते हैं कि अनावश्यक और बेहूदा बातों पर जितना शोर–शराबा होता है, सार्थक बातों पर उतनी ही चुप्पी की चादर फैली रहती है। एक लेखक अपना कीमती समय देकर कुछ लिखे और कोई उसके समर्थन में गर्दन भी न हिलाए, तो उसका व्यथित होना स्वाभाविक है। यह लगता है कि वर्तमान समाज में यह असंवेदशीलता और अधिक सघन हो गई है। दुष्यंत कुमार ने लिखा था न कि इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात/ अब किसी भी बात पर खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ।

एक आदमी सुबह-सुबह समुद्र के किनारे टहल रहा था। उसने देखा कि लहरों के साथ सैकड़ों मछलियाँ तट पर आ जाती हैं और जब लहरें पीछे जाती हैं तो मछलियाँ किनारे पर ही रह जाती हैं और धूप से मर जाती हैं। जब उसने यह मंज़र देखा तब लहरें ताज़ा थीं और मछलियाँ जीवित थीं। वह आदमी कुछ क़दम आगे बढ़ा, उसने एक मछली उठाई और उसे पानी में फेंक दिया। ऐसा वह बार-बार करता रहा। उस आदमी के ठीक पीछे एक और आदमी था जो यह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या और क्यों कर रहा है। वह उसके पास आया और पूछा, ''तुम क्या कर रहे हो? यहाँ तो अनगिनत मछलियाँ हैं। तुम उनमें से कितनों को बचा सकोगे? और इससे क्या फ़र्क़ पड़ेगा?'' उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया, दो क़दम आगे बढ़कर एक और मछली को उठाकर पानी में फेंक दिया और बोला, ''इससे इस एक मछली को तो फ़र्क़ पड़ता है।''

तो बात लेखक की निराशा की है। क्या बुराई के प्रति समाज की उदासीनता और उसके लगभग स्वीकार से उसे मान लेना चाहिए कि अब किसी को उसकी ज़रूरत नहीं है। वह कुछ नहीं कर सकता। उसे लिखना बंद कर देना चाहिए? कभी संत कबीर ने लिखा था, सुखिया सब संसार है, खायैअरूसोवै। / दुखिया दास कबीर है, जागैअरूरोवै।।'' तो, कबीर के वंशजों को तो दुखी ही रहना है। यही उनकी नियति है। और ऐसा भी नहीं है कि लेखन का कोई असर नहीं होता है। लेखन का, और अच्छे काम का। हमारे मित्र और हिंदी के शीर्षस्थ कथाकारों में से एक स्वयं प्रकाश ने एक संस्मरणात्मक किताब लिखी थी– 'धूप में नंगे पांव'। इस किताब में वे एक अत्यंत मार्मिक प्रसंग लिखते हैं। स्वयं प्रकाश अपनी नौकरी के सिलसिले में सुदूर उड़ीसा (अब ओडिशा) के एक बहुत छोटे कस्बे सर्गीपल्ली में रह रहे थे।एक बार वे छुट्टियां बिता कर अजमेर से सर्गीपल्ली जा रहे थे। साथ में पत्नी, बहन और दो छोटी बेटियां थीं। सर्गीपल्ली पहुंचते–पहुंचते घुप्प अंधेरा हो गया और तेज़ बरसात होने लगी। हालात कुछ ऐसे बने कि ये चारों पानी के तेज़ बहाव में बस बहने ही को थे, कि अचानक एक वृद्ध साइट इंजीनियर जिनका नाम महापात्र है, अपने साथियों के साथ इनकी मदद को आते हैं और इन्हें अपनी झोंपड़ियों में ले जाते हैं। इस प्रसंग के बाद लेखक लिखता है, अगर इस दुनिया में सौ–दो सौ महापात्र बाबू भी हैं तो इससे अच्छी जगह और कहां हो सकती है? और क्या तुम्हारी ज़िंदगी में कभी कोई महापात्र बाबू नहीं आए? मेरा यह मानना है कि एक सजग और सचेत लेखक हमेशा यही महापात्र बाबू वाली भूमिका निबाहता है और उसकी इस भूमिका को कभी न कभी कोई स्वयं प्रकाश कृतज्ञतापूर्वक याद भी करता है।

यह लिखते हुए मुझे अनायास कहीं पढ़ी हुई एक कथा याद आ रही है। कथा इस तरह है: एक आदमी सुबह–सुबह समुद्र के किनारे टहल रहा था। उसने देखा कि लहरों के साथ सैकड़ों मछलियाँ तट पर आ जाती हैं और जब लहरें पीछे जाती हैं तो मछलियाँ किनारे पर ही रह जाती हैं और धूप से मर जाती हैं। जब उसने यह मंज़र देखा तब लहरें ताज़ा थीं और मछलियाँ जीवित थीं। वह आदमी कुछ क़दम आगे बढ़ा, उसने एक मछली उठाई और उसे पानी में फेंक दिया। ऐसा वह बार–बार करता रहा। उस आदमी के ठीक पीछे एक और आदमी था जो यह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या और क्यों कर रहा है। वह उसके पास आया और पूछा, ''तुम क्या कर रहे हो? यहाँ तो अनगिनत मछलियाँ हैं। तुम उनमें से कितनों को बचा सकोगे? और इससे क्या फ़र्क़ पड़ेगा?'' उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया, दो क़दम आगे बढ़कर एक और मछली को उठाकर पानी में फेंक दिया और बोला, ''इससे इस एक मछली को तो फ़र्क़ पड़ता है।''

तो मुझे लगता है कि भले ही पल भर को हमें लगे कि हमारी कोई नहीं सुन रहा है, यथार्थ यह है कि कोई न कोई तो हमारी बात सुनता ही है, और बदलता भी है। क्या हमारे लिखते–बोलते रहने के लिए इतना काफ़ी नहीं है?

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सिंध नरेश महाराजा दाहिर सेन का राष्ट्र प्रेम और बलिदान इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय

सिंध के अंतिम हिंदू शासक महाराजा दाहिर सेन के शहीद दिवस 16 जून पर विशेष आलेख

वासुदेव देवनानी

महाराजा दाहिर सेन, सिंध के अंतिम हिंदू शासक थे, जिन्होंने 8वीं शताब्दी की शुरुआत में सिंध (वर्तमान पाकिस्तान में) पर शासन किया था। दाहिर सेन का नाम सिंध के एक महान शासक के रूप में इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा हुआ है। वे राजा चच के सबसे छोटे पुत्र थे। दाहिर सेन के तख़्त पर आसीन होने से पहले इनके भाई चंद्रसेन राजा थे जो, बौद्ध मत के समर्थक बताये जाते थे। उनकी वीरता और शासनकाल की घटनाएं इतिहास में अहम् स्थान रखती हैं। वह एक शक्तिशाली और स्वतंत्र शासक थे, जिन्होंने अपने क्षेत्र की रक्षा एवं सिंध की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कई लड़ाईयां लड़ी और अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। उनकी कहानी आज भी दक्षिण एशियाई इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में पढ़ाई जाती है। उन्होंने सिंध को एक मजबूत और समृद्धशाली राज्य बनाया जो व्यापार और संस्कृति के केंद्र के रूप में भी जाना जाता था।

महाराजा दाहिर सेन का शासन काल 663 ईस्वी से 712 ईस्वी तक के मध्य बताया जाता है। उनके राज्य की राजधानी अलोर (अरोड़) में थी। उन्होंने सिंध को मजबूत राज्य बनाने के साथ ही सिंधु घाटी सभ्यता के संरक्षण के लिए भी अविस्मरणीय काम किया। उनका जीवन चरित्र कई इतिहास की किताबों में वर्णित है। 16 जून का दिन भारत के इतिहास का बहुत ही महत्वपूर्ण दिन है। इसी दिन सप्त सिंधु क्षेत्र के सिंध प्रदेश पर अरब हमलावरों का मुकाबला करते हुए सिंध नरेश महाराजा दाहिर सेन शहीद हुए थे।

इतिहासकारों के मुताबिक़ राजा दाहिर की हुकूमत पश्चिम में मकरान तक, दक्षिण में अरब सागर और गुजरात तक, पूर्व में मौजूदा मालवा के केंद्र और राजपूताने तक और उत्तर में मुल्तान से गुज़रकर दक्षिणी पंजाब तक फैली हुई थी। सिंध से ज़मीनी और समुद्री व्यापार भी होता था। राजा दाहिर इंसाफ़–पसंद थे। उनके शासन में तीन तरह की अदालतें थीं, जिन्हें कोलास, सरपनास और गनास कहा जाता था, बड़े मुक़दमे राजा के पास जाते थे जो सुप्रीम कोर्ट का दर्जा रखते थे। वर्तमान में, महाराजा दाहिर का यह शासन स्थल पाकिस्तान के सिंध प्रांत में है।

खलीफा अबद अल बिन यूसुफ अरब का खलीफा बना और उसने अबद हज्जाज बिन यूसुफ को इराक का सूबेदार नियुक्त किया। हज्जाज ने प्रारम्भिक सफलताओं के बाद जून 712 में मोहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरब सेना को सिंध पर हमला करने का आदेश दिया। उस समय चच वंश के महाराजा दाहिर सेन सिंध नरेश थे। यह राजवंश शौर्य और पराक्रम में बढ़ा–चढ़ा नाम था। वैसे भी सिंध सागर से जुड़ा हुआ था, इसलिए इस राजवंश ने सुरक्षा के पुख्ता इन्तजामात कर रखे थे। नगर के चारों ओर सुदृढ़ प्राचीर थी। किला भी काफी मजबूत था। मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध के नगर देवल पर यह हमला बोला। देवल में एक ऐतिहासिक शिव मंदिर था। इसी मंदिर के कारण इस नगर को देवल या देवालय कहा जाता था। यह मंदिर और नगर वर्तमान कराची के नज़दीक ही था। उस समय सिंध प्रदेश की राजधानी अलोर थी। लेकिन राजधानी से भी ज्यादा जरूरी देवल की रक्षा करना अहम्था माना जाता था। मान्यता थी क्ि यदि अरब देवल को न जीत सके तो दोबारा शायद सिंध की ओर मुंह न करते लेकिन यदि मंदिर पर अरबों का कब्जा हो गया तो अरबों को आगे बढऩे का रास्ता मिल जाता। सिंध व्यापार का भी बहुत बड़ा केन्द्र था। इसलिए यदि सिंध पर अरबों का कब्जा हो जाता तो व्यापार का यह महत्वपूर्ण मार्ग शत्रु के हाथ में चला जाता।

महाराजा दाहिर सेन ने अपने दो पुत्रों जयसिंह और घरसिया तथा अनेक इष्टजनों के साथ युद्ध करने आगे आए। उन्होंने जिलोर में उनके बेटे जयसिंह के नेतृत्व में सेना की एक टुकड़ी तैनात कर रखी थी। जयसिंह ने अपनी अंतिम सांस तक मोर्चा संभाले रखा लेकिन धीरे–धीरे उसके सभी सैनिक मारे गए। कासिम ने जयसिंह को अपने पक्ष में करने हेतु अनेक प्रलोभन दिए। परन्तु जयसिंह ने सिंधु की साक्षी में मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राण देना श्रेयस्कर समझा। अब अरब सेना देवल की प्राचीर तक आ पहुंची थी। अरब सेना देवालय की प्राचीर को भेद कर बार–बार अन्दर घुसने का प्रयास कर रही थी। उसके सैनिक तो धराशायी हो रहे थे, लेकिन देवल की प्राचीर को वे भेद नहीं पा रहे थे। दाहिर सेन स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व कर रहे थे। देवालय के शिखर पर राज्य पताका फहरा रही थी। सिंध के लोगों का विश्वास था कि जब तक यह पताका शिखर पर फहराती रहेगी,तब तक सिंध अविजित ही रहेगा। लेकिन इस प्रतीक का यह महत्व अरब सैनिक नहीं जानते थे। इतिहास में प्रतीक ही किसी देश की गौरव गाथा का माध्यम बनते हैं।

प्रतीकों की रक्षा के लिए सेनाओं को मरते कटते देखा गया है। अरब सैनिक प्रतीकों के इस मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समझ नहीं पा रहें थे लेकिन, घर के भेदिए इस रहस्य को जानते थे। इतिहास गवाह है कि भारत के पराभव में घर के इन्हीं भेदियों का हाथ रहा है। मोहम्मद बिन कासिम जब किसी भी तरह देवल की प्राचीर को भेद नहीं पा रहा था तो उसने घर के इन्हीं भेदियों की तलाश शुरू कीऔर देवल की जिस प्राचीर को भेदने में उसे सफलता नहीं मिल पा रही थी, पर भेदियों की तलाश में उसे अवश्य सफलता मिल गई। अब अरब सेना का सारा जोर किसी तरह देवल के शिखर पर फहरा रही उस पताका को ही गिराने में लग गया। सभी आग्नेय अस्त्र देवल के शिखर की ओर चलने लगे। अचानक वह पताका नीचे गिर पड़ी। सिंध सैनिकों में हलचल होने लगी। दाहिर सेन के निकटस्थ सलाहकारों ने अनुभव कर लिया कि हतप्रभ सिंध सैनिक अब ज्यादा देर तक शत्रु के सम्मुख टिक नहीं पाएंगे।

उन्होंने महाराजा को रणनीति के अनुसार किसी निकटस्थ प्रदेश में अपने परिवार के साथ आश्रय लेने का आग्रह किया लेकिन, सिंध नरेश ने सिंध की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अनवरत लड़ाई जारी रखी और मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राण देना ही बेहतर समझा। इस प्रकार महाराजा दाहिर सेन ने इतिहास की उज्जवल परम्परा की रक्षा करते हुए रणभूमि में लड़ते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। मोहम्मद बिन कासिम ने उन्हें आत्म समर्पण करने का अवसर भी दिया, लेकिन दाहिर सेन ने शहादत का रास्ता ही चुना।

महाराजा दाहिर सेन की बेटियां का बदला :– महाराजा दाहिर सेन सिंध की दो बेटियों, परमाल और सूर्या देवी थी, दोनों ने अपने पिता के साथ अरब आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ाई में भाग लिया था। जब अरब आक्रमणकारियों ने सिंध पर कब्जा कर लिया तो मुहम्मद बिन कासिम ने परमाल और सूर्या देवी को बंदी बना लिया गया। महाराजा दाहिर सेन सिंध की बहादुर बेटियों की शहादत एक ऐतिहासिक घटना है जो अरबआक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ाई के दौरान हुई थी। बताया जाता है कि ख़लीफ़ा बिन अब्दुल मालिक ने दोनों बेटियों को एक दो रोज़ आराम करने के बाद उनके हरम में लाने का आदेश दिया। एक रात दोनों को ख़लीफ़ा के हरम में बुलाया गया। ख़लीफ़ा ने अपने एक अधिकारी से कहा कि वो मालूम करके बताएं कि दोनों में कौन सी बेटी बड़ी है। बड़ी ने अपना नाम सूर्या देवी बताया और उसने जैसे ही उनके चेहरे से नक़ाब हटाया तो ख़लीफ़ा उनकी ख़ूबसूरती देखकर दंग रह गए और उन्हें हाथ से अपनी तरफ़ खींचा लेकिन उन्होंने ख़ुद को छुड़ाते हुए कहा, ''बादशाह सलामत रहे, मैं बादशाह की क़ाबिल नहीं क्योंकि,ॐ ाादिल इमादुद्दीन मोहम्मद बिन क़ासिम ने हमें तीन रोज़ अपने पास रखा और उसके बाद ख़लीफ़ा की ख़िदमत में भेजा है। शायद आपका दस्तूर कुछ ऐसा है, बादशाहों के लिए ये बदनामी जायज़ नहीं।''

इतिहासकारों के अनुसार यह सुन ख़लीफ़ा, मोहम्मद बिन क़ासिम से बहुत नाराज़ हुए और आदेश जारी किया कि उन्हें संदूक़ में बंद कर दरबार में हाज़िर किया जाए। जब ये फ़रमान मोहम्मद बिन क़ासिम को पहुंचा तो वो अवधपुर में था। तुंरत आदेश का पालन हुआ और उन्हें दरबार पहुंचाया गया। ख़लीफ़ा के आदेश से मुहम्मद बिन कासिम को मौत के घाट उतार दिया गया। कहा जाता है कि उन्हें कच्ची चमड़ी में लपेटकर मारा गया था। यह एक बहुत ही दर्दनाक और क्रूर सज़ा थी जिसमें व्यक्ति को कच्ची चमड़ी में लपेटकर तब तक मारा जाता था जब तक कि उनकी मृत्यु न हो जाए। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजा दाहिर की बेटियों ने इस तरह क़ासिम से अपने माता पिता और सिंध के बहादुर सैनिकों की मौत का बदला ले लिया। जब परमाल और सूर्या देवी को पता चला कि मुहम्मद बिन कासिम की मृत्यु हो गई है, तो उन्होंने भी अपने पेट में कटार घोप कर अपनी जान दे दी। उनकी शहादत को सिंध के इतिहास में आज भी एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में याद किया जाता है तथा उन्हें एक वीर और साहसी बेटियों के रूप में सम्मानित किया जाता है। परमाल और सूर्या देवी की कहानी एक ऐतिहासिक घटना है जो अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम के सिंध पर आक्रमण के दौरान हुई थी।

विरासत के अवशेष :–महाराजा दाहिर सेन की विरासत के अवशेष के रूप में भारत और पाकिस्तान में कई ऐतिहासिक स्थल और स्मारक हैं जो उनके जीवन और शासनकाल के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख स्थलों में एक प्राचीन शहर अरोर शामिल है जो वर्तमान में पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है। माना जाता है कि यह महाराजा दाहिर सेन सिंह की राजधानी थी। इसीप्रकार रावलकोट किला भी सिंध, पाकिस्तान में स्थित है। रावलकोट भी महाराजा दाहिर सेन के शासनकाल में एक महत्वपूर्ण स्थल था। इन ऐतिहासिक स्थलों के अलावा, महाराजा दाहिर की विरासत भारत में भी देखी जा सकती है, खासकर राजस्थान और गुजरात में, जिनके सिंध के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध रखते रहें हैं। यहां के कुछ क्षेत्रों में महाराजा दाहिर सेन की याद में त्योहार और समारोह मनाए जाते हैं। दाहिर सेन की कहानियां लोककथाओं के रूप में आज भी प्रचलित हैं। उनके जीवन और शासनकाल के बारे में कई पुस्तकें और लेख भी लिखे गए है।

महाराजा दाहिर सेन सिंघ के स्मारक :–महाराजा दाहिर सेन की स्मृति में बनाए गए स्मारक में सिंध में स्थित एक प्राचीन मंदिर शामिल है। राजस्थान के अजमेर में भी महाराजा दाहिर सेन सिंघ का एक स्मारक है। दाहिर सेन की विरासत आज भी इतिहास में अपना अहम स्थान रखती है तथा सिंध के लोगों के साथ ही भारतीयों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत हैं। इसके साथ ही राष्ट्रवादियों ने राजा दाहिर दिवस मनाने का आगाज कर महाराजा दाहिर सेन सिंध की स्मृति को चिर स्थाई बनाने का प्रयास किया है।

–वासुदेव देवनानी–
अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा।

वर्षा जल की एक-एक बूंद का संरक्षण होगा, प्रदेश में भू-जल संकट से निजात मिलेगी

मानसिंह मीना

राजस्थान वह भूमि है जहां रजवाड़ों, भामाशाहों ने बावड़ियां खुदवाई थी, तालाब बनवाए थे, और जहां हर बूंद को मोती की तरह सहेजा जाता था, लेकिन बीते दशकों में जल संकट ने इस गौरवशाली परंपरा को लगभग भुला दिया है। सूखते तालाब, गहराते भू–जल स्तर और बारिश के पानी का व्यर्थ बहना, ये सब मिलकर रेगिस्तान को और अधिक प्यासा बना रहे हैं। इन सभी समस्याओं को सिरे से ख़त्म करने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की शुरूआत कर संपूर्ण प्रदेश में एक अनूठी पहल की है। प्रदेश में इसी कड़ी में चल रहे कर्मभूमि से मातृभूमि'अभियान को भी इस दिशा में एक ज़रूरी कदम कहा जा सकता है। प्रदेश में इस अभियान का शुभारम्भ जयपुर से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा 15 जनवरी को किया गया। भू–जल विभाग द्वारा इस विचार को धरातल पर उतारने का बीड़ा उठाया गया, खासकर उन जिलों में जहां भू–जल संकट गहराता जा रहा था। प्रदेश में सिरोही, पाली, जोधपुर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, झुंझुनूं और जयपुर से इसकी शुरुआत हुई और अब राज्य के अन्य जिलों में भी अभियान अंतर्गत भूजल रिचार्ज/जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है। यह कोई सामान्य सरकारी योजना नहीं, बल्कि एक भावनात्मक पुल है जो उन लाखों प्रवासी राजस्थानियों को उनकी जन्मभूमि से जोड़ रहा है, जो देश–दुनिया में अपनी मेहनत से नाम कमा चुके हैं।

कैसे शुरू हुआ ये अभियान :– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 'कैच द रन थीम पर जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल शक्ति अभियान वर्ष 2019 से प्रारम्भ किया गया। प्रत्येक वर्ष जल शक्ति अभियान हेतु अलग–अलग थीम रखी गई। वर्ष 2025 में जल शक्ति अभियान हेतु जल संचय जन भागीदारी–जन जागरूकता की थीम रखी गई। प्रधानमंत्री द्वारा जल संरक्षण को राष्ट्रीय प्राथमिकता मानते हुए जल संचय जन भागीदारी अभियान का शुभारंभ 6 सितम्बर 2024 को गुजरात के सूरत में किया गया।

अभियान का मुख्य उद्देश्य :– वर्षा जल की एक–एक बूंद का संरक्षण, संवर्धन व जल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण जन–सहभागिता से कर राज्य में गिरते भू–जल स्तर को रोकने के साथ–साथ आम–जन को जागरूक कर जल के प्रति व्यवहार परिवर्तन करना एवं जन भागीदारी से जल संचयन कर जन आंदोलन बनाया जाना इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। राजस्थान के इतिहास में जल–प्रबंधन का विशिष्ट स्थान रहा है। बावड़ियां, कुंड, जोहड़ और तालाब... ये सिर्फ जल स्त्रोत नहीं थे, बल्कि सामाजिक मेलजोल के केंद्र भी थे। 'कर्मभूमि से मातृभूमि' अभियान उस विरासत को आधुनिक तकनीक और जनभागीदारी के साथ जोड़ता है। जहां पहले राजा–महाराजा जल संरक्षण का बीड़ा उठाते थे, वहीं अब यह जिम्मेदारी जनता और प्रवासियों ने खुद उठाई है। कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान से भू–जल स्तर की गिरावट पर रोकथाम, कृषि और घरेलू उपयोग के लिए जल की स्थायी उपलब्धता हो सकेगी। इस योजना का दिल है रिचार्ज शाफ्ट। ये खास संरचनाएं वर्षा जल को सहेजने का सबसे अच्छा और कारगर तरीका हैं। इसके माध्यम से सतह पर गिरा पानी व्यर्थ बहने के बजाय धरती की गोद में समा जाता है। इससे भूगर्भ का जल स्तर बढ़ जाता है। अभियान के अंतर्गत राज्य के अकार्यशील कुएे, बोरिंग व हैण्डपंपों द्वारा भी वर्षा जल का भू–जल में कृत्रिम पुनर्भरण संबंधी कार्य किया जा रहा है। इसी के साथ–साथ क्षेत्र विशेष के आधार पर उपयुक्त कम लागत की जल संरक्षण संरचनाओं यथा रिचार्ज पिट, ट्रेन्स, रूफटॉप रेन वॉटर हार्वेस्टिंग संरचनाओं के निर्माण की अभिनव पहल भी भामाशाहों द्वारा की जा रही है। अब प्रवासी राजस्थानी अपने गांवों में रिचार्ज शाफ्ट एवं जल संरक्षण संरचनाएं बनवाने के लिए धन राशि व सहयोग दे रहे हैं। जिससे वर्षा जल सीधे जमीन के भीतर जाकर भूजल पुनर्भरण में मदद करेगा। यह केवल आर्थिक सहयोग नहीं, बल्कि संवेदनाओं का समर्पण है। प्रदेश के 41 जिलों की 11 हजार 266 ग्राम पंचायतों में इस अभियान के तहत जल संरक्षण व भूजल रिचार्ज हेतु संरचनाओं का निर्माण कार्य किया जा रहा है। राज्य में गिरते भू–जल स्तर को रोकने के साथ–साथ जल संरक्षण कार्यों द्वारा सम्पूर्ण राज्य लाभान्वित होगा व भविष्य के लिए सतत् व निर्बाध जल स्त्रोतों की सुनिश्चितता हो सकेगी।

जल संचय–जन भागीदारी अभियान ''कर्मभूमि से मातृभूमि'' के अन्तर्गत राज्य में लगभग कुल 45 हजार रिचार्ज एवं जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण आगामी 04 वर्षों में किये जाने का लक्ष्य रखा गया। वित्तीय वर्ष 2025–2026 में राज्य में 5000 रिचार्ज एवं जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण सामाजिक जिम्मेदारी निधि ;ब्ैत् निदकद्ध से कराये जाने की बजट घोषणा की गई है। अब तक लगभग 1 हजार 800 संरचनाओं का निर्माण कार्य पूर्ण किया जा चुका है और शेष कार्य प्रगतिरत है।

अभियान के अन्तर्गत रिचार्ज एवं जल संरक्षण स्थलों का चयन ग्राम विकास अधिकारियों द्वारा पंचायती राज विभाग के ई–पंचायत मोबाइल एप्लीकेशन पर किया जा रहा है। संरचना निर्माण कार्य पूर्ण होने के पश्चात् की जानकारी भी ई–पंचायत मोबाइल एप्लीकेशन पर अद्यतन की जा रही है। अब तक ग्राम विकास अधिकारियों द्वारा ई–पंचायत मोबाइल एप के माध्यम से 45 हजार लक्ष्य के विरूद्ध 35 हजार रिचार्ज स्थलों का चयन किया जा चुका है।

–मानसिंह मीना ,
उप निदेशक, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जयपुर।

राशिफल

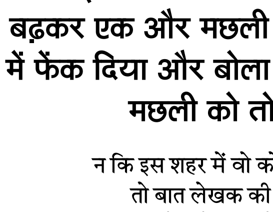

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 जून, 2025

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 1:14 तक, वैधृति योग दिन 11:07 तक, तैतिल करण दिन 3:32 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:10 से कुम्भ राशि में संचार करेगा। 2

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–मकर, मंगल–सिंह, बुध–मिथुन, गुरू–मिथुन, शुक्र–मेष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज रवि योग रात्रि 1:16 से आरम्भ होगा। आज नाग पंचमी (बंगाल में), कोकिला पंचमी, वैधृति पुण्य है। पंचक दिन 1:10 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:19 तक, शुभ 9:02 से 10:44 तक, चर 2:10 से 3:52 तक, लाभ अमृत 3:52 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:18

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे।

तुला
घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

संक्षिप्त

अवैध लकड़ी से भरी टाटा 407 जब्त

भुसावर भरतपुर (निस)। भरतपुर के भुसावर कस्बें में वन विभाग ने अवैध लकडी परिवहन के खिलाफ बडी कार्रवाई की है। उप वन संरक्षक मानस सिंह के निर्देशन और क्षेत्रीय वन अधिकारी नदबई के नेतृत्व में चलाए जा रहे अभियान के दौरान यह कार्रवाई की गई। शनिवार रात करीब 10 बजे वनपाल नाका खेडली मोड पर स्टाफ ने गश्त के दौरान भुसावर से आ रही एक टाटा 407 को रोका। वाहन में प्रतिबंधित हरी लकडियां भरी हुई थीं। जांच के दौरान चालक के पास लकडियों के परिवहन की कोई वैधानिक स्वीकृति नहीं मिली। वन विभाग ने राजस्थान वन अधिनियम के तहत वाहन को जब्त कर लिया है। वाहन को सुरक्षा के लिए पुलिस थाना भूसावर में खडा किया गया है। इस कार्रवाई को टीम प्रभारी ओमेन्द्र शर्मा और केशव सिंह ने अंजाम दिया। वन विभाग की लगातार कार्रवाई से लकडी तस्करों और खनन माफियाओं में भय का माहौल बना हुआ है। विभाग अवैध खनन और परिवहन को रोकने के लिए निरंतर अभियान चला रहा है।

मनीष मीना नीट में सफल

सूरौठ। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) द्वारा जारी नीट (यूजी)-2025 परीक्षा के परिणाम में सूरौठ तहसील पटेल का पुरा निवासी मुकेश मीना के सुपुत्र मनीष मीना ने आल इंडिया में 6000 वीं रैंक व एसटी वर्ग में 40 वीं रैंक प्राप्त किए है, मीना भविष्य में वह एक सफल सुपर स्पेशियलिट डॉ बनना चाहते हैं तहसील सूरौठ के रहने वाले मनीष के पिता मुकेश मीना लोकों पायलट है उनकी माता गृहिणी है मीना ने दिल्ली के एक निजी कोचिंग संस्थान से नीट की तैयारी की मीना ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और कोचिंग शिक्षकों को दिया है उस मौके पर सूरौठ निवासी मीना का चयन होने पर सर्व समाज के लोगों ने मनीष मीना को दूरभाष पर शुभकामनाएं दी।

आग लगने से दो भैंस मरी

सूरौठ। तहसील के समीपवर्ती पाली ठाम में चंद्रकेश जाट के छप्पर पोश में शॉर्ट सर्किट होने से आग लग गई, दोपहर का समय होने के कारण सभी परिवार जन सो रहे थे व आग कि लपटे अधिक उठने पर पडोसी व बाहर से निकलने वाले राहगीरों को आग लगने का पता चला तो उन्होंने जैसे शोर मचाया व परिवार जनों को जगाया जिस पर वहां उपस्थित लोगों ने आग बुझाने की काफी कोशिश की लेकिन जब तक आग बुझ पाती तब तक आग कि लपटों से दो भैंसों की जलकर मौके पर हुई मौत व 2 भैंसें गंभीर रूप से झुलस गई आग में जलकर हजारों किलोग्राम चारा, गेहूं, , सहित घरेलू सामान भी जलकर हुआ खाक, ग्रामीणों ने पानी डालकर आग पर पाया काबू, पशुपालन विभाग की टीम ने झुलसी भैंसों का किया उपचार, पंचायत समिति सदस्य इंद्रेश पाली व ग्रामीणों ने परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण जिला कलेक्टर करौली से आर्थिक सहायता राशि दिलाने की मांग, जिस पर इस मौके पर ग्रामीण सहित कई लोग रहे उपस्थित।

वैध नाथूलाल शर्मा अध्यक्ष बने

सवाईमाधोपुर। श्री विजेश्वर धर्मार्थ ट्रस्ट में चुनाव अधिकारी अशोक गोयल एडवोकेट द्वारा ट्रस्ट के द्विवार्षिक चुनाव 14 जून को संपन्न कराये। जिसमें ट्रस्टी पद हेतु 30 व्यक्तियों ने फॉर्म प्रस्तुत किए। प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक वोट डाले गए। उसके पश्चात मतगणना की गई। जिसमें जिसमें 21 ट्रस्टियों को विजेता घोषित किया गया। विजेता ट्रस्टी बाबूलाल गुप्ता, भगवान दास चौधरी, देवेंद्र सिंह राठौड़ ,गिरधारी शर्मा, गिर्राज केदावत, जगदीश गर्ग, कल्याण मल कंवरिया ,महावीर मित्तल ,महेश गर्ग, निरंजन सिंगल, नरेश शर्मा, नाथूलाल शर्मा, ओमप्रकाश मित्तल ,पूरणमल अठावला ,प्रहलाद राय गोयल ,रमेश चंद्र अठावला, श्रीवल्लभ गौतम, सत्येंद्र गुप्ता ,तेज कुमार कुमावत, तिलकराज सिंधी, विनोद कुमार गर्ग रहे। 15 जून को ट्रस्ट के पदाधिकारी के चुनाव सर्वसम्मति से पांच पदों के एक एक नामांकन प्राप्त हुए को विजेता घोषित किया गया। अध्यक्ष पद पर नाथूलाल शर्मा, उपाध्यक्ष पद पर विनोद कुमार गर्ग, मंत्री पद पर पूरणमल अठावला, कोषाध्यक्ष पद पर सत्येंद्र गुप्ता, सहमंत्री पद पर गिरधारी लाल शर्मा को निर्वाचित घोषित किया समस्त ट्रस्टीगण एवं पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई।

यूडीएच मंत्री ने की वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान की प्रगति की समीक्षा

> वंदे गंगा एक जनआंदोलन है, जल की हर बूंद को सहेजना, वर्षा जल का संठाहण करना और आने वाली पीढ़ियों को जल संकट से बचाना है

करौली । वंदे गंगा एक जनआंदोलन है, जल की हर बूंद को सहेजना, वर्षा जल का संठाहण करना और आने वाली पीढ़ियों को जल संकट से बचाना है उद्देश्य-यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा प्रदेश के नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग के राज्यमंत्री स्वतन्त्र प्रभार झाबर सिंह खर्रा ने रविवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की प्रगति की समीक्षा की।

बैठक में विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे जल संरक्षण एवं जल संठाहण कार्यों की विभागवार विस्तृत जानकारी ली और अभियान को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए। बैठक को संबोधित करते हुए यूडीएच मंत्री ने कहा कि अभियान को सफल बनाने के लिए समस्त विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करें। हम सभी की जिम्मेदारी है कि पोखर, तालाब, बावडियां, कुएं, बांध और कुंड जैसे पारंपरिक जल स्त्रोतों की साफ-सफाई एवं जल संठाहण एवं संरक्षण के प्रति जिले वासियों को जागरूक कर उनकी व्यापक स्तर पर सहभागिता सुनिश्चित करें और इस अभियान को जन आंदोलन के रूप में सफल बनाएँ।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प एक पेड मॉं के नाम को मूर्त रूप देते हुए हरियालो राजस्थान वृक्षारोपण महाभियान के तहत अधिक से अधिक पौधे अवश्य लगाए जाएं और लगाए गए पौधों संरक्षण तब तक किया जाए जब तक कि वे एक हरे-भरे वृक्ष के रूप में विकसित न हो जाएँ, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए छाया, फल, जलवायु संतुलन और पर्यावरणीय लाभ दे सकें। जिला कलक्टर नीलाभ सक्सेना ने 5 जून से अब तक वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत संचालित समस्त गतिविधियों से राज्यमंत्री खर्रा को पीपीटी के माध्यम से विभागवार अवगत कराया और मंत्री को आश्वस्त किया कि मुख्यमंत्री की मंशानुरूप अभियान को सफल बनाने में प्राप्त सभी दिशा निर्देशों की अक्षरशः पालना सुनिश्चित कर अभियान को जिले में सफल बनाने की दिशा में अठासर हैं।बैठक में जिला प्रशासन,पंचायती राज एवं ठाामीण विकास,जल संसाधन, वन, नगर परिषद, कृषि,वॉटर शेड,जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, उद्यानिकी एवं स्वच्छ भारत मिशन सहित अन्य विभागों द्वारा की गई कार्यवाही पर विस्तृत चर्चा की गई।

राज्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिए कि जल संरक्षण से जुडे सभी कार्यों को समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण एवं जनसहभागिता के साथ पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान एक जनआंदोलन है जिसका उद्देश्य जल की हर बूंद को सहेजना, वर्षा जल का संठाहण करना और आने वाली पीढ़ियों को जल संकट से बचाना है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आ न न्द पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में इस विजन को साकार करने के लिए यह अभियान प्रदेश के प्रत्येक जिले में संवेदनशीलता के साथ से संचालित किया जा रहा है।इस दौरान सपोटरा के विधायक हंसराज मीणा, लोकसभा प्रत्या'शी ईंदू देवी जाटव, भाजपा जिला अध्यक्ष गोवर्धन सिंह जादौन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवचरण मीना, अतिरिक्त जिला कलक्टर हेमराज परिडवाल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गुमनाराम, उप वन संरक्षक सुमित बंसल, पीयूष शर्मा, सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय के सहायक निदेशक धर्मेन्द्र मीना सहित अन्य जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

लाखों का माल जलकर खाक

भरतपुर (निस)। बयाना कस्बे के मुख्य बाजार में बीती रात एक कपडे की दुकान में भीषण आग लग गई। हादसा रात करीब 1 बजे स्टेशन रोड पर स्थित बंद दुकान में हुआ, जिसमें लाखों रुपये के कपडे और अन्य सामान जलकर राख हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, रात करीब 1:00 बजे दुकान से धुएं की तेज गंध आने लगी, जिससे आसपास के रहवासियों को आग लगने का अंदेशा हुआ। पडोसी हरिओम गोयल ने बताया कि यह दुकान ताराचंद नारंग की थी, जो उस समय बंद थी। धुआं उठता देख आसपास के लोगों ने तत्काल पानी डालकर आग बुझाने की कोशिश शुरू की और दुकान मालिक को फोन पर सूचना दी। ताराचंद नारंग के मौके पर पहुंचने पर दुकान का ताला खोला गया और लोगों ने मिलकर दुकान के अंदर भभक रही आग पर किसी तरह काबू पाया। हालांकि तब तक काफी नुकसान हो चुका था। स्थानीय लोगों की तत्परता से आग को और फैलने से रोका जा सका। लेकिन इस घटना में लाखों रुपये के कपडे और अन्य सामग्री जलकर खाक हो गई। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। अनुमान है कि शॉर्ट सर्किट या बिजली के अन्य कारणों से यह आग लगी हो सकती है।

सार-समाचार

विधायक को ज्ञापन सौंपा

भरतपुर (निस)। भरतपुर बाबरी जाति सुधार समिति की ओर से स्थानीय विधायक व पूर्व मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग को ज्ञापन सौंपकर वार्ड नम्बर 56 की गोकुल नगर बाबरी बस्ती में रह रहे विमुक्त बाबरी अनुसूचित जाति के परिवारों को आवासीय पट्टे दिलवाने की मांग की गई है। समिति के अध्यक्ष व पूर्व पार्षद जगदीश सिंह के नेतृत्व में विधायक डॉ. गर्ग को सौंपे गये ज्ञापन में बताया गया कि विमुक्त बाबरी अनुसूचित जाति के करीब पिछले 40 वर्षों से योजना संख्या दो सैक्टर नम्बर 4 पर गोकुल बस्ती में करीब 400 परिवार पक्के व कच्चे मकान बनाकर रह रहे हैं। वह अशिक्षित व गरीब होने के साथ ही कमजोर वर्ग से आते हैं और अधिकांश परिवार बीपीएल श्रेणी के हैं। इन सभी लोगों के मूल व जाति प्रमाण पत्र बने हुये हैं। नगर निगम की ओर से 10 वर्ष पूर्व यहां पर सर्वाजनिक सुलभ शौचालय बनवाया था और यहां की बस्ती के बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से राजकीय प्राथमिक विद्यालय भी सरकार द्वारा खुलवाया था। ज्ञापन में बताया गया कि वर्ष 2001 में नगर सुधार न्यास द्वारा गोकुल नगर बाबरी बस्ती में सर्वे कराकर पट्टे आवंटित के लिये अम्बेडकर आवासीय योजना के तहत 17 परिवारों को पट्टे जारी कर दिये गये थे। उन्होंने डॉ. गर्ग को दिये ज्ञापन में बताया कि पिछले वर्षों में भी यूआईटी द्वारा पुन: पट्टे आवंटन के लिये सर्वे कराया लेकिन अभी तक भूमि आवंटन के पट्टे जारी नहीं हुये हैं। उन्होंने गरीब वंचित परिवारों की स्थिति को देखते हुये विमुक्त घुंमतु, अर्द्ध घुंमतु समुदाय, दादू दयाल घुंमतु सशक्तिकरण योजना के तहत योजना संख्या दो सैक्टर नम्बर 4 की भूमि आवंटन के पट्टे जारी करवाने का आठाह किया है। ताकि यहां के लोगों को मूलभूत सुविधाओं का लाभ मिल सके।

तनय कुमार फ्लाइंग ऑफिसर बने

भरतपुर (निस)। हैदराबाद में आयोजित भारतीय वायु सेना के अधिकारियों की भव्य पासिंग आउट परेड में भरतपुर क्षेत्र के लाल तनय कुमार डागुर पुत्र देवेंद्र कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी, बी एस एफ ने फ्लाइंग ऑफिसर बनकर परिवार की देश सेवा की परंपरा को जारी रखते हुए परिवार की चौथी पीढ़ी के रूप में देश सेवा में कदम रखा है। उल्लेखनीय है कि फ्लाइंग ऑफिसर तनय कुमार डागुर, दिवंगत कर्नल हरी सिंह, डीग निवासी समाज सेवी के भ्राता पौत्र हैं। कर्नल हरी सिंह डागुर ने अपने पोते को बचपन से ही देश सेवा के लिए प्रेरित करते रहे और उनके मार्ग दर्शन से प्रभावित होकर तनय ने शुरू से ही अपना मन राष्ट्र सेवा में जाने का बना लिया था। फ्लाइंग ऑफिसर तनय शुरु से मेधावी छात्र रहे है, इन्होंने 12 कक्षा पास करने के बाद आई आई एम में इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट में भी एडमिशन हासिल किया। राष्ट्र सेवा की परिवार की परंपरा को जारी रखने की भावना से एन डी ए में चयनित हए और आई आई एम को छोडकर एनडीए में शामिल हुए। एन डी ए में प्रशिक्षण के दौरान उनकी काबिलियत के आधार पर उनका भारतीय वायु सेना में बतौर पायलट चयनित किया गया।

परसराम राजौरा का निधन

हिंडौन सिटी। अखिल भारतीय खटीक समाज, हिंडौन के संरक्षक तथा अध्यक्ष परसराम राजौरा का शनिवार को निधन हो गया। उनकी अंतिम यात्रा बैंडबाजों के साथ चकडोल के रूप में निकाली गई। अंतिम यात्रा में बडी संख्या में लोग शामिल हुए और अंतिम विदाई दी। क्षेत्र के विभिन्न संगठनों ने गहरा दुख व्यक्त किया है। परसराम राजौरा वयोवृद्ध कांग्रेस नेता थे। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री स्व.इंदिरा गांधी के वक्त वर्ष 1980 में हिंडौन विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लडा था। हिंडौन नगर परिषद में प्रतिपक्ष नेता रहे धर्म सिंह राजौरा और छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कर्ण सिंह राजौरा के पिता परसराम राजौरा अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड गए हैं। वे कुछ दिनों से बीमार होने के कारण जयपुर में उपचार ले रहे थे। जयपुर में ही उपचार के दौरान शनिवार को सुबह उनका निधन हो गया। उनका पार्थिव देह दोपहर को हिंडौन पहुंचा तो बडी संख्या में लोग उनके आवास पर एकत्र हुए और अंतिम यात्रा में शामिल हुए। करौली रोड स्थित मोक्षधाम में अंतिम संस्कार किया गया, जहां हजारों लोगों ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी। तीये की बैठक सोमवार को शाम 4 से 6 बजे तक खटीक समाज धर्मशाला में आयोजित होगी। अखिल भारतीय खटीक समाज हिंडौन के पदाधिकारियों के साथ शहर के विभिन्न संगठनों ने समाजसेवी परसराम राजौरा के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है।

नई कार्यकारिणी गठित

भरतपुर (निस)। जिला अहीर महासभा समिति भरतपुर के जिलाध्यक्ष देवकीनंदन यादव के निर्देशानुसार निर्वाचन अधिकारियों की देखरेख में चार ब्लॉकों में चुनाव सम्पन्न हुए, जिनमें भरतपुर शहर अध्यक्ष महेन्द्र सिंह यादव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष शेरसिंह यादव, उपाध्यक्ष प्रवीण कुमारद यादव, महामंत्री सुरेश चंद यादव, कोषाध्यक्ष प्रताप सिंह यादव को बनाया गया। भरतपुर ग्रामीण अध्यक्ष प्रेमसिंह महचौली, वरिष्ठ उपाध्यक्ष दुर्गा प्रसाद यादव विसदा, उपाध्यक्ष लाल सिंह पीरनगर, महामंत्री दीपक यादव हिंडौला, कोषाध्यक्ष बीरबल यादव हिंडौला को बनाया गया। ब्लॉक डीग अध्यक्ष देवेन्द्र यादव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष देवेश कुमार यादव, उपाध्यक्ष अमित कुमार यादव, महामंत्री सचिन यादव, कोषाध्यक्ष भूपेश यादव को बनाया गया, ब्लॉक पहाडी अध्यक्ष चेतराम यादव इकलहरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुभाष यादव मातुकी, उपाध्यक्ष राहुल यादव कान्हौर, महामंत्री यादराम यादव चंदूपुरा, कोषाध्यक्ष जीतराम यादव पीपलखेडा को बनाया गया। सभी ब्लॉकों के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। सभी पदाधिकारियों को निर्वाचन अधिकारियों द्वारा पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। निर्वाचन अधिकारी के रूप में भरतपुर ठााामीण में पूरन सिंह पालका, रमेश चंद एवं शहर धर्मवीर यादव महरावर, मनोज यादव ककराा, ब्लॉक डीग में प्रकाश चंद यादव मैनेजर पीएनबी, जगदीश यादव जयश्री, ब्लॉक पहाडी में सरदार सिंह यादव, धारा सिंह यादव बेरू, अनिल कुमार यादव कांमा, हरवीर यादव अध्यापक द्वारा सकुशल सम्पन्न कराये गये। इस निर्वाचन की प्रक्रिया में जिले के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। जिलाध्यक्ष देवकीनंदन यादव द्वारा नव निर्वाचित ब्लॉक कार्यकारिणियों के पदाधिकारियों के लिये बधाई एवं शुभकामनाएँ दी गईं।

विधायक डॉ. गर्ग ने जनसुनवाई की

भरतपुर (निस)। पूर्व मंत्री, भरतपुर विधायक एवं राष्ट्रीय लोकदल के महामंत्री डॉ. सुभाष गर्ग रविवार को एक दिवसीय दौरे पर भरतपुर पहुंचे। जहां समर्थकों ने उनका गर्म जोशी के साथ स्वागत किया। डॉ. गर्ग ने दौरे के दौरान रणजीत नगर कार्यालय पर जनसुनवाई की और ठाामीण क्षेत्रों में पहुंचकर लोगों से मुलाकात कर उनके दुःख सुख में शामिल हुये। डॉ. गर्ग ने भरतपुर दौरे के दौरान भुसावर के महिला विद्यापीठ में आयोजित हुये सामाजिक कार्यक्रम में शिरकत की बाद में उन्होंने रणजीत नगर कार्यालय पर जन सुनवाई कर लोगों के अभाव अभियोग सुने। इस दौरान स्थानान्तरण चाहने वाले कर्मचारियों ने भी डॉ. गर्ग से मुलाकात की।

जल संरक्षण अभियान प्रगति की समीक्षा

> अभियान से प्रदेश में समृद्धि के द्वार खुलेंगे

भरतपुर (निस)। जल संसाधन मंत्री एवं जिला प्रभारी सुरेश सिंह रावत ने जिले में 'वंदे-गंगा जल संरक्षण जन अभियान' की प्रगति की रविवार को कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा कर अधिकारियों को संबोधित किया। जल संसाधन मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान जन अभियान के तहत शहरों एवं गांवों में सभी जलस्त्रोतों का संरक्षण कर वर्षाजल संरक्षण की पहल की है। इससे आने वाले समय में प्रदेश में समृद्धि के द्वार खुलेंगे, पर्यावरण में सुधार के साथ ही किसानों को सिचाई का पानी एवं आम नागरिकों व जीवजन्तुओं को पेयजल मुहैया होगा। उन्होंने कहा कि अभियान में जिन विभागों को जिम्मेदारी दी गई है वे सक्रियता से भागीदारी निभाते हुए आमजन को इस अभियान में अधिक से अधिक जोडें जिससे अभियान की सार्थकता सिद्ध हो सके। उन्होंने कहा कि वर्षाजल का संरक्षण होगा तो निश्चित रूप से क्षेत्र में खुशहाली आयेगी, हरियालो राजस्थान के तहत लगाये जाने वाले पौधों का पानी मिलने से हरित प्रदेश का सपना साकार होगा। जिला प्रभारी मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर भरतपुर शहर में सभी ऐतिहासिक जलकुण्डों का जीर्णोद्धार कार्य कराया गया है इससे जल संरक्षण की परम्परा जीवित होने के साथ शहर में जल भराव की समस्या से निजात मिलगी। उन्होंने जलकुण्डों पर किये गये कार्य की सराहना करते हुए कहा कि इसमें अब स्थानीय नागरिकों की भागीदारी भी बढायें जिससे पर्यटन विकास की दृष्टि से भी इनका उपयोग किया जा सके। उन्होंने जल कुण्डों के आसपास पौधारोपण का प्लान भी तैयार कर उनकी देखरेख की व्यवस्था भी सुनिश्चत करने के निर्देश दिये। जिला प्रभारी मंत्री ने कहा कि 'वंदे-गंगा जल संरक्षण जन अभियान' की उपयोगिता को साकार करने के लिए सभी अधिकारियों को टीम भावना से कार्य करते हुए गांव-गांव तक जागरूकता लानी होगी। प्रत्येक गांव में अभियान के तहत गतिविधियां आयोजित कर हमारी जल संरक्षण की परम्परा को जीवित करते हुए आमजन को भागीदार बनायें।

यूडीएच मंत्री के नेतृत्व में शाही कुण्ड पर किया दीपदान

करौली, (निसं)। करौली के शाही कुण्ड की पवित्र छटा के बीच दीपों की रोशनी से सजी संध्या में स्थानीय नागरिकों ने जल संरक्षण,स्वच्छता और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण का लिया संकल्प। प्रदेश के नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग के राज्यमंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा के मुख्य आतिथ्य में रविवार को करौली के शाही कुण्ड पर दीपदान कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर राज्य मंत्री द्वारा जलपूजन किया गया और शाही कुण्ड की चार दीवारी एवं तीन दरवाजा चार दीवारी का विधिवत शिलान्यास किया गया। शाही कुण्ड की पवित्र छटा के बीच दीपों की रोशनी से सजी संध्या में स्थानीय नागरिकों ने जल संरक्षण,स्वच्छता और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण का संकल्प लिया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्य यूडीएच मंत्री ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता केवल बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना नहीं बल्कि राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजो कर अगली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुंचाना भी है। दीपदान जैसा आयोजन सामाजिक चेतना और जनभागीदारी का जीवंत उदाहरण है। करौली ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध नगर है। दीपदान कार्यक्रम से न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं को प्रबल किया जा रहा है बल्कि जन जागरूकता का भी संदेश दिया रहा है। राज्य सरकार पारंपरिक जल स्त्रोतों के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए स्थानीय सहभागिता आधारित योजनाएं संचालित कर रही है जिससे जल आत्मनिर्भरता और स्वच्छता का सपना साकार हो सके। यह आयोजन न केवल प्रशासन और समाज के बीच सहयोग के उदाहरण के रूप में सामने आया है बल्कि यहाँ से यह संदेश भी दिया गया है कि पारंपरिक जल स्त्रोतों और विरासत स्थलों का संरक्षण सामूहिक जिम्मेदारी है और इसे जन सहभागिता से ही सार्थक रूप दिया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक जलपूजन से हुई जिसके माध्यम से शाही कुण्ड की पवित्रता और उसके ऐतिहासिक महत्व को श्रद्धापूर्वक नमन किया गया। संध्या होते ही शाही कुण्ड परिसर दीपों की रोशनी से जगमगा उठा। दीपदान की इस मनोहारी छटा ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया और सांस्कृतिक गौरव का एहसास कराया।इस आयोजन में बडी संख्या में स्थानीय नागरिक, जनप्रतिनिधि, अधिकारी और सांस्कृतिक कार्यकर्ता शामिल हुए।सभी ने जल संरक्षण, स्वच्छता और ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया। इस दौरान सपोटरा के विधायक हंसराज मीना,जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना,मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवचरण मीना,अतिरिक्त जिला कलक्टर हेमराज परिडवाल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गुमनाराम, सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय के सहायक निदेशक धर्मेन्द्र मीना, डॉ नगर परिषद सभापति राजरानी शर्मा,समाज सेवी बबलू शुक्ला सहित अन्य जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी, कर्मचारी, जन प्रतिनिधि सहित बडी संख्या आमजन उपस्थित रहे।

भारत विकास परिषद शाखा गंगापुर सिटी की प्रथम कार्यकारिणी बैठक संपन्न

> वर्षभर आयोजित कार्यक्रमो की बनाई रूपरेखा

गंगापुर सिटी, । भारत विकास परिषद शाखा गंगापुर सिटी की प्रथम कार्यकारिणी बैठक अध्यक्ष राजेंद्र कुमार खारवाल की अध्यक्षता में रुक्मणी मैरिज गार्डन में हुई। बैठक का शुभारंभ मां भारती और स्वामी विवेकानंद के चित्रपट पर माला और तिलक लगाकर वंदे मातरम गायन के साथ हुआ।

शाखा सचिव रामदयाल मीणा ने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य साल भर में होने वाले कार्यों का वार्षिक कैलेंडर बनाकर कार्यों को संपादन करने पर चर्चा करना और सभी गतिविधि संयोजक और प्रकल्प प्रभारियो को अपने अपने प्रकल्पों की जानकारी दी गई। इसके अंतर्गत दिनांक 16 जून से 21 जून 2०25 तक ग्रीष्मकालीन महिला अभिरुचि शिविर का आयोजन में महिला डान्स, मेहंदी, ढोलक, ब्युटीशियन और योग का प्रशिक्षण दिया जाएगा, यह शिविर महिलाओं द्वारा संचालित किया जायेगा जो कि मित्तल सीनियर सेकेंडरी स्कूल पोस्ट आफिस के सामने मिर्जापुर में संपन्न होगा। 27 जून को डॉक्टर सूरज प्रकाश की जयंती के अवसर पर नंगे बाबा गौशाला कालेज के पास में गायों को हरा चारा और गुड खिलाकर जयंती मनाई जाएगी और शहर के विभिन्न स्थानों पर निराश्रित गौवंश को भी हरा चारा वितरण किया जायेगा। सचिव ने बताया कि भारत विकास परिषद के स्थापना दिवस 1० जुलाई को खाटूश्याम मंदिर परिसर में शाम को श्रद्धालुओं को मीठा शरबत पिलाकर स्थापना दिवस मनाया जाएगा। सभी कार्यक्रमों में परिषद के सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है। एनिमिया उन्मूलन के अन्तर्गत जांच शिविर, परिवार वन विहार कार्यक्रम, गुरु वंदन एवं छात्र अभिनंदन कार्यक्रम को ज्यादा से ज्यादा विद्यालयों में आयोजित करना, भारत को जानो प्रतियोगिता को अधिक से अधिक विद्यालयों में प्रचार प्रसार कर आयोजित करवाना, राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता करवाना, संस्कृति सप्ताह, राष्ट्रीय पर्व, महापुरुष जयंती, रक्तदान शिविर नेत्र चिकित्सा कैंप, सामूहिक सरल विवाह, निर्धन मेधावी छात्रों को गणवेश/बैग वितरण करना, स्थाई प्रकल्प मोक्षधाम संचालित हीरालाल का रखरखाव और सही संचालन करना, स्थायी जल मंदिर के रखरखाव, हायर सेकंडरी स्कूल पर वाटर कूलर लगाना और प्रांत से प्राप्त सम्बंधित प्रकल्प प्रभारियो को पुस्तक भी वितरण की गई। कोषाध्यक्ष अनिल कुमार वैष्णव ने रेलवे स्टेशन पर लगाई गई प्याऊ का आय व्यय का हिसाब पेश किया, गत माह हुए दायित्व ग्रहण समारोह के संयोजक रमेश चंद गुप्ता पट्टी वाले ने कार्यक्रम का आय-व्यय का ब्यौरा दिया। राष्ट्रगान के साथ बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संरक्षक अशोक कुमार बंसल,ममता डांस,पूजा गुप्ता सहित 25 कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित हुए। राजेंद्र खारवाल शाखा अध्यक्ष ने बताया कि इस वर्ष कक्षा 1०और 12वीं में 9०त से अधिक अंक लाने वाले,और नीट , इंजीनियरिंग में परिषद के सदस्यों के बच्चों का सलेक्शन होने पर सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है।

दीपदान महोत्सव में उमड़े श्रद्धालु

> भक्तों ने हनुमान जी की झांकी के दर्शन भी किए

भुसावर भरतपुर (निस)। भुसावर कस्बा में हिंडौन सड़क मार्ग स्थित प्राचीन कोठी वाले हनुमान जी मंदिर परिसर में शनिवार को धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जहां भक्तों ने हनुमान जी की झांकी के दर्शन कर दीपदान करते हुए मनोकामनाएं मांगी गई तो वही दूसरी ओर स्थानीय एवं दूर दराज के क्षेत्र से आए गायक कलाकारों ने संगीतमय सुंदरकांड का पाठ करते हुए बाबा को रिझाया और भजनों के माध्यम से समाज सुधार के अनेक संदेश दिए गए। कोठी वाले हनुमान जी मंदिर के सेवक महेश चन्द शर्मा जती ने बताया कि प्राचीन कोठी वाले हनुमान जी मंदिर के प्रांगण में शनिवार को धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जहां सर्वप्रथम हनुमान जी की प्रतिमा को पोशाक का चोला चढाते हुए मनमोहक एवं आकर्षक श्रंगार किया गया। वहीं देर सायंकाल दीपदान महोत्सव में भक्तों ने दीपदान करते हुए अपनी मनोकामनाएं मांगी गई वहीं दूसरी ओर हलेना से पधारे घनश्याम महाराज, नयाबास भुसावर के जगदीश सैनी एवं म्यूजिकल ठ्रुप की और से संगीतमय सुंदरकांड पाठ का शुभारंभ गणेश वंदना के साथ किया गया। जहां भगवान राम के भजन एवं हनुमान जी के लांगुरिया सुना कर उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्र मुग्ध कर नृत्य करने पर मजबूर कर दिया। दीपदान महोत्सव एवं सुंदरकांड पाठ का समापन महा आरती के बाद प्रसादी वितरण कार्यक्रम के साथ किया गया। इस पावन अवसर पर सभी भक्तों का सराहनीय सहयोग रहा जिन्होंने कोठी वाले हनुमान जी मंदिर के प्रांगण में आयोजित हुए कार्यक्रमों में बढ-चढकर हिस्सा लिया और हनुमान जी की समक्ष अपनी हाजिरी लगाकर मनोकामनाएं मांगी।

6 विद्यार्थियों का चयन

गंगापुर सिटी। शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिवर्ष नये आयाम स्थापित करने वाले एवं प्राइड ऑफ राजस्थान अवार्ड से सम्मानित कुंडू इंटरनेशनल ऐकेडमी के 6 विद्यार्थियों का नीट परीक्षा में चयन हुआ। विद्यालय के निदेशक डॉ हेमंत शर्मा ने बताया कि नीट परीक्षा-2०25 में ऐकेडमी के टारगेट बैच में अध्ययनरत छात्रा हर्षिता अग्रवाल पुत्री विष्णु अग्रवाल ने 572 अंक के साथ 438 कैटेगरी रैंक प्राप्त की है। ऐकेडमी के एच ओ डी भूपेन्द्र केवट ने बताया कि इस वर्ष ऐकेडमी में 13 विद्यार्थियों ने नीट परीक्षा दी , इनमें से 6 विद्यार्थियों ने क्वालीफाई कर ऐकेडमी का एवं अपने घर वालों का नाम रोशन किया। साथ ही बताया कि सफल विद्यार्थियों में हर्षिता अग्रवाल पुत्री विष्णु अग्रवाल, मनीष वर्मा पुत्र वेद प्रकाश, पलक शुक्ला पुत्री मनोज कुमार शर्मा , प्रिया प्रजापत पुत्री प्रीतम कुमार प्रजापत, राहुल बैरवा पुत्र बलराज बैरवा, जितेंद्र कुमार पुत्र गोपाल लाल रेगर ने सफलता प्राप्त की है ।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान शुरु

करौली, (निसं.) प्रदेश के नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग के राज्यमंत्री स्वतन्त्र प्रभार झाबर सिंह खर्रा ने रविवार को टाऊन हॉल में धरती आबा जनजातीय ठााम उत्कर्ष अभियान के जिला स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए यूडीएच मंत्री खर्रा ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों में समठा विकास को गति देना, बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित करना एवं जनजातीय समाज को मुख्यधारा से जोडना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार अंत्योदय के संकल्प को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। धरती आबा अभियान जनजातीय समुदायों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा। मंत्री ने बताया कि अभियान के दौरान जन जातीय वर्ग के उत्थान के लिए, कार्य किये जाएंगे। उक्त वर्ग का स्वतंत्रता आन्दोलन एवं जल,जंगल,जमीन को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है इन्हें सरकार की विभिन्न योजनाओं से विकास की मुख्य धारा में जोडना है। कार्यक्रम के दौरान गंगा जल संरक्षण जन अभियान के दौरान पेंटिंग एवं निबन्ध प्रतियोगिता में अव्वल आने वाले छात्र छात्राओं का सम्मानित किया गया इसके साथ ही नगर परिषद के द्वारा पट्टो एवं पोषण किटों का वितरण किया गया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बताया कि धरती आबा जनजातीय उत्कर्ष ठााम अभियान के तहत 15 से 30 जून तक जिले में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। जिनमें जिले के चयनित 200 ठाामों की ठााम पंचायतों में 16 जून से शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अभियान के दौरान इन शिविरों में आमजन को अधिक से अधिक लाभान्वित किया किया जाएगा।

उन्होंने इस संबंध में उप वन संरक्षक,पीएचईडी,विद्युत विभाग, सीएमएचओ, रसद विभाग,महिला एवं बाल विकास विभाग, आयुर्वेद विभाग,कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, मत्स्य विभाग, बैंकिंग, उद्योग विभाग,समाज कल्याण विभाग सहित अन्य विभागों को कार्य योजना बनाकर कार्य करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिये। कार्यक्रम के दौरान सपोटरा विधायक हंसराज मीणा ने कहा कि अनुसूचित जनजातियों के विकास के क्षेत्र में प्रदेश की सरकार द्वारा अभूतपूर्व कार्य किए जा रहे हैं।धरती आबा जनजातीय ठााम उत्कर्ष अभियान के तहत लगाए जाने वाले शिविरों में अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों के लोगों को विभागों की विभिन्न योजनाओं में पात्रता के अनुसार लाभान्वित किया जाएगा। जिले में अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों के पात्रजन इन योजनाओं में अधिक से अधिक लाभ लेकर इस अभियान को जिले में सफल बनायें।इस दौरान जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना,अतिरिक्त जिला कलक्टर हेमराज परिडवाल,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गुमनाराम, उप वन संरक्षक सुमित बंसल, सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय के सहायक निदेशक धर्मेन्द्र मीना, डॉ नगर परिषद सभापति राजरानी शर्मा सहित अन्य जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी, कर्मचारी, जन प्रतिनिधि सहित बडी संख्या आमजन उपस्थित रहे।

वर्षो बाद शुरू होगी क्रिकेट प्रतियोगिता

> विधायक ने प्रतियोगिता के आयोजन को लेकर ली बैठक

रूपवास। कस्बे के स्टेशन रोड स्थित स्वतंत्रता सेनानी रामचरन गोयल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान पर एक बार फिर क्रिकेट का खेल अपने रोमांच पर होगा। वर्षो से बंद पडी शीतकालिन अंतर्राज्यीय क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजन को क्षेत्रीय विधायक डॉ ऋतु बनावत ने हरी झंडी दे दी है। प्रतियोगिता के आयोजन को लेकर विधायक डॉ बनावत ने स्टेशन रोड स्थित चन्दूशाही धर्मशाला में युवाओं,क्रिकेट एवं खेल प्रेमियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक के दौरान आगामी शीतकालीन सत्र में अंतर्राजीय स्तर की क्रिकेट प्रतियोगिता करवाने को लेकर निर्णय लिया गया। बैठक में कमेटी का गठन कर खेल के आयोजन को मूर्त रूप देने के लिए कई निर्णय लिए गए। जिनमें ग्राउंड में लेबलिंग करवाना,पिच निर्माण आदि कार्य करवाने को लेकर संरक्षक कमेटी का गठन किया गया। इस संरक्षक कमेटी में गोविंद सिंह परमार,हरिशंकर शर्मा,हरिओम बघेल,रविंद्र बंसल,वीर विक्रम सिंह परमार,राजेश पाराशर,हरवंश कौशल,मुकेश शर्मा,धीरज शुक्ला,राकेश भाटा को रखा गया। वहीं वर्किंग कमेटी में योगेश पार्षद कृष्ण गोपाल बंटी, प्रेमप्रकाश पाराशर, भूपेश शर्मा, प्रवेश शर्मा ,विक्की कटारा, विशाल कौशल,प्रशांत बंसल, कृष्णा एडवोकेट, दुर्गेश पाठक, प्रमोद शर्मा,पुरुषोत्तम पार्षद,सोनू उपाध्याय, मनीष सिंघल आदि को रखा गया। इस प्रतियोगिता में विजेता टीम को एक लाख नकद व शील्ड तथा उपविजेता टीम को 51 हजार रुपए नकद व शील्ड देने का फैसला किया गया।

दौराई रेलवे स्टेशन के पास अंडरपास में भरे पानी में डूबने से दो मासूम बच्चों की मौत

दोनों बच्चे एक ही परिवार के रिश्तेदार थे और गर्मी की छुट्टियों में अपनी नानी के घर आए हुये थे

अजमेर, (कासं)। रामगंज थाना क्षेत्र के ब्यावर रोड स्थित दौराई गांव में रविवार सुबह दौराई रेलवे स्टेशन के पास बने अंडरपास में बरसात का पानी भर जाने से दो मासूम बच्चों की डूबने से मौत हो गई। हादसे ने दो परिवारों की खुशियां छीन ली। पुलिस ने मासूमों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया और शव परिजन के सुपुर्द कर दिए।

रामगंज थाना क्षेत्र के ब्यावर रोड स्थित दौराई रेलवे स्टेशन के पास बने अंडरपास में रविवार सुबह करीब नौ बजे दौराई गांव के पांच बच्चे अंडरपास में जमा हुए बरसाती पानी में नहाने के लिए गए थे। इन बच्चों में प्रिंस उर्फ मित्रेश और रूद्र भी शामिल थे, जो अपनी नानी के घर छुट्टियां मनाने आए हुए थे। नहाते समय अचानक प्रिंस और रूद्र गहरे पानी में चले गए और वहां उगी झाड़ियों में फंस गए। बाहर बैठे तीन अन्य बच्चे घबरा गए और तुरंत शोर मचाकर आसपास के लोगों और परिजनों को सूचना दी।

अंडरपास में भरा पानी, जहां बच्चों की डूबने से मौत हो गई। (इनसेट में मृत बच्चों के फाइल फोटो)

घटना की खबर मिलते ही ग्रामीणों की भीड़ मौके पर जमा हो गई। लोगों ने पानी में डूबे बच्चों को निकालने का प्रयास किया, लेकिन तब तक दोनों की सांसे थम चुकी थी। पानी से बाहर निकालकर दोनों बच्चों को जवाहर लाल नेहरू अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजन के सुपुर्द कर दिए।

मृतक बच्चों के परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। दोनों बच्चे एक ही

- **नहाते समय अचानक दोनों गहरे पानी में चले गए और झाड़ियों में फंस गए**

परिवार के रिश्तेदार थे और गर्मी की छुट्टियों में अपनी नानी के घर आए थे। ग्रामीणों का कहना है कि जहां हादसा हुआ, वह जगह पहले गांव के लोगों के लिए आम रास्ता थी, लेकिन डीएफसीसी कॉरिडोर के निर्माण के बाद वहां अंडरपास बना दिया गया, जिसमें हर साल बरसात का पानी भर जाता है। पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था न होने के कारण यह जगह हादसों का कारण बनती जा रही है। रामगंज थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच में जुट गई है। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि अंडरपास में जल भराव की समस्या का स्थायी समाधान किया जाए ताकि भविष्य में ऐसी दर्दनाक घटनाएं दोबारा न हो।

रेजिडेंट डॉक्टर की जयपुर के एसएमएस अस्पताल में मौत

- **जोधपुर के मथुरादास माथुर अस्पताल के रेजिडेंट डॉक्टर ने शुक्रवार को जहर खा लिया था**
- **रेजिडेंट डॉक्टर राकेश विश्नोई ने वायरल वीडियो में फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी डॉ. राजकुमार राठौड़ पर गंभीर आरोप लगाए थे**

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर मथुरादास माथुर अस्पताल के रेजिडेंट डॉक्टर की जयपुर के एसएमएस अस्पताल में मौत हो गई। डॉक्टर ने शुक्रवार (13 जून) को जहर खा लिया था। गंभीर हालत में जयपुर रेफर किया था, जहां शनिवार रात उनकी मौत हो गई। डॉक्टर ने मौत से पहले एक वीडियो में कहा था कि फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी थीसिस को लेकर परेशान कर रहे हैं, जिसके चलते मैंने ये कदम उठाया है।

मथुरादास माथुर कॉलेज के फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी राजकुमार राठौड़ ने कहा कि रेजिडेंट डॉक्टर पहले से मानसिक रूप से परेशान थे और उनका इलाज चल रहा था। मामले की जांच की जा रही है।

जोधपुर के शास्त्रीनगर थानाधिकारी जुल्फिकार अली ने बताया कि मथुरादास माथुर अस्पताल के फैमिली पीजी हॉस्टल में रहने वाले डॉ. राकेश विश्नोई ने 13 जून को जहर की तीन गोलियां खा ली थी। गंभीर हालत में पहले उन्हें मथुरादास माथुर अस्पताल में भर्ती कराया गया, फिर जयपुर के एसएमएस अस्पताल में रेफर किया गया, जहां 14 जून की रात उनकी मौत हो गई।

डॉ. राकेश विश्नोई ने वायरल वीडियो में फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी डॉ. राजकुमार राठौड़ पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि थीसिस सबमिशन को लेकर एचओडी उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहे थे, जिसके कारण उन्होंने यह कदम उठाया।

गेहूं का कट्टा चोरी होने पर प्रधान ने दो भाइयों को पीटा

टोंक, (निसं)। निवाई थाना क्षेत्र में स्थित प्रधान रामावतार लांगड़ी के फार्म हाउस से गेहूं का कट्टा चोरी करने के आरोप में दो चचेरे भाइयों को बुरी तरह पीटने का मामला सामने आया है। मामले में प्रधान ने चोरी का आरोप लगाते हुए दोनों को प्लास्टिक के पाइप व लातें मारकर पीटा। घटना का वीडियो भी वायरल हुआ है, जिसमें प्रधान उनकी पेट पर लात रखकर उसे धमकाते हुए दिखाई दे रहा है। जिस पर पीड़ित ने निवाई थाने में शुक्रवार की देर रात मामला दर्ज करवाया।

- **घटना का वीडियो वायरल, पीड़ित ने निवाई थाने में मामला दर्ज करवाया**

थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा ने बताया कि मामले की जांच शुरू कर दी है, पीड़ितों का मेडिकल मुआयना करवाया गया है, घटना करीब 15 दिन पुरानी है। घटना में झिलाई रोड गोशाला के पास रहने वाला रमेश पुत्र भंवरलाल खारोल (37) जो करीब एक साल से निवाई प्रधान रामावतार लांगड़ी के खेत पर की आदोली (बंटाई में खेती) का कार्य

वायरल वीडियो में प्रधान पीड़ितों के पेट पर लात रखकर धमकाते हुए दिखाई दे रहा है।

करता था, जो 15 दिन पहले फार्म हाउस पर अपने मामा के लड़के राजू पुत्र रामदेव निवासी ग्राम आकोड़िया थाना घाड के साथ गया था, जो वहां से एक गेहूं का कट्टा अपना बताते हुए पैदल ही सिर पर रखकर घर ला रहा था। इसी बीच रास्ते में प्रधान आ गया और उसने दोनों को कट्टा ले जाते हुए देख लिया। वह दोनों को अपने फॉर्म हाउस पर ले गया और प्लास्टिक के पाइप से दोनों चचेरे भाइयों की बेरहमी से पिटाई की, इसके बाद दोनों को भगा दिया। घटना का वीडियो शुक्रवार को सामने आया। घटना को गम्भीरता से लेते हुए थाना प्रभारी रामजीलाल बैरवा ने निवाई प्रधान रामावतार लांगड़ी के खिलाफ मारपीट करने के मामले में प्रकरण दर्ज अनुसंधान जारी है।

इस मामले में निवाई प्रधान रामावतार लांगड़ी का कहना है कि ये लोग मेरे फार्म हाउस से गेहूं का कट्टा चुराकर ले जा रहे थे फिर उन्हें रास्ते से वापस फार्म हाउस ले गया और थोड़ा डांटा था, मारपीट जैसी बड़ी बात नहीं है।

सड़क हादसे में किशोर की मौत

उदयपुर, (निसं)। गोगुन्दा हाइवे पर सड़क पार करते समय डंपर ने किशोर को चपेट में ले लिया, जिससे उसकी मौत हो गई।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गोगुन्दा थाना क्षैत्र में हाइवे पर डंपर ने सड़क पार करते कुण्डाल कठार निवासी कालूलाल (15) पुत्र नारू गमेती को चपेट में ले लिया। हादसे में गंभीर घायल होने पर उसे उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया जहां उसकी मौत हो गई। कालू सात-आठ दिन पूर्व अपने मामा गोगुन्दा निवासी भेरूलाल के यहां मैहमान आया था एवं रविवार दोपहर में वह मामा के साथ बाजार जाने के लिए सड़क पार कर रहा था। इस दौरान हाइवे पेट्रोल पंप पर डीजल भरवाने के बाद डंपर आ रहा था, जिसने आगे जा रहे कालू को चपेट में ले लिया था।

लोक परिवहन बस पलटी , 20 से अधिक यात्री घायल

नोखा, (निसं)। नोखा से नागौर की ओर जा रही एक लोक परिवहन की बस शनिवार शाम को दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हादसा चरकड़ा गांव के पास भट्टड़ केबल के आगे हुआ, जहां बस अचानक बेकाबू होकर पलट गई। इस दुर्घटना में बस में सवार 20 से अधिक यात्री घायल हो गए। हालांकि, किसी की जान को फिलहाल खतरे में नहीं बताया गया है।

बताया जा रहा है कि बस बीकानेर से नोखा होते हुए जोधपुर जा रही थी। हादसे की जानकारी मिलते ही आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। घायलों को एम्बुलेंस और निजी वाहनों की मदद से नोखा के जिला अस्पताल पहुंचाया गया। अस्पताल

- **बस बीकानेर से नोखा होते हुए जोधपुर जा रही थी, चरकड़ा गांव के पास भट्टड़ केबल के आगे हुआ हादसा**
- **गंभीर घायल 8 यात्रियों को बीकानेर रेफर किया, 12 यात्रियों को छुट्टी दी**

परिसर में चीख-पुकार मच गई। हादसे में कई महिलाएं और बच्चे लहूलुहान हो गए। घटना की सूचना मिलते ही थानाधिकारी अमित स्वामी पुलिस जाब्ते के साथ मौके पर पहुंचे। समाजसेवी श्याम भट्टड़ भी घटनास्थल पर पहुंचे और राहत कार्य में जुट गए। मोटर मार्केट क्षेत्र के मांगीलाल बिश्नोई समेत कई स्थानीय लोगों ने अपने निजी वाहनों से घायलों को अस्पताल पहुंचाया। नर्सिंग ऑफिसर देवकिशन बिश्नोई के नेतृत्व में चिकित्सा टीम ने घायलों का तुरंत उपचार शुरू किया। गंभीर रूप से घायल 8 यात्रियों को बीकानेर रेफर किया गया है, जबकि 12 यात्रियों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। राहत कार्य में मांगीलाल, लीलाधर और मगनाराम केडली ने अहम भूमिका निभाई।

युवक ने आत्महत्या की

उदयपुर, (निसं)। शहर के प्रतापनगर थाना क्षेत्र में स्थित रेलवे ट्रेक पर ट्रेन के आगे कूदकर युवक ने आत्महत्या कर ली।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार का प्रताप कॉलोनी कालका माता रोड़ निवासी नारायणलाल माली (51) पुत्र मगनलाल माली ने शहर के प्रतापनगर थाना क्षेत्र कॉटन मिल रेलवे ट्रेक पर उदयपुर से जयपुर जाने वाली ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली। जीआरपी की सूचना पर प्रतापनगर थाना से हेड कांस्टेबल नरेन्द्र कुमार ने मौके पर पहुंच कर मृतक को एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवा परिजनों को सूचना दी है, जिनके आने पर सोमवार को पोस्टमार्टम होगा। आत्महत्या करने के कारणों का पता नहीं चल पाया।

लव मैरिज करना युवक को महंगा पड़ा, ससुराल वालों ने हत्या की

नागौर के रातंगा गांव निवासी सहदेव राम का शव खेत में पड़ा मिला, शरीर पर चोट के गंभीर निशान मिले

अजमेर, (कासं)। अजमेर संभाग के नागौर जिले में युवक को लव मैरिज की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। ससुराल वालों की नाराजगी, समाज की मान-मर्यादा और पारिवारिक रंजिश ने मिलकर ऑनर किलिंग की वरदात अंजाम दे डाली। नागौर के रातंगा गांव निवासी सहदेव राम का शव शनिवार को खेत में पड़ा मिला, उसके शरीर पर गंभीर चोट के निशान मिले, उसकी पीट-पीटकर हत्या की गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अस्पताल की मोर्चरी में सुरक्षित रखवाया और एफएसएल टीम ने मौके से साक्ष्य उठाए। वहीं पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

- **सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया और एफएसएल टीम ने मौके से साक्ष्य उठाए**

परीक्षा देने अजमेर आया था :- मामला शुक्रवार को शुरू हुआ, जब सहदेव नर्सिंग भर्ती परीक्षा देने अजमेर आया था। उसके साथ उसका दोस्त हरेन्द्र भी था। परीक्षा के बाद दोनों घर लौटने के लिए अजमेर रोडवेज बस स्टैंड पर पहुंचे। इसी दौरान सहदेव की बड़ी साली ललिता और साढ़ू वहां पहुंचे और बातचीत के बहाने उसे बुलाया। हरेन्द्र के अनुसार सहदेव को किसी अनहोनी का अंदेशा था, इसी वजह से उसने दोस्त को वहां से जाने को कहा। सहदेव बस स्टैंड से बाहर निकला और फिर वापस नहीं लौटा।

पिता ने पुलिस में शिकायत दी थी, जान का खतरा बताया था :- सहदेव के पिता रामदेव ने शनिवार को अजमेर सिविल लाइन थाने में अपहरण की शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने शिकायत में ससुराल पक्ष से बेटे की जान को खतरा बताया था। पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज कर जांच शुरू की। उसी शाम नागौर के जायल क्षेत्र के तेजासर गांव के खेत में एक युवक का खून से लथपथ शव मिला। पुलिस ने जब फोटो दिखाया तो रामदेव ने अपने बेटे सहदेव के रूप में शव की पहचान की।

2024 में लव मैरिज की थी :- पुलिस की जांच में खुलासा हुआ कि सहदेव ने नवंबर 2024 में करिश्मा नामक युवती से कोर्ट मैरिज की थी, जो पहले से ही शादीशुदा थी। इसी शादी के चलते ससुराल पक्ष नाराज था। शादी के बाद सहदेव ने पुलिस सुरक्षा की मांग भी की थी, लेकिन पुलिस ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। फिलहाल पुलिस ने चार रिश्तेदारों के खिलाफ अपहरण और हत्या का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से स्पष्ट होगा कि हत्या किस तरह से की गई। मामले में नागौर पुलिस और एफएसएल टीम ने घटनास्थल की बारीकी से जांच की है।

10 वर्ष से फरार 15 हजार का इनामी आरोपी गिरफ्तार

सादुलपुर, (निसं)। हरियाणा पुलिस के साथ मारपीट करने, दस वर्ष से फरार जिले का टॉप अपराधी और 15 हजार रुपए का इनामी फरार आरोपी को एजीटीएफ पुलिस चूरू ने शनिवार को गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार गिरफ्तार आरोपी पर सादुलपुर, सिद्धमुख, बहल दादरी, परबतसर, नागौर शाहपुरा जयपुर ग्रामीण क्षेत्र में 13 मामले दर्ज है। जिला पुलिस अधीक्षक चूरू की ओर से आरोपी पर दस हजार एवं पुलिस अधीक्षक जयपुर ग्रामीण की ओर से आरोपी पर पांच हजार का इनाम सहित 15 हजार का इनाम घोषित था।

राजगढ़ थाना अधिकारी राजेश कुमार सिहाग ने बताया कि स्थानीय पुलिस के उच्च अधिकारियों के सुपरविजन में तथा जिला पुलिस अधीक्षक चूरू की ओर से चलाए गए अपराधियों को पकड़ो अभियान अंतर्गत एजीटीएफ पुलिस टीम ने कार्रवाई की है। उन्होंने बताया कि पंद्रह हजार का इनामी फरार आरोपी स्थाई वारंटी व जिला चूरू के टॉप 10 अपराधियों में शामिल सुनील कुमार पुत्र ओमप्रकाश जाट निवासी ढाणी श्योपुरा पुलिस थाना राजगढ़ जिला

एजीटीएफ टीम चूरू ने 15 हजार के इनामी आरोपी सुनील कुमार को गिरफ्तार किया।

चूरू को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया वर्ष 2009 में हरियाणा के दादरी सदर क्षेत्र में पुलिस कार्रवाई के दौरान आरोपी व उसके परिजनों द्वारा पुलिस पर हमला किया गया था तथा आरोपी पर राजकार्य में बाधा सहित अनेक धाराओं में मामला दर्ज हुआ था।

थाना अधिकारी राजेश कुमार सिहाग ने बताया आरोपी गिरफ्तारी से बचने के लिए गत 10 वर्षों से लगातार फरार रहकर और गंगानगर क्षेत्र में पहचान छुपाकर खेती के कार्य में लगा हुआ था। साथ ही सिद्धमुख थाना अंतर्गत भी स्थाई वारंटी घोषित था। उन्होंने बताया कि तकनीकी और खूफिया सूचना के आधार पर एजीटीएफ चूरू की टीम ने कार्यवाही करते हुए आरोपी की स्टीक लोकेशन ट्रेस कर गिरफ्तार किया।

जमीन विवाद में भतीजे ने चाचा की हत्या की

पाटन थाना पुलिस ने 24 घंटे में आरोपियों को गिरफ्तार किया

पाटन, (निसं)। कस्बे के समीपवर्ती नहर के पास कुड़ी की ढाणी में पारिवारिक जमीन विवाद ने हिंसक रूप धारण कर लिया, जब एक भतीजे ने अपने साथियों के साथ मिलकर चाचा की बेरहमी से हत्या कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, लंबे समय से चली आ रही जमीन की रंजिश ने हिंसक मोड़ ले लिया। आरोपी भतीजा अपने साथ दो-चार बाहरी लोगों को लेकर मौके पर पहुंचा और चाचा अशोक पुत्र मालीराम एवं परिवार के अन्य सदस्यों पर हमला कर दिया। इस हमले में अशोक के साथ मुकेश पुत्र मालीराम एवं मुकेश की पत्नी ज्योति गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही पाटन पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और घायलों को पाटन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद तीनों घायलों को गंभीर अवस्था में जयपुर रैफर किया गया। जयपुर के पास बराला अस्पताल में इलाज के दौरान अशोक ने दम तोड़ दिया। पाटन

- **आरोपी भतीजा अपने साथ दो-चार बाहरी लोगों को लेकर मौके पर पहुंचा और चाचा एवं परिवार के अन्य सदस्यों पर हमला कर दिया, घायलों को पाटन अस्पताल पहुंचाया गया**

थानाधिकारी विक्रम सिंह ने तत्परता दिखाते हुए मात्र 24 घंटे के भीतर सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। मृतक अशोक का पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड से करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया तथा मामले की जांच शुरू कर दी है तथा आरोपियों के खिलाफ सख्त धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। वहीं ग्रामीणों ने आपसी विवादों को बातचीत से सुलझाने की अपील की है।

अवैध खनन मामले में चार खनन माफिया गिरफ्तार, जेसीबी, दो डंपर और ट्रैक्टर जब्त

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के मांडल थाना क्षेत्र के मेजा बांध पेटे में अवैध बजरी खनन पर शनिवार रात को पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो पोकलेन, एक जेसीबी, दो डंपर और एक ट्रैक्टर जब्त कर चार खनन माफिया को गिरफ्तार किया।

पुलिस उपाधीक्षक मेघा गोयल ने बताया कि समेलिया गांव स्थित जामाजी देवस्थान के पास मेजा बांध के पेटे में लंबे समय से अवैध बजरी खनन की सूचनायें मिल रही थी। इस पर मांडल डिप्टी मेगा गोयल के नेतृत्व में मांडल, बागौर और पुर थाने के जाब्ते के साथ ही जिला विशेष टीम के पुलिसकर्मियों ने मेजा बांध में दबिश दी। बताया गया कि पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो 50 से 60 ट्रैक्टर, डंपर बजरी के अवैध खनन में जुटे हुए थे। पुलिस टीमों को देखकर सभी भागने में सफल हो गए। इस कारण कार्रवाई की पूरी सफलता

मेजा बांध पेटे में अवैध बजरी खनन पर पुलिस ने कार्रवाई की।

नहीं मिल पाई, लेकिन टीम में बड़ी मात्रा में खनन संसाधनों को जब्त किया। फिलहाल जब्त किए के वाहन को मांडल थाना परिसर लाया गया। इस दौरान पुलिस ने मौके से बावलास निवासी राजू सरगरा, गाडरी खेड़ा के

- **मेजा बांध पेटे में पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो 50 से 60 ट्रैक्टर, डंपर बजरी के अवैध खनन में जुटे हुए थे**

भंवर गाडरी, अमरगढ़ के कमलेश खटीक कोचरिया के दुर्गालाल गुर्जर को हिरासत में लिया है। पुलिस द्वारा इस अवैध बजरी खनन से जुड़े अन्य लोगों की भी पहचान की जा रही है, जिनके खिलाफ जल्द ही कार्रवाई की जाएगी।

लोगों का कहना है कि मेजा बांध क्षेत्र में अवैध खनन से प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंच रहे हैं। स्थानीय विधायक उदयलाल भड़ाना भी अवैध बजरी खनन करने वाले लोगों पर कठोर कार्रवाई करने को लेकर एसपी से चर्चा कर चुके हैं।

पांच हजार का इनामी गिरफ्तार

पावटा, (निसं)। अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त तस्करी के मामले में पुलिस ने पांच हजार रुपये के इनामी आरोपी को गिरफ्तार किया है।

पुलिस मुख्यालय द्वारा अवैध मादक पदार्थ की तस्करी करने वाले आपराधिक तत्वों व वांछित अपराधियों की धरपकड़ के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत एसपी राजन दुष्यंत द्वारा ऐसे तत्वों के विरूद्ध कठोर कार्रवाई करने हेतु अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन, वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन एवं विराटनगर थाना प्रभारी सोहनलाल के नेतृत्व में टीम का गठन कर पुलिस थाना प्रागपुरा में एनडीपीएस एक्ट में वांछित अभियुक्त कमलेश पुत्र नारायण निवासी नंगावली थाना मंगलवाड जिला चित्तौड़गढ़ हर बार पुलिस को चकमा देकर बचता रहा, जिसकी गिरफ्तारी पर जिला पुलिस अधीक्षक कोटपूतली बहरोड राजन दुष्यंत द्वारा पांच हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया था जो थाना

अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त तस्करी के मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया।

मंगलवाड जिला चित्तौड़गढ़ में भी अपने साथी के साथ साढ़े पांच किलो अवैध अफीम परिवहन करते पकड़ा गया था, जिसको प्रागपुरा थाने के प्रकरण में न्यायालय अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश कोटपुतली के न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट जारी करवाकर जिला कारागृह चित्तौड़गढ़ से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारशुदा अभियुक्त कमलेश से अवैध मादक पदार्थ डोडा पोस्त के बारे में अनुसंधान किया जाएगा।

'गांवों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए सरकार प्रयासरत'

जयपुर/सुमेरपुर। पशुपालन, डेयरी, गोपालन एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने अपने पाली जिले के प्रवास के दौरान सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र में लगातार दूसरे दिन अनेक गांवों में विकास कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण किया। जिले में विकास पुरूष के रूप में प्रसिद्ध जोराराम कुमावत ने मोरडू में जल जीवन मिशन के तहत 50 हजार लीटर भराव क्षमता की पानी की टंकी के निर्माण कार्य की शुरूआत भूमि पूजन के साथ करवाई। इसी तरह उन्होंने सुमेरपुर से तख्तगढ़ रोड से कबीर गौशाला तक बनी अढाई किमी. लंबी सड़क का लोकार्पण किया गया। इस सड़क निर्माण पर करीब 60 लाख रुपए की लागत आई है। इससे पहले ग्रामीणों ने मंत्री जोराराम कुमावत का जोरदार स्वागत किया। इस मौके पर मंत्री कुमावत ने कहा कि सरकार ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए प्रयासरत है, लेकिन अभी भी कई गांव ऐसे हैं, जहां लोगों को मूलभूत सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। सड़क, चिकित्सा, शिक्षा, पानी आदि सुविधाओं से लोगों को वंचित होना पड़ रहा है। हर ग्रामवासी को ये सुविधाएं मिलें इसके लिए भाजपा की डबल इंजन सरकार प्रयासरत है। कुमावत ने कहा कि गांव की हर मूलभूत

केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण किया।

सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने से ही ग्रामीण विकास की अवधारणा को पूरा किया जा सकता है। सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र के हरेक गांव को बेहतर सड़क, नियमित बिजली और शुद्ध पेयजल की उपलब्धता हो इसके लिए हम लगातार कार्यरत हैं। इसी के तहत लगभग हर गांव में विकास कार्यों के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बजट स्वीकृत किया है। इस बजट से कार्य समय पर पूरे हों इसके लिए प्रभावी मोनिंटरिंग की जा रही है। सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र की ग्राम पंचायत नोवी में भी स्थानीय विधायक व केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने विभिन्न कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास किया। उन्होंने विधायक कोष से राशि स्वीकृत करके मेघवालों व हीरागरों के बास में सामुदायिक चबुतरे को ऊपर उठाकर उस पर छत का निर्माण कार्य करवाया। नोवी की नई बस्ती के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में विधायक कोष से स्वीकृत राशि से प्रार्थना स्थल पर बने टीन शेड निर्माण कार्य का भूमि पूजन किया। साथ ही छठे राज्य वित आयोग के अंतर्गत पंचायत समिति मद में भारत निर्माण

- मंत्री कुमावत ने किया अनेक कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास किया

राजीव गांधी सेवा केंद्र में रिकार्ड रूम के निर्माण कार्य शुरू किया गया। इसके अलावा विधायक कोष से सामुदायिक भवन का निर्माण कार्य, 15 वें वित आयोग की योजना के अंतर्गत स्वीकृत रूपनगर में गणेशदास जी मंदिर से वरदाराम मीणा के घर तक सीसी ब्लॉक मय नाली निर्माण कार्य शुरू करवाया। इन कार्यक्रमों में भाजपा के जिला मंत्री पूनम सिंह, सुमेरपुर पंचायत समिति की प्रधान उर्मिला कंवर, मंडल अध्यक्ष हणवंत सिंह, पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि पुष्पेंद्र सिंह, बांकली के पूर्व मंडल अध्यक्ष शिवराज सिंह, पंचायत समिति सदस्य पायल दवे, नोवी के उप सरपंच रमेश त्रिवेदी, नोवी की सरपंच चंदा देवी, पूर्व सरपंच मांगीलाल मालवीय, भाजपा कार्यकर्ता प्रवीण कुमार, भवानीशंकर, एसडीएम कालूराम, डीवाईएसपी जितेंद्र सिंह, प्रशासक सोहन कंवर, रूपाराम देवासी, निर्मला मेवाड़ा, प्रशासक प्रतिनिधि गोविंद सिंह, अर्जुन सिंह, देवाराम मीणा, उप सरपंच कोलीवाड़ा अर्जुन सुथार, फुटरमल सेन, मनोहर सिंह मौजूद रहे।

बैठक में जा रहे बाईक सवार दो सगे भाई ट्रेलर से घायल

मनोहरपुर। थाना क्षेत्र के मनोहरपुर दौसा पुलिया पर शनिवार दोपहर को बैठक में जा रहे बाईक सवार दो सगे भाई को ट्रेलर के साइड दबाने से घायल हो गए हैं। जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि चतरपुरा गोविंदपुरा निवासी तेज सिंह पुत्र सुगम सिंह व करण सिंह पुत्र सुगम सिंह दोनों ही गठवाड़ी में एक बैठक में जा रहे थे कि दौसा पुलिया पर एक ट्रेलर ने साइड दबा दी जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों भाइयों को गंभीर चोटें आई हैं, जिनमें से तेज सिंह पुत्र सुगम सिंह उम्र 42 वर्ष का हाथ फ्रैक्चर हो गया है ओर करण सिंह पुत्र सुगम सिंह घायल हो गया।

इस दौरान सूचना पाकर मौके पर थाना पुलिस के हेड कांस्टेबल धर्मपाल मय जाप्ता के पहुंचे। और उन्हें तुरंत एनएचएआई एंबुलेंस से निम्स अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। इस दौरान हादसे

- चतरपुरा गोविंदपुरा निवासी तेज सिंह पुत्र सुगम सिंह व करण सिंह पुत्र सुगम सिंह दोनों ही गठवाड़ी में एक बैठक में जा रहे थे कि एक ट्रेलर ने साइड दबा दी जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए

की सूचना मिलते ही मनोहरपुर टोल प्लाजा एनएचएआई एंबुलेंस सेवा तुरंत मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल पहुंचाया। एनएचएआई एंबुलेंस चालक राम गुर्जर और पीएमपी रामस्वरूप ने घायलों को समय पर अस्पताल पहुंचाकर उनकी जान बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यूनियन फुटबाल ग्राउंड पर स्पोर्ट्स ट्रेनिंग कैम्प का समापन।

पार्सल भेजने का नाम लेकर ठगे 1 लाख 87 हजार

जयपुर। ऑनलाइन कीमत सामान का पार्सल भेजने के बहाने झांसे में लेकर साइबर ठगों ने एक युवती से 1 लाख 87 हजार रुपए ठग लिए। पीडिता के दादा ने चाकसू थाने में मामला दर्ज करवाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार गणेशपुरा चाकसू निवासी गोपाल लाल ने मामला दर्ज करवाया कि उसकी पोती के पास राज के युवक का फोन आया। युवक ने कहा कि आपके नाम का पार्सल है और उसके कीमती सामान रखा है। पार्सल के लिए आपकों को शुल्क चुकाना होगा। इसके बाद आरोपी ने उसकी पोती को एक क्यूआर कोड भेजा और उससे ऑनलाइन रुपए ट्रांसफर करवा लिए। आरोपी ने अलग-अलग शुल्क के नाम से उसकी पोती से कई बार में क्यूआर कोड भेज कर अलग-अलग खातों में 1 लाख 87 हजार रुपए ट्रांसफर करवा लिए। ठगी का अहसास होने पर पीडिता ने सारी आपबीती परिजनों को बताई। इस पर मामला दर्ज करवाया।

रोल साहबसर की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी

जयपुर। क्षत्रीय युवक संघ के सरंक्षक भगवान सिहं जी रोल साहबसर के निधन पर मकराना तहसील के गांव जाविली में सरदार समिति अतिधि भवन प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें सर्व समाज के लोगों द्वारा भगवान सिहं जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए स्वयं सेवक भवानी सिंह जी ने प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि आपका जीवन बटे समाज के लिए समर्पित रहा है अत: उनके जीवन से प्रेरणा लेकर सभी को समाज सेवा करना चाहिये । भगवत सिहं सिंघाना संघ के स्थापना से लेकर आज तक के समाजहित में किये गये कार्म एवं जीवन निमाण को शिक्षा के बारे में जानकारी देते हुए भगवान सिह के शब्द :'जीवो और जीने दो' को विवेचना की गई जिससे एक साधारण से महामानव कैसे बना जा सकता है। मनोहर सिंह की पूर्व सरपंच

सर्व समाज के लोगों द्वारा भगवान सिहं जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

भिभांदा के कहा कि समाज को विकसित करने के लिने बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर अत्यधिक जोर देना चाहिए ताकि पीढ़ी संस्कार दान एवं शिक्षित हो सको विनोद सिंह जो पूर्व प्र0 अ0 द्वारा रोल साहबसर की कार्यशैली पर जानकारी दी एवं आभार व्यक्त दिया

श्रद्धांजलि सभा में बुटेदार ईश्वर किमाण्डेन्ट धन सिंह जी भगवती सिंह को खेर हामी हरनावा दिही जानती वरपंच मैन सिंह व नाम जो भामू, दोलत श्रम की गोदारा, घोट सिहंजी, सज्जन सिहंडी, विरेन्द्र सिंह की, महावीर सिह की, हनुमान रामजी कुमावत दा. रघुवीर सिंह जी बामर सिंह बी, नारायण सिहं जी आदि गणमान्य नागरिकों एवं भारी संकार्मे महिलाओं ने भी पुष्प अर्पण किये।

बाइक सवार बदमाश छीन ले गया मोबाइल

जयपुर। एयरपोर्ट थाना इलाके में बाइक सवार दो बदमाश एक कर्मचारी से मोबाइल छीनकर ले गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। पुलिस के अनुसार दर्शना सिंह ने मामला दर्ज करवाया कि वह जवाहर सर्किल पर स्थित एक अस्पताल में कार्यरत है। वह अस्पताल के बाहर आई थी। बाइक सवार दो बदमाश आए और उसके हाथ पर झपट्टा मार कर मोबाइल छीनकर ले गए।

'क्यूआर कोड स्कैन कर मोबाइल पर प्राप्त करें'

जयपुर। शहर का सबसे बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र जवाहर कला केन्द्र (जेकेके) अपने नवाचारों के लिए जाना जाता है। आमजन को केन्द्र से जोड़ने के लिए अहम कदम उठाया गया है। केन्द्र परिसर में क्यूआर कोड लगाए गए हैं जिसे स्कैन कर कला प्रेमी केन्द्र के कार्यक्रम व अन्य गतिविधियों से जुड़ी जानकारी अपने मोबाइल पर प्राप्त कर सकेंगे।

दरअसल इस क्यूआर कोड को स्कैन कर मोबाइल यूजर जेकेके के ऑफिशियल सोशल मीडिया अकाउंट्स पर पहुंच सकते हैं। केन्द्र की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक, इंस्टाग्राम व एक्स पर कार्यक्रम से संबंधित जानकारियां आमजन के लिए साझा की जाती है। इसी के साथ केन्द्र में चल रही गतिविधियों का अपडेट, केन्द्र की विशेषताएं, सौंदर्य व रोचक फैक्ट्स, कला एवं संस्कृति की जानकारी बताने के लिए स्पेशल कैंपेंस भी इन प्लेटफॉर्म्स पर चलाए जाते हैं। वहीं यूट्यूब पर केन्द्र के कार्यक्रमों के वीडियो देखे जा सकते हैं। क्यूआर कोड स्कैन करने पर सभी प्लेटफॉर्म्स के पेज लिंक एक साथ दिखते हैं अपने मनपसंद प्लेटफॉर्म पर जाकर यूजर उन्हें लाइक, फॉलो और सब्सक्राइब कर सकते हैं।

केन्द्र की अतिरिक्त महानिदेशक अलका मीणा ने बताया कि केन्द्र में रंगमंच, दृश्य कला, साहित्य और संगीत से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। डोम एरिया में क्यूआर कोड लगाए गए हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय को मिली 'एनएएसीए प्लस' ग्रेड

जयपुर। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्, बैंगलोर द्वारा राज्य की सबसे पुरानी, वृहद् एवं प्रतिष्ठित उच्च शैक्षिणक संस्था ''राजस्थान विश्वविद्यालय'' को 'एनएएसीए प्लस' ग्रेड से नवाजा गया है।

राजस्थान विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा तीसरे चक्र की प्रक्रिया इसी माह 5 जून को सम्पन्न हुई है।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि से राजस्थान विश्वविद्यालय देश के उत्कृष्टता प्रमाणित शीर्ष विश्वविद्यालयों में सम्मिलित हो गया है। यह क्षण विश्वविद्यालय की विशिष्टताओं/गुणवत्ताओं और गौरव को मान्यता प्रदान करने एवं इसकी प्रतिष्ठा पुर्नस्थापित करने की दृष्टि से दूरगामी साबित होगा। पूर्व में नैक द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया वर्ष 2016 में की गई थी। गत चार वर्षों से राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्, भारत सरकार से राजस्थान विश्वविद्यालय के मूल्यांकन की प्रक्रिया लम्बित होने के कारण विश्वविद्यालय को केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्राप्त होने वाले अनुदान से वंचित होना पड़

- राज्य की सबसे पुरानी, वृहद् एवं प्रतिष्ठित उच्च शैक्षिणक संस्था ''राजस्थान विश्वविद्यालय'' को 'एनएएसीए प्लस' ग्रेड से नवाजा

रहा था, इस कारण यहाँ के विद्यार्थियों को नवीन योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा था। नैक से उत्कृष्ट मूल्यांकन ग्रेड प्राप्ति के उपरान्त राजस्थान विश्वविद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता व श्रेष्ठता के परिचय के साथ अब केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेय वित्तीय अनुदान प्राप्ति हेतु पात्र हो गया है। इससे विद्यार्थियों के हित में आधारभूत संसाधनों के परिवर्धन सहित नवीन योजनाओं को लागू करना सुगम हो सकेगा।

उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय की कुलगुरू प्रो. अल्पना कटेजा ने अपने पदभार ग्रहण के साथ ही पूर्ण प्रतिबद्धता से इस दिशा में प्रयास प्रारंभ कर दिये थे।

विगत डेढ वर्ष से उनके निर्देशन में शिक्षकों की टीम पूर्ण उत्साह के साथ इस कार्य में जुटी हुई थी।

विश्वविद्यालय की कुलगुरू प्रो. कटेजा ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को सभी शिक्षकों एवं स्टाफ के लगातार किये गये प्रयासों को समर्पित किया। अपने सन्देश में उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि सभी शिक्षक एवं कर्मचारी निरन्तर सृजनशीलता की राह पर अग्रसर होते हुए विश्वविद्यालय को विश्व पटल पर उत्कृष्टता की ऊँचाइयों पर शिखरस्थ करने में सफल होगें।

प्रो. कटेजा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को प्राथमिकता से लागू करते हुए प्रवेश के साथ ही विद्यार्थियों का में पंजीयन प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। विश्वविद्यालय में विद्यार्थी हित में कई मूल्य संवर्द्धित एवं कौशल संवर्द्धित पाठ्यक्रम लागू किये गये हैं। भविष्य में उद्योगों के परस्पर सहयोग के आधार पर कार्य करने के उद्देश्य से नये रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम आरम्भ करने की योजना है।

डॉ भारद्वाज ने पेंशनरों को सफल जीवन का मंत्र दिया

जयपुर। राजस्थान पेंशनर समाज, उप शाखा मालवीय नगर की आर सी कटारा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में प्रेरणास्पद शख्सियत और राष्ट्रीय स्तर के मोटिवेशनल गुरु डॉ पी एम भारद्वाज ने आल इज़ पॉसीबल के सिद्धांत की व्याख्या करते हुए कहा, यदि हम जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो हमें समय का सही प्रबंधन, कड़ी मेहनत, और समर्पण की आवश्यकता है। इन गुणों के बिना किसी भी प्रकार की सफलता संभव नहीं है। एस एन विजयवर्गीय ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देते हुए पेंशनरों को इसके तकनीकी महत्त्व से अवगत कराया। बैठक में शाखा सचिव पी डी अरोड़ा ने आगामी 20 जुलाई को राखी समारोह की जानकारी देते हुए कार्यकारिणी सदस्यों को कार्यक्रम सफल बनाने के लिए विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी। उप सचिव बाबूलाल गुप्ता ने आगामी मीटिंग 12 जुलाई को आयोजित करने की जानकारी दी। इस अवसर पर समृति शेष ज्ञान प्रकाश पांडेय, सुनील चंद डागा और प्रेमचंद काला की पत्नी मनसुख देवी सहित विमान दुर्घटना में मृत लोगों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

सांसद मंजू शर्मा ने जनप्रतिनिधियों के साथ रामगढ़ बांध में किया श्रमदान

जयपुर। वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत रविवार को सांसद मंजू शर्मा के नेतृत्व में जनप्रतिनिधियों और भाजपा कार्यकर्ताओं ने रामगढ बांध पर श्रमदान किया। इस दोरान सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि रामगढ बांध जल्द ही लबालब होगा । हमारी केन्द्र और राज्य दोनों सरकारों का पूरा ध्यान इस पर केन्द्रित है। जयपुर का पिकनिक स्पॉट रहा यह बांध जल्द ही अपनी पुरानी अवस्था मे आएगा और सब लोग यहां फिर से पिकनिक मनाने आएंगे।

सांसद मंजू शर्मा ने बताया कि रामगढ बांध से जयपुर के लोगों से लगाव है वे श्रमदान कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि सरकार ने ईसरदा बांध से रामगढ़ बांध में पानी लाने के लिए रामजल सेतु परियोजना बनाई है। जिसके पूरा होने पर यह बांध फिर से पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होगा।

सांसद मंजू शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के आ ान पर प्रदेशभर में जलस्त्रोतों के संरक्षण एवम सफाई के लिए वंदे गंगा जल

- 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश की डबल इंजन सरकार रामगढ़ बांध में पानी लाने के लिए प्रतिबद्ध'
- सांसद मंजू शर्मा ने बताया कि रामगढ बांध से जयपुर के लोगों से लगाव है वे श्रमदान कर रहे हैं, सरकार ने ईसरदा बांध से रामगढ़ बांध में पानी लाने के लिए रामजल सेतु परियोजना बनाई है। जिसके पूरा होने पर यह बांध फिर से पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होगा

संरक्षण जनअभियान चल रहा है। इसके तहत जनप्रतिनिधियों के साथ भाजपा कार्यकर्ता आमजन के साथ इस पुण्य कार्य में सहभागी बन रहे हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस अभियान की शुरुआत गंगादशमी को की थी। इस दोरान जनप्रतिनिधियों और आमजन ने रामगंढ बांध में श्रमदान किया गया था।

सांसद मंजू शर्मा ने बताया कि उन्होंने लोकसभा में अनुदान मांगों पर चर्चा के दौरान इसी साल 19 मार्च और 21 मई को रामगढ बांध का मुद्दा उठाया था । इसके बाद 22 मई को केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल के साथ चर्चा करके रामगढ को भरने की पुरजोर मांग की थी।

सांसद मंजू शर्मा के साथ मेयर सौम्या गुर्जर, उपमहापौर पुनीत कर्नावट, भाजपा नेता रवि नैयर, चंद्रमोहन बटवाडा, भाजपा जयपुर शहर जिलाध्यक्ष अमित गोयल के साथ बडी संख्या में पार्षद , भाजपा नेता और पदाधिकारी रामगढ बांध पहुंचे। वहां विधायक महेन्द्रपाल मीणा ने उनका स्वागत किया और उनके साथ श्रमदान किया।

लायंस क्लब हवामहल, जयपुर का स्थापना दिवस समारोह आयोजित

जयपुर । राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने वर्षा के मौसम में आधिकारिक पेड़ लगाए जाने का आ ान किया है। उन्होंने सामाजिक संस्थाओं से अपील भी की है कि वह वृक्ष लगाने के साथ उनके संरक्षण के लिए भी लोगों को प्रेरित करें। उन्होंने जल संरक्षण के लिए भी अभियान चलाकर कार्रवाई किए जाने का आ ान किया। राज्यपाल बागडे रविवार को लायंस क्लब हवामहल, जयपुर के स्थापना दिवस समारोह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा के लिए मिलकर कार्य करने पर जोर दिया।

राज्यपाल ने कहा कि भारतीय परम्परा में अपने लिए नहीं दूसरों के लिए सोच रखते कार्य करने पर जोर दिया गया है। हमारे यहां सेवा ही सबसे बड़ा, परम धर्म कहा गया है। लायंस क्लब इस उद्देश्य से कार्य करता है, यह महत्वपूर्ण है। राज्यपाल ने कहा कि ऐसे कर्म करें जिससे केवल अपना ही नहीं सभी का भला हो। उन्होंने सभी को समाज और राष्ट्र के विकास के लिए अपना श्रेष्ठतम देते हुए कार्य करने का आव्हान किया।

अधिवक्ता परिषद जयपुर प्रांत की प्रांत कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

जयपुर । अधिवक्ता परिषद राजस्थान जयपुर प्रांत की प्रांत कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक रविवार को स्वस्तिक भवन, अम्बाबाड़ी में सम्पन्न हुई। बैठक तीन सत्रों में आयोजित की गई, जिसमें संगठन के विभिन्न विषयों पर चर्चा और आगामी कार्ययोजनाओं पर निर्णय लिए गए। बैठक के प्रथम सत्र का संचालन

- बैठक के प्रथम सत्र का संचालन प्रांत महामंत्री जितेंद्र सिंह राठौड़ ने किया

प्रांत महामंत्री जितेंद्र सिंह राठौड़ ने किया। इस दौरान उन्होंने अपने कार्यकाल की उपलब्धियों और गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। कोषाध्यक्ष अमित गुप्ता ने परिषद की आय-व्यय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सत्र के अंत में प्रांत अध्यक्ष नीरज बत्रा ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

द्वितीय सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजस्थान क्षेत्र के सह क्षेत्र कार्यवाह गेंदा लाल और अखिल

प्रांत कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक स्वस्तिक भवन, अम्बाबाड़ी में सम्पन्न हुई।

भारतीय अधिवक्ता परिषद राजस्थान क्षेत्र के क्षेत्रीय मंत्री कमल परसवाल ने अपने विचार रखे।

उन्होंने परिषद के सदस्यों को संगठन की भूमिका और समाज में न्याय की भारतीय अवधारणा के महत्व पर प्रकाश डाला।तृतीय सत्र में चुनाव अधिकारी भागीरथ (राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, स्वदेशी जागरण मंच) की देखरेख में प्रांत अध्यक्ष का चुनाव सम्पन्न हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष नीरज बत्रा ने प्यारेलाल के नाम का प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन प्रांत मंत्री अशोक कासलीवाल एवं विनोद शर्मा ने किया। सर्वसम्मति से प्यारेलाल को प्रांत अध्यक्ष चुना गया।

अध्यक्ष बनने के बाद प्यारेलाल ने अभिषेक सिंह को महामंत्री नियुक्त करने की घोषणा की। साथ ही, गजेंद्र शर्मा को प्रांत कार्यालय मंत्री और अभिषेक अग्रवाल को कोषाध्यक्ष व प्रभा अग्रवाल और सुतीक्षण भारद्वाज को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

गौ ध्वज पूजन कार्यक्रम आयोजित : गौमाता के संरक्षण में कार्य करने का संकल्प लिया

जयपुर । वैशाली नगर, जयपुर में गौ ध्वज पूजन एवं परिक्रमा कार्यक्रम का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। यह आयोजन गौ ध्वज स्थापना की प्रथम वर्षगांठ की पूर्व तैयारियों के तहत किया गया, जिसकी स्थापना 18 अक्टूबर 2024 को ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी

- यह आयोजन गौ ध्वज स्थापना की प्रथम वर्षगांठ की पूर्व तैयारियों के तहत किया गया

महाराज द्वारा की गई थी। कार्यक्रम का शुभारंभ दोपहर 12 बजे शंकराचार्य जी के प्रतिनिधि एवं राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी योगीराज शैलेन्द्र जी महाराज की पावन उपस्थिति में हुआ। उन्होंने विधिवत रूप से गौ ध्वज का पूजन एवं परिक्रमा कर, आध्यात्मिक वातावरण में जनजागरण अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर आगामी मुख्य समारोह की तैयारियों

गौ ध्वज पूजन एवं परिक्रमा कार्यक्रम का भव्य आयोजन संपन्न हुआ।

एवं जनसंपर्क कार्य की औपचारिक शुरुआत भी की गई।

कार्यक्रम में भारतीय गौ क्रांति मंच के प्रदेश अध्यक्ष ताराचंद कोठारी, शहर अध्यक्ष, संत प्रकाश दास जी महाराज, गौ सांसद देवकीनंदन पुरोहित, अन्य गौ संसद प्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में गौभक्त एवं सेवकगण उपस्थित रहे। सभी ने गौमाता के संरक्षण, संवर्धन और उनके राष्ट्रमाता के सम्मान की दिशा में कार्य करने का संकल्प लिया।

''देश की जननी, हमारी संस्कृति की आधारशिला गौमाता को अब राष्ट्रमाता घोषित किया जाना चाहिए। महाराष्ट्र की एकनाथ शिंदे सरकार ने गौमाता को राज्य माता का दर्जा देकर आदर्श प्रस्तुत किया है। सभी राज्य सरकारें इस दिशा में पहल करें और केंद्र सरकार से अनुरोध करें कि गौमाता को राष्ट्रमाता घोषित किया जाए।''

उल्लेखनीय है कि बीते वर्ष शंकराचार्य जी द्वारा पूरे भारतवर्ष में गौ ध्वज प्रतिष्ठा यात्रा के माध्यम से सभी प्रदेशों में गौमाता को राष्ट्रमाता घोषित करने की मांग को लेकर अभियान चलाया गया था। इस यात्रा के दौरान हर राज्य की राजधानी में गौ ध्वज स्थापित किए गए। उसी का परिणाम रहा कि महाराष्ट्र में गौमाता को राज्य माता घोषित कर विशेष कानून बनाया गया, जिससे प्रदेश को अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त हुई।

कार्यक्रम के समापन पर सभी गौ सेवकों ने आगामी वर्षगांठ समारोह को ऐतिहासिक स्वरूप देने हेतु तन-मन-धन से सहयोग करने का संकल्प लिया।

भारतीय गौ क्रांति मंच के प्रदेश कार्यालय, वैशाली नगर, जयपुर में रविवार को गौ ध्वज पूजन एवं परिक्रमा कार्यक्रम का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। यह आयोजन गौ ध्वज स्थापना की प्रथम वर्षगांठ की पूर्व तैयारियों के तहत किया गया, जिसकी स्थापना 18 अक्टूबर 2024 को ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज द्वारा की गई थी।

व्यापारी से सात लाख रुपए की लूट का फरार आरोपी जयपुर से गिरफ्तार

जयपुर मंडी में जीरा बेचकर लौट रहे व्यापारी से सात लाख रुपए की लूट हुई थी

अजमेर, (कासं)। जिले के पीसांगन थाना क्षेत्र में दस माह पूर्व हुई लूट के मामले में पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। जयपुर मंडी में जीरा बेचकर लौट रहे व्यापारी से सात लाख रुपए की लूट में फरार चल रहे वांछित आरोपी इकबाल उर्फ बाला को पुलिस ने जयपुर से गिरफ्तार कर लिया। पूर्व में मामले में चार आरोपी पहले ही जेल भेजे जा चुके हैं। पुलिस जांच में जुटी है।

थाना प्रभारी प्रहलाद सहाय ने बताया कि 8 अगस्त 2024 को आनंदपुर कालू निवासी गोपाल सिंह ने जयपुर मंडी में सात लाख रुपए में जीरा बेचा था। जब वह गांव लौट रहा था, उसी दौरान नागेलाव से शिवपुरा करनोस के बीच उसकी पिकअप का रास्ता एक बिना नंबर की कार ने रोका। कार में सवार चार नकाबपोश बदमाशों ने पिस्तौल की नोक पर व्यापारी से सात लाख रुपए लूट लिए और फरार हो गए। घटना के बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए हामिद काठात, फिरोज, जाकिर हुसैन और सिकंदर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। वहीं मुख्य आरोपी इकबाल काठात उर्फ बाला निवासी

पीसांगन थाना क्षेत्र में दस माह पूर्व हुई लूट के मामले में पुलिस ने वांछित आरोपी इकबाल उर्फ बाला को गिरफ्तार किया।

नीयगढ़ थाना ब्यावर सदर पिछले दस माह से फरार चल रहा था। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर जिला स्पेशल टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर जयपुर में छापामारी कर इकबाल को दबोच लिया। बाद में आरोपी को थाना पीसांगन को सुपुर्द किया गया। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर लूटी गई राशि की बरामदगी और अन्य सहयोगियों के बारे में जानकारी जुटा रही है।

■ मामले में चार आरोपी पहले ही जेल भेजे जा चुके हैं, पुलिस जांच में जुटी

नहर में गिरने से युवक की मौत : -उदयपुर के नाई थाना क्षेत्र नादेश्वर तालाब नहर में गिरने पर घायल युवक की उपचार के दौरान मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अुनसार रविवार सवेरे जोगी तालाब गोवर्धन विलास निवासी गोपाल गमेती (54) पुत्र लोगर गमेती अपने अन्य साथी देवीलाल पुत्र नोजीराम गमेती एवं नानालाल पुत्र नारू गमेती निवासी नैला के साथ नांदेश्वर तालाब पर गया था, जहां नहर के समीप चेनल गेट पर पांव फिसलने से निचे गिर पड़ा, जिससे सिर पर चोट लगने से वह गंभीर घायल हो गया। इसको देख साथी उसे उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय ले गए, जहां उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर नाई थाना एएसआई हरिराम ने मृतक का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

चोरी के शक में दो शातिर युवक गिरफ्तार

अजमेर, (कासं)। संभाग के सबसे बड़े जवाहर लाल नेहरू अस्पताल में पुलिस की सक्रियता से चोरी की बड़ी वारदात टल गई। रविवार सुबह अस्पताल परिसर में रैकी कर रहे दो शातिर युवकों को वारदात अंजाम देने से पहले ही गिरफ्तार कर लिया। पुलिस दोनों शातिर युवकों से पूछताछ में जुटी है।

■ जेएलएन अस्पताल में चोरी की वारदात की फिराक में थे दोनों युवक

चोरी के शक में दो संदिग्ध को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

हैड कांस्टेबल अनिल कुमार ने बताया कि रविवार को गश्त के दौरान जैसे ही पुलिस अस्पताल परिसर में पहुंची दो युवक संदिग्ध तौर पर इधर-उधर छुपने की कोशिश करने लगे। पुलिस की नजर उन पर पड़ गई तो उन्हें रोककर पूछताछ की गई। दोनों ने पहले संतोषजनक जवाब नहीं दिया, जिस पर पुलिस का संदेह और बढ़ गया। गहन पूछताछ और जांच के बाद सामने आया कि दोनों युवक किसी गैंग से जुड़े हैं और अस्पताल परिसर में चोरी के लिए रैकी कर रहे थे।

पुलिस सूत्रों के अनुसार पिछले कुछ समय से जेएलएन अस्पताल परिसर में चोरी की घटनाएं बढ़ गई थीं। इसी को ध्यान में रखते हुए चौकी स्टाफ द्वारा नियमित गश्त और संदिग्धों पर नजर रखी जा रही थी। पकड़े गए युवकों से पुलिस अब पूछताछ कर रही है कि वे अकेले थे या गैंग के अन्य सदस्य भी आसपास मौजूद थे। साथ ही अस्पताल परिसर में हुई हालिया चोरी की वारदातों में इनकी संलिप्तता की भी जांच की जा रही है।

पाली में दिनभर तपिश के बाद झमाझम बारिश

पाली में बरसात होने से सड़कों पर पानी बह निकला।

पाली, (निसं)। पिछले दो दिनों से पड़ रही तेज गर्मी के बाद रविवार दोपहर बाद करीब चार बजे रिमझिम बारिश के बाद झमाझम बारिश का दौर चला, जिससे पाली शहर की सड़कों पर पानी बहने लगा। मौसम में ठंडक सी छा गई। बारिश होने से शहरवासियों के चेहरे खिल गए। शनिवार को 45 डिग्री तापक्रम पहुंच गया था। ऐसे में रविवार को हुई बारिश से राहत मिली। चार बजे शुरू हुई बारिश शाम सात बजे तक चलती रही।

बीकानेर और अजमेर के सरकारी बीएड कॉलेजों से अभ्यर्थी डीपीएसई कर सकेंगे

बीकानेर, (निसं)। राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान बीकानेर और अजमेर से अब विद्यार्थी एनटीटी (नर्सरी टीचर ट्रेनिंग) कोर्स कर सकेंगे। इस कोर्स का नया नाम डिप्लोमा इन प्री स्कूल एजुकेशन (डीपीएसई) कर दिया गया है। राज्य सरकार की मंजूरी के बाद प्रारंभिक शिक्षा निदेशक ने दोनों संस्थानों में इस नए पाठ्यक्रम को शुरू करने के लिए एफिलिएटिंग बॉडी के रूप में एनओसी प्रदान कर दी है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट ने इस संबंध में आदेश जारी किए हैं।

■ एनटीटी (नर्सरी टीचर ट्रेनिंग) कोर्स का नया नाम डिप्लोमा इन प्री स्कूल एजुकेशन (डीपीएसई) किया गया है

प्रत्येक संस्थान में 50-50 विद्यार्थियों की दो यूनिट की अनुमति दी गई है। यह कोर्स अब नए नाम से शुरू किया जाएगा। जानकारी के अनुसार इसे पूर्व प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने राज्य के 34 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) कॉलेजों को भी इस नए पाठ्यक्रम को शुरू करने के लिए एफिलिएटिंग बॉडी के रूप में एनओसी प्रदान कर दी थी। बीकानेर सहित प्रत्येक डाइट कॉलेज में 50-50 निर्धारित की गई है। जबकि दोनों राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान में दो यूनिट होने से 100-100 सीट निर्धारित की गई है। नई शिक्षा नीति में प्री-प्राइमरी कक्षाओं का प्रावधान किया गया है।

राज्य के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल और पीएम श्री स्कूलों में प्री-प्राइमरी कक्षाओं का संचालन भी शुरू हो गया है। इन स्कूलों में प्री-प्राइमरी कक्षाओं के लिए पर्याप्त संख्या में शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। इन शिक्षकों की कमी दूर करने के लिए सरकार ने एनटीटी पाठ्यक्रम (डीपीएसई) को शुरू करने की तैयारी शुरू कर दी है।

डाइट सहित दोनों सरकारी बीएड कॉलेजों को इस कोर्स को शुरू करने के लिए अब राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) से मान्यता लेनी होगी। एनसीटीई की ओर से मान्यता मिलने के बाद राज्य के डाइट कॉलेजों सहित राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान में नर्सरी टीचर ट्रेनिंग कोर्स शुरू किया जा सकेगा।

बीकानेर डाइट प्राचार्य ने बताया कि संस्थान स्तर पर डीपीएसई कोर्स शुरू करने की तैयारी है। एनसीटीई ने मान्यता के लिए फिलहाल वेबसाइट पर आवेदन शुरू नहीं किए हैं। ऑनलाइन आवेदन शुरू होने के बाद आगामी प्रक्रिया अपनाई जाएगी। नर्सरी टीचर ट्रेनिंग (एनटीटी) कोर्स करने का मौका राजस्थान में प्रत्येक वर्ष 1900 अभ्यर्थियों को मिलेगा। प्रत्येक डाइट कॉलेज में 50 सीटों के मुताबिक 1700 अभ्यर्थियों को राज्य के 34 डाइट कॉलेज में दाखिला मिलेगा, जबकि 100-100 अभ्यर्थी राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान बीकानेर और अजमेर से यह कोर्स कर सकेंगे।

करंट से श्रमिक की मौत

उदयपुर, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षैत्र में निर्माण कार्य करते समय करंट लगने से श्रमिक की मौत हो गई।

■ निर्माण कार्य करते समय श्रमिक को करंट लग गश था

पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार को प्रतापनगर थाना क्षेत्र में स्थित निजी कालेज में निर्माण कार्य करते समय करंट लगने पर देबारी नलाफलां निवासी जगदीश (30) पुत्र नवलराम गमेती की मौत हो गई। काम करने के दौरान करंट लगने से झुलसने पर साथी श्रमिक उसे उपचार के लिए चिकित्सालय ले गए। जहां उसकी मौत हो गई। एएसआई पर्वतसिंह ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की है।

भीमडियास गांव में अंधड़ व बारिश ने तबाही मचाई

पेड़ों पर बैठे हुये 500 से अधिक तोते मर गये

मांडल थाना क्षेत्र के भीमडियास गांव में तेज अंधड़ व बारिश से घरों के चद्दर उड़ गए

भीलवाड़ा, (निसं)। बीती देर रात्रि को आए तेज अंधड़ व बारिश ने भारी तबाही मचाई। मांडल थाना क्षेत्र के भीमडियास गांव में तेज अंधड़ व बारिश से 100 से अधिक घरों के चद्दर उड़ गए और कई घरों की दीवारें ढह गई, जिसके चलते ग्रामीणों में दहशत फैल गई। वहीं दीवार के मलबे में दबने से एक महिला का पैर टूट गया। घायल हुई महिला को हॉस्पिटल में ले जाया गया। वहीं गांव में 2 दर्जन से अधिक पेड़ उखड़ गए। कई बिजली के पोल भी टूट गए, जिससे पूरी रात बिजली गायब रही। वहीं गांव के बस स्टैंड पर स्थित पेड़ों पर बैठे हुये 500 से अधिक तोते मर गये।

■ अंधड़ से 100 से अधिक घरों के चद्दर उड़ गए और कई घरों की दीवारें ढह गई

■ दीवार के मलबे में दबने से एक महिला का पैर टूटा, हॉस्पिटल ले जाया गया

ग्रामीणों ने बताया कि पहली बार ऐसा अंधड़-तूफान देखने को मिला है। गांव में लाखों रुपए के नुकसान का आंकलन किया गया। वहीं मरे हुए सभी तोतों को जेसीबी द्वारा जमीन में दफनाया गया। अचानक आए इस तूफान में कई लोग बाल-बाल बच गए। कई मवेशियों को भी चोटें आई हैं। लोग सुबह से ही अपने सामान बिखरे हुए सामान को समेटने में लगे रहे।

बीएसएफ जवान ने सहकर्मी की गोली मार हत्या की

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में बीएसएफ के जवान ने अपने सहकर्मी की गोली मारकर हत्या कर दी है। जवान चौमूं उपखंड के कालाडेरा के पास स्थित खन्नीपुरा गांव का रहने वाला था। आरोपी की पहचान एसके मिश्रा के रूप में हुई है। घटना के बाद पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई।

जवान रतन सिंह शेखावत (38) की मौत की सूचना मिलने के बाद पत्नी फूल कंवर और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। जवान का एक बेटा सुरेन्द्र सिंह शेखावत और बेटी सोनू कंवर है। जानकारी के अनुसार सोमवार सुबह जवान का पार्थिव देह गांव पहुंचेगा। वहां पूरे सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा। पुलिस के अनुसार, आरोपी एसके मिश्रा और जवान रतन सिंह शेखावत दोनों 119 बीएन बटालियन में थे और हिंसा प्रभावित इलाके में तैनात थे। कोलकाता हाईकोर्ट के आदेश पर मुर्शिदाबाद के सभी हिंसा प्रभावित इलाकों में को तैनात किया गया था।

धारदार हथियारों से लैस युवकों ने उत्पात मचाया

शाहपुरा, (निसं)। थाना क्षेत्र के बिदारा गांव में बीती रात कुछ लोगों ने जमकर उत्पात मचाया है। हथियारों से लैस होकर स्कूटी सवार युवक से मारपीट कर स्कूटी में तोड़फोड़ कर दी। इसके बाद हवाई फायर कर ट्रैक्टर-ट्रॉली से निर्माणाधीन ढांचे को तोड़ दिया। युवकों की यह करतूत सीसीटीवी कैमरे कैद हो गई।

■ हवाई फायर कर ट्रैक्टर-ट्रॉली से निर्माणाधीन ढांचे को ध्वस्त किया

बिदारा निवासी चंद्रशेखर पुत्र महेंद्र शर्मा ने पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया कि शुक्रवार देर शाम को उसका भाई रोहित दुकान से घर जा रहा था कि घर से 500 मीटर पहले फ्लेटों के पास घात लगाए बैठे सोनू योगी, योगेश योगी, अरूण योगी, रवि योगी, द्वारका योगी, भोला योगी निवासी बिदारा, इंद्राज यादव उर्फ रावण निवासी अमरपुरा, अशोक बिछवालिया निवासी घासीपुरा सहित 15-20 लोगों ने आते ही स्कूटी पर उसको पकड़ने के लिए भागे तथा तलवार व सरियों से प्रहार किया। उसका भाई स्कूटी को छोड़कर दौड़कर घर में भागकर जान बचाई। उक्त लोगों ने फायरिंग करते हुए एक साथ एकराय होकर उनके भैसों के बाड़े में हथियारों से लैस होकर घुस गए और कैमरों को तोड़ दिया तथा मेरे बाड़े के पास चंद्रशेखर मीणा के खरीदशुदा भूखण्ड पर टिनशैड कमरे को भी ट्रैक्टर-ट्रॉली व सरियों से तोड़-फोड़कर ध्वस्त कर दिया। उक्त घटना सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हो गई। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। इस पर पुलिस ने मौके पर पहुंचे तो उक्त लोग भाग गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

किशनगढ़ बास नगर पालिका क्षेत्र में जोहड़ व प्राचीन खाई की हालत खस्ता

किशनगढ़ बास, (निसं)। मानसून नजदीक है, हर वर्ष जल भराव के कारण होने वाले नुकसान को लेकर दुकानदारों की चिंताएं फिर से बढ़ना प्रारम्भ हो गई है। वर्षा ऋतु से पहले नगर पालिका प्रशासन की ओर से हर वर्ष लाखों रुपए नालों की सफाई पर खर्च किए जाते हैं, परंतु इसके बाद भी जल भराव की स्थिति बनी रहने से व्यापारियों को नुकसान उठाना पड़ता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की ओर से जल संरक्षण व संचयन तथा भूजल स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से संचालित वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान की शुरुआत की है। जिला कलेक्टर सहित प्रशासनिक लवाजमा अभियान को जन अभियान बनाकर परंपरागत जल संरक्षण संरचनाओं के लिए टांके, बावड़ी, जोहड़, कुएं व तालाब इत्यादि के जीर्णोद्धार एवं साफ-सफाई कार्य कराने में लगा है, लेकिन अभियान के तहत किशनगढ़ बास नगर पालिका क्षेत्र में परंपरागत शहर के प्रमुख जोहड़ व प्राचीन खाई की सुध लेने कोई नहीं पहुंचा है जो किशनगढ़ बास की वर्षों पुरानी समस्या है।

किशनगढ़ बास में आबादी के बीच का जोहड़, जो गंदगी से लबालब भरा है।

शहर में पिछले लंबे समय से तोप सर्किल से खैरथल तिजारा अलवर और बासड़ा रोड को जाने वाली मुख्य सड़क पर वाहनों के यातायात की जाम व सरकारी गंदे पानी निकासी के नालों के ऊपर अतिक्रमण की समस्या पैदल चलने वाले राहगीरों के लिए नासूर बनी हुई है। तोप सर्किल से तिजारा अलवर खैरथल व बासड़ा रोड के मुख्य चौराहे के पास रोडवेज बस स्टैंड, प्राइवेट बसों व टेंपो रिक्शा का संचालन व सड़क के दोनों और फ्रूट खोमचा ठेले वालों के खड़े होने से बार-बार होने वाले जाम की समस्या के समाधान के लिए करीब ढेड साल पहले प्रशिक्षु आईएएस अधिकारी धीरज कुमार के एसडीएम रहते बस स्टैंड को मोठूका चौक पर स्थानांतरण किया जाना प्रस्तावित किया गया जो आज तक नगर पालिका की फाइलों में बंद है।

ऐसे ही शहर में गंदे पानी निकासी के नालों पर हो रहे अतिक्रमण को हटाने की फाइल नगर पालिका की अलमारी में बंद है। गंज रोड, मुख्य बाजार, बत्रा कॉलोनी, हॉस्पिटल आदि अनेक सरकारी कार्यालयों को बारिश के दिनों में जल भराव की समस्या से जूझना पड़ता है। शहर की जल भराव की समस्या के समाधान के लिए अनेक बार प्रशासनिक एवं नगर पालिका स्तर पर अतिक्रमण चिह्नित कर अतिक्रमण हटाने के लिए नोटिस दिए जाते हैं।

शहर में आबादी के बीच बने जोहड़ व खाई में मुख्य बाजार गंज रोड अलवर रोड खैरथल रोड सहित आसपास की कॉलोनी का पानी प्रतिदिन गदे नालों से पहुंचता है। इसकी सफाई पर नगर पालिका ने करीब 2 साल पहले 40 से 45 लाख रुपए सफाई पर शहर को जल भराव की समस्या से निजात दिलाने के लिए खर्च किए परंतु जोहड़ व खाई की सफाई महज खानापूर्ति कर रुपए उठा लिए गए और समस्या ज्यों की त्यों बनी है। जोहड़ गंदगी से भरा है, आधे से अधिक भाग में लोगों ने कब्जा कर पानी को रोका हुआ है।

■ जोहड़ व खाई की सफाई महज खानापूर्ति और समस्या ज्यों की त्यों बनी है

हालांकि जल भराव की समस्या के समाधान के लिए व्यापारियों के प्रतिनिधिमंडल कलैक्टर एसडीएम से शिष्टाचार मुलाकात कर समाधान की मांग कर चुके हैं। अभिभाषक संघ पूर्व अध्यक्ष अमित गौड़ पूर्व में की गई अतिक्रमण व जल भराव की समस्या को लेकर अभिभाषक संघ एवं आमजन की ओर से सरकार व प्रशासन के समक्ष की गई शिकायतों से अवगत करा चुके हैं लेकिन ध्यान कोई नहीं दे रहा है।

डॉ. दुर्गा चौहान को ट्रॉमा एनेस्थीसिया परीक्षा में प्रथम रैंक मिली

रानीवाडा, (निसं)। पीपा क्षत्रिय समाज की होनहार बेटी डॉ. दुर्गा चौहान ने देशभर में आयोजित आईएनआई एसएस डीएम परीक्षा में ट्रॉमा एनेस्थीसिया एंड एक्यूट केयर विषय में ऑल इंडिया रैंक एक हासिल कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। डॉ. दुर्गा, राजेन्द्र चौहान की पुत्री हैं और मूल रूप से गांव छत्तरगढ़, जिला बीकानेर की निवासी हैं। उन्होंने एमबीबीएस सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज बीकानेर से और एमडी (एनेस्थीसिया क्रिटिकल केयर) की पढ़ाई पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ से पूरी की। यह परीक्षा भारत के प्रमुख संस्थानों में सुपर स्पेशियलिटी कोर्स में दाखिले के लिए आयोजित की जाती है और इसे चिकित्सा क्षेत्र की कठिनतम परीक्षाओं में से एक माना जाता है। डॉ. दुर्गा की इस सफलता पर परिवार, समाज और क्षेत्रवासियों में खुशी का माहौल है। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय परिवार, गुरुजनों और सहयोगियों को दिया है। उनका कहना है कि वे भविष्य में ट्रॉमा और क्रिटिकल केयर चिकित्सा सेवाओं को और बेहतर बनाने के लिए कार्य करना चाहती हैं। डॉ. दुर्गा की मंगनी जालोर जिले के रानीवाड़ा निवासी चंडीगढ़ में अध्यनरत रेडियोलॉजिस्ट डॉ. भागीरथ परिहार पुत्र मंछाराम परिहार से हुई है। रानीवाडा के लोगों को भी इस परिवार पर गर्व है। इस उपलब्धि पर समाज के लोगों ने प्रसन्नता जताते हुए डॉ. दुर्गा को शुभकामनाएं दी है और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक बताया है।

■ पीपा क्षत्रिय समाज की बेटी डॉ. दुर्गा चौहान ने देश में पहला स्थान हासिल किया

खेल जगत

मैंने टीम की जरूरतों के अनुसार खेलना सीख लिया है और अब आईपीएल की अपनी बेहतरीन फॉर्म को इंग्लैंड दौरे पर भी जारी रखना चाहते हैं। – प्रसिद्ध कृष्णा

भारतीय बल्लेबाज, इंग्लैंड दौरे पर बोलते हुए।

आज का खिलाड़ी — शुभमन गिल

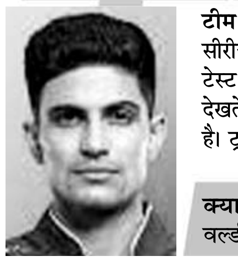

टीम इंडिया के टेस्ट कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि वे इंग्लैंड सीरीज के लिए बहुत उत्साहित हैं। बताया कि विराट भाई की टेस्ट कप्तानी ने बहुत सिखाया। जस्सी भाई की फिटनेस को देखते हुए फैसला लेंगे कि उन्हें कौन से मुकाबलों में रेस्ट देना है। ट्रॉफी जीतने के अलावा मैं टीम इंडिया में एक कल्चर बनाना चाहूंगा, जहां सभी खिलाड़ी खुश रहें। सभी टीम में अपनी जगह को लेकर सिक्योर रहें, मैं जानता हूं कि स्क्वॉड में कम प्लेयर्स की जगह रहती है, लेकिन मैं फिर भी प्लेयर्स को ये संदेश देने में कामयाब रहा कि उनकी जगह टीम में कहां है तो मेरे लिए यह अच्छा अचीवमेंट होगा।

क्या आप जानते हैं ?... जापानी नागरिक नोज़ुमु हागिहारा कोलकाता से दिल्ली तक 2025 किमी फुटबॉल ड्रिबल कर नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

दक्षिण अफ्रीका की महिला टीम ने वेस्टइंडीज को 40 रनों से हराया

केव हिल, 15 जून। सुने लूस (76), नोंडुमिसो शंघासे (55) की शानदार अर्धशतकीय पारियों के बाद एन. म्लाबा (चार विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी की बदौलत दक्षिण अफ्रीका की महिला टीम ने दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को 40 रनों से हराया दिया। इसी के साथ दक्षिण अफ्रीका ने तीन मैचों की सीरीज में 1-1 से बराबरी कर ली है।

वेस्टइंडीज की टीम ने शनिवार रात खेले गये मुकाबले में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी दक्षिण अफ्रीका के लिए कप्तान लॉरा वुलफार्ट और तेजमिन ब्रिट्स की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 51 रन जोड़े। 16वें ओवर में हेली मैथ्यूज ने लॉरा वुलफार्ट (28) को आउटकर वेस्टइंडीज को पहली सफलता दिलाई। 19वें ओवर में ऐफी फ्लेकर ने तेजमिन ब्रिट्स (26) को आउटकर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद नोंडुमिसो शंघासे और सुने लूस की जोड़ी ने दक्षिण अफ्रीका की पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच तीसरे विकेट लिए 85 रनों की साझेदारी हुई।

30वें ओवर में हैली मैथ्यूज ने नोंडुमिसो शंघासे को आउटकर इस साझेदारी का अंत किया। नोंडुमिसो शंघासे ने 48 गेंदों में चार चौके और दो छक्के लगाते हुए (55) रनों की पारी खेली। मैरीजान कैप्प (32), सिनालो जाफ्टा(दो) रन बनाकर आउट हुई। 43वें ओवर में आलिया ऑलेन ने सुने लूस को आउट किया। सुने लूस ने 65 गेंदों में आठ चौकों की मदद से (76) रन बनाये। एनरी डर्कसन (37), क्लोई ट्राइऑन (28) फ्लेचर का शिकार बनी। दक्षिण अफ्रीका की टीम ने निर्धारित 50 ओवरों में नौ विकेट पर 309 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया।

वेस्टइंडीज की ओर से एफी फ्लेचर ने चार विकेट लिये। हेली मैथ्यूज को दो विकेट मिले। करिश्मा रामहैरक और आलिया ऑलेन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। 310 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज की महिला टीम दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजी आक्रमण के आगे निर्धारित 50 ओवरों में 269 के स्कोर पर सिमट गई और 40 रनों से मुकाबला हार गई। वेस्टइंडीज के लिए कप्तान हेली मैथ्यूज ने सर्वाधिक (56) रनों की पारी खेली। शमैन कैंपबेल ने (53) रन बनाये। दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजी आक्रमण के आगे शिनेल हेनरी (39), जायडा जेम्स (18), जैनिलिया ग्लास्गो, स्टेफनी टेलर और किआना जोसेफ (17) रन बनाकर आउट हुई। ऐफी फ्लेचर ने (नाबाद 19) रनों की पारी खेली। दक्षिण अफ्रीका के लिए एन म्लाबा ने 10 ओवरों में 33 रन देकर चार विकेट लिये। मैरीजान कैप्प ने छह ओवर में 42 रन देकर दो विकेट झटके। अयांडा हलुबी, नडीन डी क्लर्क, क्लोई ट्राइऑन, एन शंघासे ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

अग्रसेन प्रीमियर लीग के पांचवें सीजन की शुरुआत

जयपुर, 15 जून। जयपुर के सांगानेरी गेट स्थित अग्रवाल कॉलेज में शनिवार को अग्र युवा शक्ति जयपुर की ओर से अग्रसेन प्रीमियर लीग के पांचवें सीजन की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। ओपन कैटेगरी के अलावा इस बार बॉक्स क्रिकेट में बच्चे,

युवा, महिलाएं, बुजुर्ग और पारिवारिक टीमें भी हिस्सा ले रही हैं। आयोजकों ने बताया कि इस बार का मकसद हर उम्र के लोगों को क्रिकेट के जरिए जोड़ना है। कार्यक्रम की शुरुआत में राष्ट्रगान और मसाल जलाकर समाज के बीच में एकता का संदेश दिया गया। लीग का आयोजन अग्र युवा शक्ति जयपुर कर रही है। मीडिया प्रभारी राजेश अग्रवाल ने बताया कि बॉक्स क्रिकेट के लिए इस बार पांच खास कैटेगरी तैयार की गई हैं ताकि बच्चों से लेकर फैमिली तक सभी को खेलने का मौका मिल सके। लीग में इस बार 8 टीमें हिस्सा ले रही हैं, जिनमें कुल 104 खिलाड़ी शामिल हैं।

राजस्थान राज्य जिम्नास्टिक संघ के पर्यवेक्षक भरत सिंह की उपस्थिति में निर्वाचन सम्पन्न

जयपुर, 15 जून। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार डॉ छोटू सिंह द्वारा जिला क्रीड़ा परिषद जोधपुर के भवानी सिंह व विष्णु कच्छवाह, जिला ओलिंपिक संघ के पुष्पेन्द्र सिंह पंवार एवं राजस्थान

राज्य जिमनास्टिक संघ के पर्यवेक्षक भरत सिंह की उपस्थिति में निर्वाचन संपन्न करवाए। डॉ छोटू सिंह, निर्वाचन अधिकारी, ने बताया कि सभी पदो पर निर्विरोध निर्वाचन हुए, जिसमें परमेश्वर प्रजापत अध्यक्ष, डॉ शक्ति सिंह रावलोत सचिव और भवानी सिंह कोषाध्यक्ष, कमरूदीन, मनोहर लाल काला, डॉ अरुण शर्मा व श्री जितेन्द्र सिंह राठौड़ उपाध्यक्ष, डॉ भागीरथ सिंह, पृथ्वी सिंह राजपुरोहित, श्री विक्रम सिंह व डॉ अंजू मेवाडा, सह सचिव तथा सदस्य गण जेठा राम, कैलाश पुरोहित, कुणाल सिंह खंगारोत, कपिल, विक्रम सिंह व वर्षा शर्मा निर्वाचित हुए। सभी इकाइयों ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी व सदस्यों को बधाई व उनके उज्जवल भविष्य की शुभ कामनाएँ प्रेषित की।

अराध्या, सुहाना, कृतिक, मधुरम एवं प्रयान ने जीते गोल्ड मेडल

जयपुर, 15 जून। स्पोर्टस एकेडमी दुवारा वर्धमान इंटरनेशनल स्कूल, मानसरोवर में तैराकी प्रतियोगिता 2025 आयोजन किया गया। जिसमें जयपुर जिले के लगभग 300 प्रतिभागियों (महिला

व पुरुषों) ने भाग लिया। सपूर्ण का सफल सचालन राष्ट्रीय तैराक जितेन्द्र शर्मा ने किया। विभिन्न वर्ग की प्रतियोगिताओं में अराध्या, सुहाना, कृतिक, मधुरम एवं प्रयान शमा ने गोल्ड एवं दक्ष प्रणव, निवा, काव्या, सत्यम, सुहानी, पूर्वाश नित्या, पलवित, अर्थव, पुनीत आदि ने सिल्वर व कांस्य पदक प्राप्त किये। आयोजक नितिन स्वामी; विकास खण्डेलवाल कोच जितेन्द्र शर्मा, नेहा शर्मा, अंकित एवं देवेश ने विजेताओं को शुभकामनाएँ दी।

भारतीय महिला हॉकी टीम को ऑस्ट्रेलिया ने 2-1 से हराया

लंदन, 15 जून। भारतीय महिला हॉकी टीम को एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2024-25 के रविवार को खेले गये मैच में ऑस्ट्रेलिया के हाथों 1-2 से हार का सामना करना पड़ा। आज यहां ली वैली हॉकी एंड टेनिस सेंटर में खेले गये मुकाबले में वैष्णवी विट्ठल फाल्के ने तीसरे मिनट में गोलकर भारतीय महिला टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई। इसके बाद दूसरे और तीसरे क्वार्टर में दोनों टीमें कई और मौकों पर गोल करने में विफल रही। तीसरे क्वार्टर में ऑस्ट्रेलिया ने अपना तेज आक्रमण जारी रखा और उसे 37वें मिनट में एमी लॉटन ने गोलकर सफलता दिलाई। इसी के साथ स्कोर 1-1 से बराबर हो गया। मैच के अंतिम क्वार्टर में दोनों टीमें बराबरी पर थीं। भारत को पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन ऑस्ट्रेलियाई गोलकीपर ने शानदार बचाव करते हुए उसे विफल कर दिया।

साय से बीसीसीआई उपाध्यक्ष शुक्ला ने की भेंट

रायपुर 15 जून। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से रविवार को यहां मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में राज्य से राज्यसभा सांसद एवं भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने सौजन्य भेंट की। साय ने राजीव शुक्ला का कोसा वस्त्र एवं बेल मेटल से निर्मित स्मृति चिन्ह भेंटकर आत्मीय स्वागत किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ में क्रिकेट सहित अन्य खेलों को बढ़ावा देने से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई।

बन्ना हॉप कैच को एमसीसी ने माना अवैध

इंटरनेशनल क्रिकेट में अगले साल अक्टूबर से लागू होगा नियम

नई दिल्ली, 15 जून। क्रिकेट के नियम बनाने वाली संस्था मेरिलबोन क्रिकेट क्लब ने बन्नी हॉप यानी सीमा रेखा के बाहर कई बार हवा में उछकर कैच करने को अवैध माना है। इसे लेकर नए नियम इसी महीने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल की प्लेइंग इलेवन और अगले साल अक्टूबर से एमसीसी के नियमों में शामिल कर लिया जाएगा।

इस नए नियम के लागू होने के बाद बीबीएल 2023 के दौरान माइकल नेसर और 2020 में मैट रेनशॉ की मदद से टॉम बैंटन द्वारा लिए गए शानदार कैच वैध नहीं माने जाएंगे। आईसीसी ने इस लेकर अपने सदस्य बोर्ड को एक नोट भेजा है, जिसमें कहा गया है कि वर्तमान नियमों के अनुसार कुछ बेहतरीन कैच देखने को मिले लेकिन इस नियम के कारण कुछ असामान्य देखने वाले कैच भी वैध माने गए, जो अधिकतर क्रिकेट प्रेमियों को भी अनुचित लगे। दरअसल, एमसीसी ने नेसर द्वारा लिए गए कैच का जिक्र करते हुए कहा कि फील्डर ने बाउंड्री के अंदर कैच पूरा करने से पहले बन्नी हॉप किया। हालांकि, नियमों के अनुसार ये तब तक सही था लेकिन ऐसा लग रहा था कि फील्डर सीमा रेखा से काफी आगे निकल गया था। इन दोनों घटनाओं ने नई बहस को जन्म दिया, जिसके बाद आईसीसी और एमसीसी को अपने नियम 19.5.2 की समीक्षा करनी पड़ी।

क्या है बन्नी हॉप कैच?

एमसीसी ने अब साफ कर दिया है कि सीमा रेखा के पार से छलांग लगाने के बाद गेंद के साथ दूसरी बार संपर्क बनाने के लिए किसी भी क्षेत्ररक्षक को फील्ड ऑफ प्ले में आना होगा नहीं तो उसे बाउंड्री पार मान लिया जाएगा। नोट में कहा गया है कि एमसीसी ने इसे एक नया शब्द बन्नी हॉप दिया है जिसे अब अवैध माना जाएगा, लेकिन इस तरह के कैच में क्षेत्ररक्षक गेंद को सीमा रेखा के अंदर फेंकने के बाहर कदम रखता है और फिर सीमा रेखा के अंदर जाकर उसे कैच करता है तो इस तरह के कैच को वैध माना जाएगा।

वहीं नए नियम वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के नए चक्र की शुरुआत में ही लागू हो जाएंगे, जिसका पहला मैच 17 जून से श्रीलंका और बांग्लादेश के बीच गॉल में खेला जाएगा। नियमों में बदलाव आधिकारिक तौर पर अक्टूबर 2026 से लागू होगा।

चोटिल डॉगेट ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम से हुए बाहर, एबॉट को बुलाया

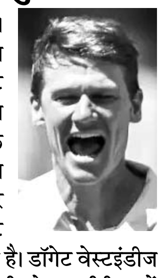

सिडनी, 15 जून। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज ब्रेंडन डॉगेट कूल्हे की चोट के कारण वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली टेस्ट सीरीज से बाहर हो गये है और उनकी जगह सीन एबॉट को टीम में बुलाया गया है। डॉगेट वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली टेस्ट सीरीज में ऑस्ट्रेलियाई टीम का हिस्सा थे। लेकिन अब वह चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया लौट आएंगे। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल खेलने वाली टीम ऑस्ट्रेलियाई टीम में डॉगेट रिजर्व खिलाड़ी के रूप में शामिल थे। डोगेट की तरह एबॉट भी टेस्ट स्तर पर अनकैप्ड हैं, वे इस साल की शुरुआत में श्रीलंका दौरे पर गई ऑस्ट्रेलिया की टीम में थे और भारत के खिलाफ घरेलू सीरीज के दौरान भी टीम में थे। लेकिन वह अंतरराष्ट्रीय टेस्ट में अभी तक पर्दापण नहीं कर पाये है। ऑस्ट्रेलिया की टीम 25 जून से शुरू होने वाले पहले टेस्ट मैच से पहले अगले सप्ताह के मध्य में बारबाडोस पहुंचेगी। इसके बाद ग्रेनेडा और जमैका में मैच होंगे। जमैका में होने वाला मैच दिन-रात का होगा।

34वीं सीनियर राष्ट्रीय वुशू प्रतियोगिता में राजस्थान के लिए गुरप्रीत सिंह ने ताईची जियान से जीता पहला रजत पदक

जयपुर, 15 जून। भारतीय वुशू संघ व राजस्थान वुशू संघ के तत्वावधान में दिनांक 14 से 19 जून तक पूर्णिमा यूनिवर्सिटी में आयोजित हो रही 34वीं सीनियर राष्ट्रीय (पुरुष/महिला) वुशु प्रतियोगित के दूसरे दिन राजस्थान के लिए गुरप्रीत सिंह ने ताईची जियान मे जीता पहला रजत पदक। दूसरे दिन के समारोह के अतिथि राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के पूर्व सदस्य हरीश यादव एवं राजकुमार शर्मा पूर्व प्रवक्ता राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी रहे हैं। राजस्थान वूशु संघ के अध्यक्ष हीरानंद कटारिया ने सभी अतिथियों का साफा पहनाकर व बूके भेट कर स्वागत अभिनन्दन किया। राजेश कुमार के अनुसार दूसरे दिन के परिणाम निम्न प्रकार रहेः-

ताउलू के परिणामः- ताईची जियान पुरुषः स्वर्ण पदक भूमेश्वर मीताई (मणिपुर),

ताईची कुआन महिलाः रजत पदक गुरप्रीत सिंह (राजस्थान) कांस्य पदक जेय (सीआरपीएफ) कांस्य पदक जोना प्रिन्सी (मणिपुर) स्वर्ण पदक ओलिका (मणिपुर), रजत पदक कोरोलिना (साई)

ताईची कुआन पुरुषःस्वर्ण पदक, नगम्बा (साई).

रजत पदक, मोनिश (मणिपुर)

कांस्य पदक, भूमेशवर मीताई (मणिपुर)

शान्शु के परिणाम संलग्न हैं:- शान्शु के परिणामः- 48 किलो पुरूष वर्गः राजस्थान के अंकित ने चंडीगढ़ के यश, राजस्थान के मुकुंद ने एसएसबी के थॉकचोम सुरेंद्र सिंह को, हरियाणा के साहील ने एमपी के अंकित कुमार सैन को हराया।

52 किलो पुरूष वर्गः महाराष्ट्र के प्रफुल ने मणिपुर के नानाओ सिंह, इंडिया पुलिस के अभीजीत ने असाम के मार्तिनजय, मेघालय के लैमर्फग ने तेलंगाना के जदेव एवं कर्नाटक के हुशान्त ने कैरल के अक्षय को हराया।

56 किलो पुरूष वर्गः हरियाणा के मनीष ने उतराखंड के सागीर हुसेन को एएससीबी के चंदरा सिंह ने आईटीबीपी के सुनिल सिंह को एसएससीबी के सुनिल सिंह ने सीआरपीएफ के सलीम कँडे सिंह को एवं चंडीगढ़ के ऋतिक चंद्रा ने गोवा के गुलाम मसुद को हराया।

60 किलो पुरूष वर्गः हरियाणा के चिराग ने सीआरपीएफ के ललित को, वेस्ट बंगाल के प्रेम ने जम्मू कश्मीर के मो सलीम को, एसएसबी के नरेश ने यूपी के किश को एवं एएससीबी के थांगजाम ने साई नरेश को हराया।

45 किलो महिला वर्गः राजस्थान की रिंकु ने बीएसएफ की वेष्नवी को, राजस्थान की किरण पारीक ने एसएसबी की टंव्किंल को, साई की प्रिया कुमारी ने बिहार की वेष्नवी को, सीआरपीएफ की अंशु कुमारी ने एमपी की सुहानी को हराया।

52 किला महिला वर्गः राजस्थान की अंजलि ने झारखंड की पल्लवी को, राजस्थान की मेघा जोशी ने ऑल इंडिया पुलिस की छवि को, एमपी की आशा ने उत्तराखंड की मंयाका को हराया। 56 किला महिला वर्गः राजस्थान की सुर्याशी ने उत्तराखंड की उन्नती को, हरियाणा की ज्योति ने गुजरात ने धुमा का, राजस्थान की यक्षिता ने दिल्ली की प्रिती को हराया। सभी विजेता खिलाडियो ने द्वितीय रांउड में प्रवेश किया।

आर.डी. बाहेती जिला बैडमिंटन में गरिमा ने अंडर-19 लड़कियों के एकल व युगल खिताब जीते

जयपुर, 15 जून। आर. डी. बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर जिला बैडमिंटन प्रतियोगिता में गरिमा यादव ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अंदर-19 लड़कियों का एकल व युगल दोनों खिताब जीते। वही पदमजा सिंह भी अपना प्रदर्शन जारी रखते हुए उन्होंने अंदर 13 गर्ल्स सिंगल्स का खिताब जीता। आज खेले गए फाइनल में अंडर-19 गर्ल्स सिंगल्स के लंबे व कड़े संघर्ष मैच में गरिमा यादव ने तीन गेमों में 18-21 ,21-18, 23-21 से निधि को 48 मिनट में हराया तथा गरिमा यादव ने अंदर-19 लड़कियों के डबल्स में अपनी पार्टनर अदविका अग्रवाल के साथ खेलते हुए फाइनल में नव्या अरोड़ा व प्रतिष्ठा की जोड़ी को 21-16, 21 -18 से हारा दूसरा खीताब जीता ने पद्मजा सिंह ने अंडर 13 गर्ल्स सिंगल्स में रिद्धि बत्रा को 21 -14 ,21 -15 से हराया।

अंडर 11 लड़कों के सिंगल्स सेमीफाइनल में रक्षित सिंह मेहरा ने 21-4 ,21-3 से लक्षित रेवार को तथा दूसरे सेमीफाइनल में नैतिक बंसल ने 21- 9 ,21- 12 से गर्वित दहिया को हरा फाइनल में प्रवेश किया।

लड़कों के अंडर 13 सिंगल्स में रक्षित सिंह मेहरा व लक्ष्यराज सिंह फाइनल में पहुंचे वही लड़कों के अंडर 13 डबल्स में अनीस चाहर व प्रणव मूलचंदानी की जोड़ी का फाइनल लक्ष्यराज सिंह रक्षित सिंह मेहरा से होगा। अंडर-19 बॉयज सिंगल्स में भानु प्रताप ने सेमी फाइनल में आयुष यादव को 24-22, 21-15 से हरा फाइनल में प्रवेश किया। इसी वर्ग के दूसरे सेमीफाइनल में अंबर चंद्रवंशी ने भव्य दीप सिंह को 21 -17, 21 -17 से हरा फाइनल में प्रवेश किया।

बॉयज अंडर-19 डबल में अंबर चंद्रवंशी प्रांजल कौशिक का फाइनल कल भानु प्रताप व विशाल चौधरी की जोड़ी से होगा जिला सचिव मनोज दासोत ने आज के अतिथि चार्टर्ड अकाउंटेंट अशोक हरकावत व वह जिला बैडमिंटन पैटर्न राजीव नागौरी का परिचय खिलाड़ियों से कराया। आयोजन सचिव अतुल गुप्ता के अनुसार शेष फाइनल कल दोपहर 2:30 बजे से खेले जाएंगे तथा परितोषित वितरण कल सवाई मानसिंह स्टेडियम के इनडोर बैडमिंटन हॉल में शाम 5:00 से होगा जिसके मुख्य अतिथि विधायक कालीचरण सराफ तथा विशिष्ट अतिथि आर. डी.बाहेती व प्रदीप बाहेती होंगे तथा यश समिति के अध्यक्ष आशीष सराफ होंगे

भारतीय फुटबॉल में विवाद जारी

कल्याण चौबे ने बाईचुंग भूटिया पर लगाए गंभीर आरोप

नई दिल्ली, 15 जून। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने शुक्रवार को बाईचुंग भूटिया पर अपने निहित स्वार्थ के लिए व्यावसायिक अकादमियां चलाने का आरोप लगाया। राष्ट्रीय टीम के पूर्व कप्तान ने हालांकि इन आरोपों को निराधार बताया है।चौबे का ये आरोप हाल ही में एएफसी एशियाई कप क्वालिफाइंग दौर के मैच में हांगकांग से भारत की चौंकाने वाली हार के बाद भूटिया द्वारा एआईएफएफ प्रमुख के पद से इस्तीफा मांगने के जवाब में था।

भूटिया ने कहा था कि चौबे ने भारतीय फुटबॉल को नष्ट कर दिया है। चौबे से जब भूटिया की टिप्पणियों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि वह अपने नाम से एक व्यावसायिक फुटबॉल स्कूल चलाते हैं। वह 20 अलग अलग शहरों में हैं। इस फुटबॉल स्कूल में खिलाड़ी 1000 से एक लाख रुपये तक का भुगतान करते हैं। उनसे एक हजार से 10000 रुपये तक महीना लिया जाता है।

चौबे बाईचुंग भूटिया फुटबॉल स्कूल का जिक्र कर रहे थे जिसकी देश भर में कई अकादमियां हैं। एआईएफएफ अध्यक्ष ने कहा कि ये पूरी तरह से निहित स्वार्थ है पूरी तरह से व्यावसायिक है। वे परिवारों की भावनाओं, लोगों की भावनाओं के साथ खेलकर अनुचित लाभ उठा रहे हैं। लोग सोचते हैं कि उस व्यक्ति ने भारतीय फुटबॉल के उच्चतम स्तर पर पहुंच बनाई है और अगर मैं उनकी अकादमी का हिस्सा बन सकता हूं तो मैं भी एक फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में अपना जीवन बना सकता हूं।

वहीं भूटिया ने चौबे के आरोप को खारिज करते हुए कहा कि चौबे को इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि अकादमी कैसे चलाई जाती है। उन्होंने कहा है कि उन्होंने अपने फुटबॉल स्कूल अपनी मेहनत की कमाई से खोले हैं। भूटिया ने सिक्किम से पीटीआई से कहा कि, चौबे ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास जानकारी का आभाव है। वह बेबुनियाद आरोप लगा रहे हैं। उन्हें फुटबॉल अकादमी के बारे में कुछ भी नहीं पता। मैंने 14 साल पहले अपनी मेहनत की कमाई से फुटबॉल स्कूल खोले हैं। राज्यों, केंद्र और कॉरपोरेट्स से कोई वित्तीय सहायता नहीं मिली।

साथ ही उन्होंने कहा कि, पिछले दो सालों में बच्चों की मदद के लिए केवल कुछ ही प्रायोजक आए हैं। देश भर में मेरे स्कूलों में हर दिन 6000 से ज्यादा बच्चे खेलते हैं। एआईएफएफ भी ऐसा नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि, वह फीस की बात कर रहे हैं लेकिन मेरे स्कूलों में 150 योग्य कोच और उनके द्वारा इस्तमेला किए जा रहे मैदानों का खर्च कौन उठाएगा, कोई भी मुझे वित्तीय रूप से मदद नहीं कर रहा है। अकादमी चलाने के लिए मुझे फीस तो लेनी ही होगी। लेकिन मुझे नहीं पता कि वह कहां से 10000 रुपये प्रति बच्चा प्रति माह की फीस की बात कर रहे हैं हम इतना शुल्क नहीं लेते हैं।

यूनियन फुटबॉल क्लब द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन स्पोर्ट्स ट्रेनिंग कैंप का समापन

जयपुर, 15 जून। यूनियन फुटबॉल क्लब द्वारा 15 मई से 15 जून तक आयोजित ग्रीष्म कालीन स्पोर्ट्स ट्रेनिंग कैंप का समापन एवं प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन प्रफुल्ल कुमार (आईपीएस) ने आज रविवार प्रातः 8 बजे यूनियन फुटबॉल क्लब ग्राउंड नंबर दो, रामनिवास बाग जयपुर पर किया।

इस अवसर पर यूनियन क्लब के सचिव महिपाल स्वामी, उपाध्यक्ष सन्नी सेबेस्टियन, कॉर्डिनेटर अभिनव स्वामी, भारत व इंग्लैंड में कंप्लीट स्पोर्ट्स सॉल्यूशन की डायरेक्टर दीप्ति उम्मत, प्रतिष्ठा स्कूल की अध्यक्ष अर्पिता माथुर, राष्ट्रदूत के यादवेन्द्र शर्मा, पूर्व खेल अधिकारी एवं कबड्डी कोच राजनारायण शर्मा, , योग गुरु भव्या राजावत, तथा फुटबॉल एवं कबड्डी के खिलाड़ी और उनके अभिभावक, आदि गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शिविर में पद्मनाभ, प्रतिष्ठा, ऋषि, देवांशी, अफसान, हिमांशी, मानविक, कपीश, आरुष, रुद्राक्ष, विक्रमान को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मेडल और सर्टिफिकेट प्रदान किये गये।

क्लब समन्वयक और आयोजक अभिनव स्वामी ने बताया हर साल लगने वाले कैंप के दौरान बच्चों को खेल प्रशिक्षण के साथ साथ स्वस्थ आहार देकर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जाता है.अभिनव स्वामी ने बताया कि यूनियन फुटबॉल क्लब भारत का सबसे पुराना फुटबॉल क्लब है .और राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी क्लब की मुख्य संरक्षक हैं। उनके समर्थन और सानिध्य मे ये क्लब फ़िर से अपनी पहचान बनाने में समर्थ होता दिख रहा है।

जेक फ्रेजर-मैकगर्क का तूफानी अर्धशतक यूनिकॉर्न्स ने लॉस एंजिल्स नाइट राइडर्स को हराया

न्यूयॉर्क, 15 जून। जेक फ्रेजर-मैकगर्क के 38 गेंदों में (88) रनों की तूफानी अर्धशतकीय पारी के बाद जेवियर बार्टलेट और हारिस राउफ (चार-चार विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी की बदौलत सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न्स ने लॉस एंजिल्स नाइट राइडर्स को 32 रनों से हरा दिया। जेक फ्रेजर-मैकगर्क शनिवार को खेले गये मुकाबले में 38 गेदों में 11 छक्के और दो चौके लगाते हुए (88) रनों की पारी खेलते अपनी टीम का स्कोर आठ विकेट पर 219 रन का स्कोर पहुंचाया। वाशिंगटन फ्रीडम के खिलाफ सीजन के पहले मैच में 151 रन बनाकर एमएलसी इतिहास में सर्वोच्च स्कोर का रिकॉर्ड तोड़ने वाले फिल एलन 27 गेंदो में 52 रन जड़कर अर्धशतक बनाया। उन्होंने जेक फ्रेजर-मैकगर्क के साथ दूसरे विकेट के लिए सिर्फ 55 गेंदों पर 121 रन जोड़े। 220 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी लॉस एंजिल्स नाइट राइडर्स ने दूसरे ओवर में ही छह रन पर सलामी बल्लेबाज एलेक्स हेल्स का विकेट गंवा दिया। उन्मुक्त चंद ने 32 गेंदों में (53), मैथ्यू ट्रॉम्प ने 31 गेंदों में (41) और कप्तान सुनील नारायण ने 13 गेंदों में (27) बनाये। यूनिकॉर्न्स के गेंदबाजों ने लॉस एंजिल्स नाइट राइडर्स की टीम को 19.5 ओवरों में 187 के स्कोर पर समेट कर मुकाबला 32 रनों से जीत लिया।

रादुकानू ने बर्लिन ओपन से नाम लिया वापस

लंदन, 15 जून। ब्रिटेन की स्टार महिला टेनिस खिलाड़ी एम्मा रादुकानू ने पीठ की समस्या के कारण सोमवार से शुरु हो रहे बर्लिन ओपन से अपना नाम वापस ले लिया है। 22 वर्षीय खिलाड़ी फ्रेंच ओपन से पहले पिछले महीने स्ट्रासबर्ग में प्रतिस्पर्धा करने के बाद से पीठ की समस्या से जूझ रही हैं। पूर्व यूएस ओपन चैंपियन ने शुक्रवार को क्वींस में झेंग किनवेन से क्वार्टर फाइनल में हारने के दौरान ऑफ-कोर्ट मेडिकल टाइमआउट लिया। रादुकानू ने कहा, यह पिछले कुछ हफ्तों से चल रहा है, और मुझे पहले भी पीठ की समस्या हो चुकी है। यह मेरी कमजोरी है। मुझे पता है कि मुझे इसका अच्छे से ख्याल रखना होगा। इसे ठीक करने के लिए मुझे आराम की जरूरत है।

वेस्टइंडीज ने आयरलैंड को दिया 257 रनों का लक्ष्य

ब्रेडी, 15 जून। एविन लुइस (91), कप्तान साई होप (51) और केसी कार्टी (नाबाद 49) की तूफानी पारियों के दम पर वेस्टइंडीज ने रविवार को तीसरे टी-20 मुकाबले में आयरलैंड को जीत के लिए 257 रनों का लक्ष्य दिया। आज यहां आयरलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की एविन लुइस और साई होप की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 122रन जोड़े। 11वें ओवर में साई होप के रूप में वस्टेइंडीज का पहला विकेट गिरा। उन्हें मैकार्थी ने आउट किया। साई होप ने 27 गेदों में चार चौके और चार छक्के लगाते हुए (51) रनों की आतिशी पारी खेली।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा की तैयारियों के संबंध में आयोजित बैठक को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि पखवाड़े के दौरान जिला कलैक्टर 5 हजार गांवों के अलावा अन्य गांवों में भी सर्वे करें ताकि अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़ा 24 जून से चलाया जायेगा

मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि इसमें आमजन को जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुनिश्चित किया जायेगा

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गाँव योजना'' के पहले चरण में 5 हजार गाँवों में सभी बीपीएल परिवारों को गरीबी रेखा के ऊपर लायेंगे।**
- **मुख्यमंत्री ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) को प्रदेश में सवा करोड़ लोगों द्वारा योग करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।**

जयपुर, 15 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार चार जातियों, युवा, महिला, किसान और गरीब के उत्थान के लिए समर्पित होकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि अन्त्योदय के लक्ष्य की प्राप्ति के क्रम में वंचितों को वरीयता देते हुए राज्य सरकार 24 जून से 9 जुलाई तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा संचालित करने जा रही है। इसके माध्यम से व्यापक गतिविधियां संचालित कर जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आमजन को सुनिश्चित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री शर्मा रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा (24 जून से 9 जुलाई) की तैयारियों के संबंध में आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार का संकल्प ''गरीबी मुक्त राजस्थान'' बनाना है। इसी दिशा में हमारी सरकार ने 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना' शुरू की है, जिसके माध्यम से हम पहले चरण में 5 हजार गांवों में सभी बीपीएल परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाएंगे। उन्होंने कहा कि पखवाड़े के दौरान जिला कलक्टर इन 5 हजार गांवों के अलावा अन्य गांवों में भी सर्वे का कार्य प्रारंभ करें ताकि अधिक से अधिक लोगों को इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित किया जा सके।

उन्होंने कहा कि पखवाड़े के अन्तर्गत प्रतिदिन ग्राम पंचायत स्तर पर शिविरों का आयोजन किया जाएगा। जिला कलक्टर इन शिविरों के सफल आयोजन के लिए नोडल अधिकारी की नियुक्ति करें। मुख्यमंत्री ने पखवाड़े के संबंध में 20 जून को ग्राम सभा आयोजित करने के निर्देश दिए ताकि ग्रामीणों को इसकी सम्पूर्ण जानकारी मिल सके।

शर्मा ने कहा कि पखवाड़े के अन्तर्गत योजना में लक्षित परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने के लिए योजनाओं का लाभ सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पखवाड़े के दौरान रास्तों व जल संरचनाओं से अतिक्रमण हटाने और लम्बित राजस्व प्रकरणों में सहमति बनाने का प्रयास किया जाए।

मुख्यमंत्री ने मानसून की तैयारियों के दृष्टिगत संबंधित विभागों को एक्शन मोड पर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नालों की सफाई और उसका सत्यापन सुनिश्चित किया जाए।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने योग को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान और सम्मान दिलाया है। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर प्रदेश के सवा करोड़ लोगों द्वारा योग करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

बैठक में मुख्य सचिव सुधांश पंत सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे तथा जिला कलक्टर वीसी के माध्यम से जुड़े।

मुंबई अमेरिकी वाणिज्य दूतावास को बम से उड़ाने की धमकी

- **पुलिस को कार्यवाही में कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली, इसलिए फर्जी कॉल माना जा रहा है।**

मुंबई, 15 जून। मुंबई के बांद्रा इलाके में अमेरिकी महावाणिज्य दूतावास के कार्यालय में एक अज्ञात व्यक्ति ने फोन करके बम होने की धमकी दी, लेकिन यह कॉल फर्जी साबित हुई।

बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) पुलिस ने रविवार को बताया कि अमेरिकी वाणिज्य दूतावास कार्यालय में शनिवार करीब आठ बजे एक अज्ञात ने फोन किया और यहां बम होने की बात कही। सूचना मिलते ही बीकेसी पुलिस अधिकारी और बम निरोधक दस्ते की टीम ने मौके पर पहुंचकर पूरे कार्यालय की जांच की लेकिन कहीं कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली।

अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली गयी है। अज्ञात व्यक्ति के कॉल करने के पीछे के मकसद का पता लगाने से संबंधित जांच शुरू कर दी गयी है।

साइप्रस के राष्ट्रपति ने हवाई अड्डे पर मोदी का स्वागत किया

हवाई अड्डे पर बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय के लोग भी मोदी के स्वागत के लिए आए

- **साइप्रस की दो दिन की यात्रा में द्विपक्षीय संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने के लिए व्यापक चर्चा होगी। यहाँ से मोदी दो दिन जी-7 शिखर सम्मेमलन में भाग लेने के लिए कैनडा जायेंगे। भारत लौटते समय वे क्रोएशिया का भी दौरा करेंगे।**

साइप्रस, 15 जून। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीन देशों की यात्रा के पहले चरण में आज साइप्रस पहुंचे जहां राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडोलिड्स ने स्वयं हवाई अड्डे पर मोदी का स्वागत किया। मोदी का विशेष विमान भारतीय समयानुसार करीब पांच बजे साइप्रस के लार्नाका अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। हवाई अड्डे पर बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय के लोग भी मौजूद थे।

साइप्रस के राष्ट्रपति के निमंत्रण पर मोदी 15-16 जून को यहां की आधिकारिक यात्रा पर आए हैं।

मोदी ने एक्स पर अपनी एक पोस्ट में लिखा, साइप्रस में पहुंच गया हूं। हवाई अड्डे पर मेरा स्वागत करने के विशेष भाव के लिए साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडोलिड्स को मेरा आभार व्यक्त किया है। यह यात्रा भारत-साइप्रस संबंधों, विशेष रूप से व्यापार, निवेश और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण गति प्रदान करेगी।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स पर कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साइप्रस पहुंच गए हैं। गहरे ऐतिहासिक संबंधों को प्रतिबिंबित करने वाले एक विशेष संकेत के रूप में राष्ट्रपति क्रिस्टोडोलिड्स और विदेश मंत्री कॉन्स्टेंटीनोस कॉम्बोस ने हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री का स्वागत किया। द्विपक्षीय संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने के लिए व्यापक चर्चाएं होनी हैं।

मोदी तीन देशों के दौरे पर हैं। साइप्रस के बाद वह 16-17 जून को कनाडा में जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे और वापसी में क्रोएशिया का भी दौरा करेंगे।

मोदी ने तीन देशों की यात्रा पर रवाना होने से पहले अपने वक्तव्य में कहा, आज, मैं साइप्रस गणराज्य, कनाडा और क्रोएशिया की तीन देशों की यात्रा पर जाऊंगा। 15-16 जून को मैं राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडोलिड्स के निमंत्रण पर साइप्रस का दौरा करूंगा। साइप्रस भूमध्यसागरीय क्षेत्र और यूरोपीय संघ में एक करीबी दोस्त और एक महत्वपूर्ण भागीदार है। यह यात्रा ऐतिहासिक संबंधों को मजबूत करने और व्यापार, निवेश, सुरक्षा, प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में हमारे संबंधों का विस्तार करने और लोगों के बीच आदान-प्रदान को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करेगी।

अमेठी में सड़क दुर्घटना में 5 की मौत

- **हरियाणा से बिहार शव लेकर जा रही तेज रफ्तार एम्बुलैंस की पिकअप से टक्कर हुई। इसमें एम्बुलैंस के परखच्चे उड़ गए व उसमें सवार चालक सहित चार की मौके पर मौत हो गई।**

अमेठी, 15 जून। उत्तर प्रदेश में अमेठी के शुकुल बाजार थाना क्षेत्र में रविवार सुबह पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर शव लेकर जा रही एक एंबुलेंस एक वाहन से टकरा गयी। इस हादसे में पांच लोगों की मौत हो गयी जबकि एक व्यक्ति मामूली रुप से घायल हो गया।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर माइल स्टोन 59 के नजदीक रविवार सुबह यह हादसा उस समय हुआ जब शव लेकर हरियाणा से बिहार जा रही तेज रफ्तार एम्बुलेंस ने पिकअप वाहन को पीछे से टक्कर मार दी। इस हादसे में एंबुलेंस के परखच्चे उड़ गये और उसमें सवार चालक समेत पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी। हादसे में पिकअप चालक को भी मामूली चोट आयी है। स्थानीय पुलिस और यूपीडा के अधिकारी राहत व बचाव कार्य में जुटे हुए हैं। थानाध्यक्ष शुकुल बाजार अभिनेष कुमार ने बताया कि मृतकों की पहचान राजकुमार शर्मा उर्फ सतीश शर्मा निवासी राम भद्रपुर थाना कल्यानपुर जिला समस्तीपुर बिहार, रवि शर्मा निवासी राम भद्रपुर थाना कल्यानपुर जिला समस्तीपुर बिहार, सरफराज निवासी नालहर हरियाणा, आबिद फिरोजपुर थाना जिला नूह हरियाणा, फुलो शर्मा, निवासी रवि टोला थाना हथौड़ी जिला समस्तीपुर बिहार के तौर पर की गयी है। शम्भूराय, निवासी पुरी नाही थाना वारिस नगर, समस्तीपुर, बिहार, घायल है जिसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।

केन्द्र सरकार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भूमिका है। सड़कों के विस्तार और सुदृढ़ीकरण से सुगम परिवहन संभव होगा, जिससे औद्योगिक विकास को गति मिलेगी।

जम्मू-कश्मीर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तनाव चरम पर है। इन छात्रों की रिहाइश ईरान के रणनीतिक सैन्य प्रतिष्ठानों के निकट ही है।

इन क्षेत्रों में इज़रायली हमलों की आशंका अधिक है। वहां रह रहे छात्र लगातार हवाई हमलों, वायु रक्षा सायरनों और सैन्य गतिविधियों की आवाजें सुन रहे हैं, जिससे भय और बेचैनी का माहौल बना हुआ है।

पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. फारूक अब्दुल्ला ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि भारत को इस संकट में निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए। हम इजरायल और ईरान से संयम बरतने और बातचीत से समाधान निकालने की अपील करते हैं।

साथ ही भारत को अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए हरसंभव कदम उठाना चाहिए।

उत्तराखंड में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उत्तराखंड कांग्रेस नेता और नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने चारधाम यात्रा में लगातार हो रही हेलीकाप्टर दुर्घटना पर गंभीर सवाल खड़ा करते हुए कहा कि सड़क से लेकर आसमान तक नियोजन और जवाबदेही में बुनियादी तौर पर कुछ गड़बड़ है जिसके चलते दुर्घटनाएं हो रही हैं। इसके लिए अब जवाबदेही तय होनी ही चाहिए। आर्य ने यहां जारी एक बयान में कहा कि दो मई को केदारनाथ के कपाट खुलने के बाद यह पांचवीं दुर्घटना है। गत आठ मई को सबसे पहले गंगोत्री जा रहा हैलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हुआ और इसमें छह लोगों की मृत्यु हुई। तब से लगातार दुर्घटना सामने आ रही हैं। नगर विमानन निदेशालय (डी.जी.सी.ए.) ने यात्रियों की संख्या भी तय की है लेकिन आज जो हेलीकॉप्टर क्रैश हुआ, उसमें पायलट सहित छह लोग थे। उन्होंने सवाल किया कि क्या ज्यादा कमाई के लिए डीजीसीए के मानकों की अवहेलना की जा रही है।

कूनो से निकला ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से अपील की है कि चीते कभी नागरिकों को क्षति नहीं पहुंचाते इसलिए उनके साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ नहीं करें। बताया गया है कि ग्रामीण भी क्षेत्र में समूह बनाकर निकल रहे हैं और बच्चों को घरों से बाहर नहीं निकलने दे रहे हैं।

बिजली गिरने से जौनपुर में 4, प्रयागराज में 5 की मृत्यु

रविवार को दिन में तेज हवा के साथ हुई आँधी व बारिश में यह हादसा हुआ

- **जौनपुर के एक गाँव में बगीचे में आम बीनते समय दो भाईयों सहित 4 लोग बिजली की चपेट में आ गए। प्रयागराज के गाँव में बिजली गिरने से छप्पर में आग लग गई, जिसमें माता-पिता व दो बेटियों की जिंदा जलने से मौत हो गई**

जौनपुर/प्रायगराज, 15 जून। उत्तरप्रदेश के जौनपुर जिले में चंदवक थाना क्षेत्र के काशीदासपुर गांव में रविवार को दोपहर को आसमान से गिरी बिजली की चपेट में आए दो सगे भाइयों सहित चार लोगों की मौत हो गयी। वहीं प्रयागराज के बारा क्षेत्र में बिजली गिरने से दो नाबालिग बालिकाओं सहित एक ही परिवार के चार लोगों और एक अन्य की जलकर मृत्यु हो गयी।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार जिले में रविवार को अपरान्ह 3:30 बजे तेज हवाओं के साथ आंधी आई और आकाश में बादल छाने से हल्की बूदाबांदी होने लगी। जौनपुर जिले के चंदवक थाना क्षेत्र के काशीदासपुर गांव में बगीचे में आम बीन रहे दो सगे भाइयों, अंश व आशू तथा एक अन्य अनिल कुमार यादव की बिजली की चपेट में आने से मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना से पूरे गांव में मातम छा गया है। इसी थाना क्षेत्र के करने हुआ गांव में बृजेश राजभर (25) की भी बिजली गिरने से मौत हो गई।

इसी प्रकार बारा तहसीलदार कार्यालय से जारी सूचना के अनुसार यमुनागर के बारा तहसील क्षेत्र में सोनबरसा गांव निवासी वीरेंद्र वनवासी, पत्नी पार्वती और दो बेटियों राधा (3) एवं करिश्मा (2) कच्चे मकान में रहते थे। आंधी तूफान के बीच आसमान से गिरी बिजली से छप्पर में आग लग गई। देखते-देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। वे बाहर नहीं निकल सके। ग्रामीणों ने जब तक आग बुझाई, तब तक एक ही परिवार के चारों सदस्य जलकर मर चुके थे।

इसके अतिरिक्त उसी रात कल्याणपुर थाना क्षेत्र के तहसील बारा निवासी अक्षय कुमार (30) की भी आकाशीय बिजली की चपेट में आने से मौत हो गई। मृतक के परिवार में पत्नी कुसुम और दो बेटे विकास एवं राहुल तथा पुत्री रंजना है। सभी नाबालिग हैं। प्रशासन ने मृत दोनो परिवारों को 50 किलो राशन उपलब्ध करवा दिया है। दोनों परिवारों को दैवीय आपदा के अन्तर्गत देय सहायता धनराशि उपलब्ध कराए जाने की कार्यवाही की जा रही है।

उत्तराखंड चारधाम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रूप में रहेंगे। यह समिति जन सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए मानक प्रचालन नियमावली का प्रारूप बनाएगी। समिति अपनी रिपोर्ट सितंबर से पूर्व प्रस्तुत करेगी।

उन्होंने रुद्रप्रयाग में दुर्घटनाग्रस्त हेलीकॉप्टर के संबध में उच्च स्तरीय जांच के भी आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा कि उन्हीं पायलटों को अनुमति दी जाएगी जिनका उच्च हिमालय क्षेत्रों में हेलीकॉप्टर उड़ाने का दीर्घकालीन अनुभव होगा।

मुख्यमंत्री ने हिमालय क्षेत्रों में अधिक संख्या में मौसम पूर्वानुमान के अत्याधुनिक उपकरण लगाने के भी निर्देश दिए, जिससे मौसम की और सटीक जानकारी प्राप्त की जा सके। उन्होंने जिला प्रशासन, रुद्रप्रयाग को दुर्घटना में जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों से संपर्क कर, उनके पार्थिव शरीर को संबंधित राज्यों में भेजने की समुचित व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए।

उदयपुर क्षेत्र ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। यह खोज जनरल ऑफ न्यू बायोलॉजिकल रिपोर्ट के अंक 14 (1) में हाल ही में प्रकाशित हुई है। स्प्लेंडिड हार्टलैट नामक डैमज़लफ्लाई की खोज पर वरिष्ठ पर्यावरण प्रेमियों ने खुशी जताई है।

ब्रिटिश लड़ाकू विमान आपात स्थिति में केरल में उतरा

- **हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में ब्रिटिश नौसेना में तैनात पोत से यह लड़ाकू विमान नियमित उड़ान पर था। खराब मौसम व ईंधन की कमी के कारण उसे केरल में उतरने की अनुमति मिली थी।**

नयी दिल्ली, 15 जून। ब्रिटेन की नौसेना के शक्तिशाली लड़ाकू विमान एफ-35 को शनिवार देर रात केरल के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आपात स्थिति में उतरना पड़ा। वायु सेना ने आपात स्थिति में इसे सामान्य घटना बताया है।

सूत्रों के अनुसार, ब्रिटिश नौसेना के इस लड़ाकू विमान ने हिन्द प्रशांत क्षेत्र में तैनात ब्रिटेन के एक विमान वाहक पोत से शनिवार रात नियमित उड़ान भरी थी लेकिन खराब मौसम और ईंधन की कमी के कारण विमान ने भारत में उतरने की अनुमति मांगी। भारतीय अधिकारियों ने इसे केरल के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने की अनुमति दे दी। अनुमति मिलने के बाद यह दस बजे के करीब केरल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। वायु सेना के प्रवक्ता ने रविवार को कहा कि भारतीय वायुसेना को इस घटनाक्रम की पूरी जानकारी थी और उसने उड़ान सुरक्षा कारणों से विमान की मदद की। इस मामले में सभी तरह की सहायता प्रदान की जा रही है और भारतीय वायुसेना सभी संबंधित एजेंसियों के साथ समन्वय कर रही है।

उल्लेखनीय है कि इस विमान ने हाल ही में भारतीय नौसेना के साथ एक सैन्य अभ्यास में भी हिस्सा लिया था। यह विमान केरल हवाई अड्डे पर ईंधन भरे जाने के इंतजार में है। ईंधन भरे जाने के बारे में भारत और ब्रिटेन के संबंधित अधिकारियों के बीच बातचीत हो रही है।

केरल में करोना के मामलों में कमी आयी

- **दस मरीजों की मृत्यु के बाद करोना में जान गंवाने वालों की संख्या 97 हो गई।**

नयी दिल्ली, 15 जून। भारत में कोविड-19 के कुल सक्रिय मामलों की संख्या रविवार को 7,400 से घटकर 7,383 हो गयी।

पिछले 24 घंटों के दौरान सक्रिय मामलों में 17 की कमी आयी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से आज सुबह आठ बजे जारी आंकड़ों के अनुसार इस संक्रमण से 10 लोगों ने जान गंवायी है। इसके बाद कोरोना वायरस से मरने वाले लोगों की संख्या बढ़ कर 97 हो गयी हैं। पिछले 24 घंटों के दौरान कोविड-19 से दिल्ली में तीन, केरल में पांच और महाराष्ट्र में दो लोगों की मौत हुयी है। इन सभी को गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं थीं। दिल्ली और मध्य प्रदेश में नये संक्रमण 10-10 बढ़ कर क्रमश: 682 और 130 हुये, जबकि केरल में 102 मामलों की कमी आयी, हालांकि केरल का कुल मामले सबसे ज्यादा 2007 है।

सरकारी वेबसाइट के अनुसार पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, गोवा, हिमाचल प्रदेश, मिजोरम, पुड्डुचेरी और त्रिपुरा में कोविड-19 नये मामले दर्ज नहीं किये गये हैं। इस वायरस से दिल्ली में जिन तीन लोगों की मौत हुयी है, उनमें 57 वर्ष की एक महिला, 83 वर्षीय महिला और 57 वर्षीय पुरुष शामिल हैं।

केदारनाथ के पैदल मार्ग पर वर्षा से मलबा आया, यात्रा रोकी गई

मलबे की चपेट में आने से एक श्रद्धालु की मौत, दो घायल

- **गौरी कुंड से केदारनाथ के 19 किलोमीटर पैदल मार्ग में जंगलपट्टी के पास मूसलाधार वर्षा से बरसाती नाले में मलबा व पत्थर आने से पैदल मार्ग आंशिक रूप से बाधित हो गया।**

रुद्रप्रयाग, 15 जून। केदार घाटी में लगातार भारी बारिश हो रही है। परिणामस्वरूप केदारनाथ जाने वाले पैदल यात्रा मार्ग पर बारिश के पानी के साथ भारी मलबा जमा हो गया है और मार्ग आंशिक रूप से बाधित हुआ है। मलबे की चपेट में आने से एक श्रद्धालु की मौत हो गई है तथा दो श्रद्धालु घायल भी हुए हैं।

श्रद्धालुओं की सुरक्षा के मद्देनजर सोनप्रयाग से केदारनाथ धाम जाने वाली पैदल यात्रा को अग्रिम आदेशों तक स्थगित कर दिया गया है। इसके कारण बड़ी संख्या में बाबा केदार के दर्शनों के लिए आए श्रद्धालुओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

गौरीकुण्ड से केदारनाथ के 19 किमी के पैदल मार्ग में जंगलचट्टी के पास लगातार बारिश हो रही है। बारिश के कारण बरसाती नाले में मलबा और पत्थर आने के कारण केदारनाथ धाम जाने वाला पैदल मार्ग आंशिक रूप से बाधित हो गया है।

मौसम पूर्वानुमान के अनुरूप इस पूरे सप्ताह के लिए बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के मद्देनजर अग्रिम आदेशों तक केदारनाथ धाम की पैदल यात्रा को सोनप्रयाग से ही स्थगित कर दिया गया है। जंगलचट्टी क्षेत्र में भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में फंसे यात्रियों को पुलिस सुरक्षा के बीच नीचे की ओर भिजवाया जा रहा है।

पुलिस अधीक्षक अक्षय कोंडे ने जनपद पुलिस की केदारनाथ धाम आ रहे श्रद्धालुओं से अपील है कि वे जहां पर हैं, वहीं पर सुरक्षित रहें और आसपास के निकटवर्ती स्थलों पर होटल इत्यादि में स्टे करें।

गोदावरी नदी में डूबने से एक परिवार के चार सदस्यों की मौत

- **हैदराबाद से ये सभी लोग बसारा तीर्थयात्रा पर आये थे। नदी में नहाते समय एक परिवार के 5 सदस्य डूब गये। अभी तक चार शव बरामद हुए हैं।**

निर्मल, 15 जून। तेलंगाना में बसारा तीर्थयात्रा के दौरान गोदावरी नदी में डूबने से एक ही परिवार के चार सदस्यों की मौत हो गयी जबकि एक अभी भी लापता है।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि हादसे के समय हैदराबाद से 18 लोगों का एक समूह देवी सरस्वती की पूजा करने बसारा गया था। नदी में नहाते समय पांच लोग डूब गए। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय गोताखोरों की मदद से बचाव अभियान शुरू किया। अब तक नदी से चार शव बरामद किए गए हैं जबकि एक व्यक्ति लापता है।

असम में तेल के कुएं में गैस का रिसाब जारी

ओएनजीसी की टीम ने कुएं का परिचालन अपने नियंत्रण में ले लिया। सत्तर परिवारों को स्थानांतरित किया

- **जिला प्रशासन के एक अधिकारी ने बताया कि इस घटना से करीब 1,500 लोग प्रभावित हुए हैं। लोगों को गैस की गंध आ रही है और वे अपना चूल्हा नहीं जला पा रहे हैं।**

शिवसागर, 15 जून। असम के शिवसागर जिले में ऊर्जा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी) के कच्चे तेल के कुएं से गैस का रिसाव चौथे दिन भी जारी रहा। गैस रिसाव के हानिकारक प्रभावों को देखते हुए 70 परिवारों को स्थानांतरित कर दिया गया है। ओएनजीसी के तकनीक और क्षेत्रीय सेवा निदेशक विक्रम सक्सेना के नेतृत्व में एक टीम ने कुआं संख्या आरडीएस 147 का परिचालन नियंत्रण में ले लिया है। ओएनजीसी के रुद्रसागर तेल क्षेत्र स्थित रिग नंबर एसकेपी 135 के कुएं, आरडीएस 147 में गुरुवार को सर्विसिंग के दौरान गैस रिसाव दिखा था। इसके बाद विस्फोट हुआ था। कुएं का संचालन ओएनजीसी की तरफ से एक निजी कंपनी, एसके पेट्रो सर्विसेज कर रही थी। ओएनजीसी के अधिकारी ने बताया कि कुएं को नष्ट करने की प्रक्रिया जारी है। हमने सभी आवश्यक उपकरण जुटा लिए हैं। संकट प्रबंधन दल (सीएमटी) रिसाव को नियंत्रित करने के लिए काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि कुएं में अभी तक आग नहीं लगी है और इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है।

जिला प्रशासन के एक अधिकारी ने बताया कि इस घटना से करीब 1,500 लोग प्रभावित हुए हैं। लोगों को गैस की गंध आ रही है और वे अपना चूल्हा नहीं जला पा रहे हैं। हम उन्हें पका हुआ भोजन उपलब्ध करा रहे हैं और स्थिति पर लगातार नजर रख रहे हैं।

पुणे में इंद्रायणी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

घटना से बहुत दुखी हूं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से बात की और जमीनी हालात के बारे में जानकारी ली। जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति हार्दिक संवेदना। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।

पुणे में पुल टूटने से हुए हादसे के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जो इस समय साइप्रस में हैं, ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से बात की। उन्हें प्रभावित लोगों की सहायता के लिए चल रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी गई।

रूपाणी के शव ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इनमें से 41 की शिनाख्त हो गई है, 20 शव परिजन को सौंपे गए हैं। उनके डेथ सर्टिफिकेट भी उपलब्ध कराए गए हैं। एम्बुलेंस के जरिए सिक्योरिटी के साथ शवों को उनके गृहनगर पहुंचाया जा रहा है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908